स्वर्ग में स्वर्गदूतों का आनंद मनाना

मसीह में
अपने नये
जीवन की
परिपूर्णता का
अनुभव करना।

David
CERULLO

स्वर्ग में स्वर्गदूतों का आनंद मनाना

मसीह में अपने नए जीवन की परिपुर्णता का अनुभव करें

डेविड सिरोलो

THE ANGELS IN HEAVEN REJOICE!

Copyright © 2003 by David Cerullo

All Scripture quotations, unless otherwise indicated, are from the New American Standard Bible, copyright 1960, 1962, 1963, 1968, 1971, 1973, 1975, 1977 by the Lockman Foundation. Used by permission.
Scriptures marked KJV are taken from the Holy Bible, King James Version
All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form by means electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, except for the inclusion of brief quotations in a review, without prior permission in writing from the publisher.

Published by
Inspiration Ministries
P.O. Box 7750
Charlotte, NC 28241
www.inspiration.org

Cover and interior design and composition:
Koechel Peterson & Associates, Inc., Minneapolis, Minnesota

Printed in the United States of America

ये किताब मेरी बेटी बेकी के
महत्वपूर्ण योगदान के बिना
संभव नहीं थी।
धन्यवाद बेकी, प्यार की उस
मदद के लिए ताकि में नए विश्वासीयों
के लिए मसीह के साथ चलने में
बल पाने में सहायक किताब लिख सकूँ।

सूची पत्र

परिचय ५

विभाग १ परिवार में स्वागत है

अध्याय १ महान लेनदेन ८
अध्याय २ ये नया मार्ग २०
अध्याय ३ यीशु को क्रुस पर क्यों मरना पड़ा ३३
अध्याय ४ अद्‌भुत अनुग्रह ४२
अध्याय ५ आत्मिक उन्नति ४९

विभाग २ यीशु में बने रहना

अध्याय ६ प्रभु का वचन पढ़े ७२
अध्याय ७ आराधना और प्रार्थना करे ८०
अध्याय ८ जुड़ जाएँ ९६
अध्याय ९ युद्ध करें १०५
अध्याय १० मसीह की वापसी ११४
आपको प्रोत्साहित करने के लिए वचन ११९
शब्दों का अर्थ १२२
लेखक के विषय १२७

परिचय

परिवार मे स्वागत है! क्या आप जानते थे कि जब आप ने यीशु को उद्धारकर्ता और प्रभु ग्रहण किया, स्वर्ग के सारे स्वर्गदूत ने **आपके** आदर के लिए एक पार्टी मनाई? ये सच है! बाइबल, परमेश्वर का वचन, कहती है कि इस प्रकार एक मन फिरानेवाले पापी के लिए भी परमेश्वर के स्वर्गदूतों की उपस्थिती मे आनंद मनाया जाता है। (लूका १५:१०)

जब आप यीशु से कहते हैं कि आप के पापों को क्षमा करें, आपके दिल मे आएं और आपके जीवन का प्रभू बने, तब आप परमेश्वर की संतान बनते हैं, परमेश्वर के परिवार के भाग बनते हैं,,, एक विश्वासी।

मसीहीयत एक और धर्म नही है। मसीहीयत *जीवित* परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध है! परमेश्वर वास्तविक है। वो जीवित है और वो आपसे बहुत प्यार करता है।

वो आप से प्यार करता और आपको जानता है इसलिए वो चाहता है कि *आप उसे* जाने और उससे प्यार करें। इसलिए उसने आपको बाइबल दी है,,, ताकि उसके साथ संबंध प्रगाने मे आपकी मदद हो। इसलिए आपने पढी हुई हर किताब मे प्रगाइप्रगल सबसे महत्वपुर्ण किताब है।

आपके लिए परमेश्वर के व्यक्तिगत वचन के रुप मे आप पाएगें कि बाइबल उत्तम और अदभुत सत्य से भरी है कि इस जीवन मे और आनेवाले जीवन मे आपकी मदद करे। मै प्रोत्साहित करता हूं कि आप खुद पढिए कि बाइबल आपके बारे मे क्या कहती है। जैसे आप परमेश्वर का वचन पढते हैं और उसके साथ आपका संबंध मज़प्रगुत होता है, तप्रग उसके और उसके वचन के बारे मे आपकी समझ भी बढ़ेगी।

विश्वासी होना क्या है ये सरल शब्दों मे समझाने के लिए मैने *स्वर्ग मे*

स्वर्गदूतों का आनंद मनाना लिखी है। विश्वासी के रुप मे कैसे जीवन जीए इसलिए ये सामान्य रुप मे आपकी एक मार्गदर्शिका होगी। इस मे, मै आपको आपने नएं जीवन के महत्वपुर्ण निर्माण के पत्थर और अदभुत सौभाग्य बताऊंगा जो मसीह के पीछे चलने के आपके निर्णय के कारण आते हैं।

मै प्रार्थना करता हूं कि *स्वर्ग मे स्वर्गदूतों का आनंद मनाना*, आप को व्यवहारिक प्रकाशन देने मे मददगार हो ताकि जैसे आप अपना बाकी जीवन उसके साथ चलने का चुनाव करते हैं, आप परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध निर्माण करे।

डेवीड

विभाग - एक

परिवार
मे
स्वागत है

अध्याय एक

महान लेन-देन

परमेश्वर ने आपसे इतना प्यार किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र, यीशु मसीह को मनुष्य रुप मे भेजा ताकि आपके पाप और सारे संसार के पापों के लिए दाम चुकाएं।

परमेश्वर हमें एक वरदान देता है:

महान लेन-देन का मौका। वो मौका देता है कि हम अपनी पापमयता देकर उसकी पवित्रता ले ले, उसकी चंगाई के फ़ादले हमारी बीमारी दे, उसके अनंतजीवन के बदले हमारी अनंत मृत्यु दे। ये महान लेन-देन मुफ्त का वरदान है जो वो हर एक मनुष्य को देता है।

जब परमेश्वर ने मनुष्य जाती को अपने स्वरुप मे बनाया, उसने हमे सिद्ध बनाया। उसने हमे बनाया ताकि हम उसके साथ संबंध और सिद्ध संगति रख सकें।

परमेश्वर ने कभी नही चाहता था कि हम बीमार हो जाएं, वो कभी नही चाहता था कि हम पाप करें, वो कभी नही चाहता था कि हम मर जाएं। लेकिन कुछ हुआ जिसने ये सब बदल दिया। दुख़: की बात है कि उसने जिस पहले स्त्री और पुरुष को बनाया था, आदम और हव्वा, उन्होंने प्रभू की आज्ञाभंग करने का चुनाव किया।

आप अपने जीवन के अनुभवों से जानते हैं कि आपकी क्रिया, चुनाव और

निर्णय के हमेशा परिणाम होते हैं। परमेश्वर की आज्ञाभंग करने आदम और हव्वा के निर्णय ने संसार मे पाप, बीमारी और मृत्यु लायी। बाइबल कहती है कि पाप की मज़दूरी (प्रतिफल, बदले मे पाना) मृत्यु है। (रोमियो ६:२३)

परमेश्वर के प्रिना
हमारे पास आशा नही है!

आदम और हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञाभंग करने का निर्णय के कारण हम सब जन्म से ही परमेश्वर अलग हैं। उनका पाप हम पर अनंतकाल के लिए शारीरिक और आत्मिक मृत्यु लाता है।

बाइबल सिखाती है कि हम सब अपनी कठोरता और पाप के कारण परमेश्वर से दूर हैं। इसके कारण, हम सच मे बिना आशा और परमेश्वर के बिना हैं। हम हमारे पापमयता के लिए अनंत मृत्यु सहने के लायक हैं।

हम जिसके लायक थे, उसके बावजुद भी परमेश्वर ने हम से इतना प्यार किया कि उसने हमे वापस उसकी संगति और रिश्ते मे लाने के लिए योजना बनाई। योजना सरल है : परमेश्वर ने अपने सिद्ध पुत्र, यीशु को पृथ्वी पर मनुष्य रुप मे भेजा, ताकि हमारी जगह हमारे पापों के लिए दण्ड सहे।

यीशु पवित्र आत्मा की सामर्थ द्वारा एक कुंवारी से प्राच्चे के रुप मे जन्म लिया। वो पापरहित जीवन जीया और फिर क्रुस पर कीलों से लटकाएं जाने से मरा, उसने खुद को मरने तक क्रुस पर लटकाएं जाने के लिए दिया। जब यीशु क्रुस पर था, पूरे संसार के पापों का न्याय उस पर था, और परमेश्वर को अपनी पवित्रता मे, यीशु के क्रुस पर चढाएं जाते समय मुंह फेरना पड़ा। लेकिन फिर अदभुत रुप मे, चमत्कार के द्वारा, परमेश्वर ने तीन दिन तक ग़ाढे जाने के बाद भी जीलाया।

जब आप विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है और उसने आपके बदले मे आपके पापों के लिए दण्ड उठाया; जब आप विश्वास करते

हैं कि परमेश्वर ने उसे मुर्दों मे से जीलाया; जब आप यीशु को उद्धारकर्ता और अपने जीवन का प्रभू बनाते हैं; और जब आप परमेश्वर के और उसके वचन के लिए आज्ञाकारिता मे चलने का निर्णय लेते हैं, तब आप उसके साथ महिमामय अनंतकाल स्वर्ग मे बिताने का अधिकार पाते हैं।

आप अपनी इच्छा के बदले उसकी इच्छा लेते हैं। आप उसके बिना अनंतकाल दण्डआज्ञा मे बिताने के प्रजाए उसके साथ स्वर्ग मे बिताना लेते हैं। आप डर, परेशानी और चिन्ता के जीवन के बदले ऐसा जीवन पाते हैं जो हमारी मनुष्य की समझ से परे है। (फिलिप्पियो ४:७)

छुडौती के लिए दाम चुकाना

अगर किसी बहुत ही प्यारा बच्चे का अपहरण हो जाता है, परेशान माता-पिता कोई भी किमत देकर अपहरणकर्ताओं से अपने बच्चे को छोडने के लिए कहते हैं। वो बदले मे किमत चुकाते हैं। जो किसी चुराई गई किमती चिज़ को छुड़ाने के लिए दाम चुकाना है।

खैर, जहां तक परमेश्वर की बात आती है, हम उसकी सृष्टि हैं, और हमारा अपहरण हुआ था! हम उसके शत्रु, शैतान के हाथ मे थे, जिसने हमें चुराया था और वो चाहता था कि हम उसकी गुलामी मे रहे, हमारे अपने ही पापों के बंधन मे जकड़े रहे। हम खुद को आज़ाद नही कर सकते थे, और हम दाम भी नही चुका सकते थे। हम पूरी तरह से बेसहारा थे। शैतान के और हमारे अपने ही पापों के जाल मे फंसे थे!

परमेश्वर हमें शत्रु के हाथों मे छोड सकता था। वो इसी मे संतुष्ट होता कि हमारी सृष्टि करे और फिर हमे अपना रास्ता ढुंढने के लिए अकेला छोड देता। लेकिन वो हमारे साथ निकट संबंध चाहता था इसलिए उसने हमें आज़ाद करने के लिए अपना पुत्र भेजा। यही उसमे बनाए हुई जानवरों से हमे अलग करता है। वो नही चाहता था कि हम बस केवल उसकी *सृष्टि*

ही रहे,,, वो चाहता था कि हम उसकी ***संतान*** होकर अपने पिता के प्रेमी संबंध मे चले।

खुशखबर ये है कि यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र ने, अपने ही लहु से हमारे पापों के लिए दाम चुकाया ताकि हम परमेश्वर की संतान हो जाए। क्रुस पर उसकी मृत्यु के द्वारा, यीशु ने आपके और मेरे जीवन के बदल मे दाम चुकाया। हालांकि हमारे पाप हम पर दोष लगाते हैं, वो हमारी जगह मरा ताकि हमे आज़ाद करे और हम जिस अनंतकाल का दण्ड के लायक थे उसे सह ले। जफ्र हम उसे अपना उद्धारकर्ता और प्रभु ग्रहण करते हैं, हम छुडाएं जाते हैं और पाप से तथा शैतान के फ्रांधन से छुडाएं जाते हैं।

आज़ाद होकर जेल से बाहर आना

कल्पना किजिए आप जेल मे बंद हैं, अपराधों के बारे मे कायल हैं, उन्हें करने के लिए आप दोषी हैं। आपको मृत्युदण्ड दिया गया है, और आप फांसी की सज़ा के लिए खड़े हैं, अचानक, आप जानते हैं कि आपकी जगह कोई और फांसी पर चढ़ने के लिए तैयार है कि आपकी जगह वो मर जाएं।

क्या आप सलाखों के पीछे रहकर फांसी की सज़ा की राह देखेंगे? नही, बिलकुल नही! आप रोमांचित हो जाएगें कि आप आज़ाद हो गएं हैं।

खैर, जब आप विश्वासी होते हैं तब यही होता है। हालांकि आप फांसी के तखते पर जा रहे थे, आप जिस के लायक थे उस मृत्यु की राह देख रहे थे, यीशु को आपको जेल से आज़ाद होने का कार्ड देता है! आप अपने पाप के जेल से आज़ाद हो सकते हैं और फिर कभी पीछे मत देखिए, इसके बजाएं उसे धन्यवाद दें जिसने आपको अनंतकाल की मृत्यु से छुडाया है!

एक कोरस कहता है, हम चुका नही सकते थे ऐसा कर्ज था; उस ने वो कर्ज चुकाया जो उसका नही था। हम खुद के छुटकार के लिए किमत नही

चुका सकते थे क्योंकि हमारे पाप दूर करने के लिए परमेश्वर हमारे किसी परिश्रम को नही पहचानता है। क्यों? बाइबल मे यशायाह कहता है, *क्योंकि हम सब के सब अशुद्ध मनुष्य के से हैं, और हमारे धर्म के कार्म मैले चिथड़ो के समान हैं* (यशायाह ६४:६)

धार्मिकता शब्द का अर्थ प्रभु के सामने सही तरह से खड़ा रहना। हम मे से कोई भी अपने आप धर्मि नही है। हम प्रभु के सामने खड़े रहकर अपने पापी व्यवहार और विचारों की खुद रक्षा नही कर सकते हैं, या हम उसे सही साबित कर सकते हैं। परत्नु प्रभु का वचन घोषित करता है, *जो पाप से अज्ञात था उसे उसने हमारे लिए पाप बना दिया, ताकि हम उसके द्वारा प्रभु की धार्मिकता बन जाएं।* (२ कुरिन्थियों ५:२१)

सुसमाचार की सरलता

सुसमाचार की कहानी सरल है। ये यह मानती है कि जिस परमेश्वर ने आपको बनाया है उसके साथ आपको संबंध रखना है। ये परमेश्वर के उस न्याय को मानती है कि जैसे कहा गया है आप पाप के दोषी हैं।

ये इस बात को मानती है कि आप के पापमयता के लिए परमेश्वर का हल ही **एक मात्र** उत्तर है, वो है यीशु मसीह। ये मानती है कि जब आप उसे न्योता देते हैं कि आपके जीवन मे आए, आपके पाप क्षमा करें और आपके जीवन का प्रभु बने, आपके पाप और परमेश्वर की मृत्यु की आज्ञा आप से यीशु की ओर चली जाती है। और इस महान लेन-देन मे, आप खुद को बचाने की अपनी योग्यता से *केवल मसीह पर* भरोसा करने मे आते हैं।

जब आप यीशु को अपने प्रभु के रुप मे न्योता देते हैं, आप उसे अपने जीवने **हर** क्षेत्र मे प्रभु होने के लिए बुला रहे हैं। आपके पाप के बदल मे उसकी धार्मिकता लेने के द्वारा आप उसका उद्धार प्राप्त करते हैं। उद्धार का अर्थ है आज़ाद होना, छुटकारा पाना, सुरक्षित रहना, चंगाई पाना और परिपुर्ण होना पाप, बीमारी और मृत्यु से।

क्या आप ने महान लेन-देन की है?

शायद आपने अपने जीवन का सबसे महत्वपुर्ण निर्णय ले लिया है,,, अपने जीवन मे यीशु को न्योता देने का निर्णय,,, कि आपके पाप क्षमा करे,,, और आपके जीवन का उद्धारकर्ता और स्वामी हो जाएं।

जब कि दुसरी तरफ, यदि आपने परमेश्वर का मुफ्त उद्धार का वरदान प्राप्त नही किया है,,, यदि उसे प्रभु के रुप मे न्योता नही दिया है,,, यदि परमेश्वर के संग ये महान लेन-देन नही किया है, तो अब कर सकते हैं! कैसे? बहुत आसान है। बाइबल कहती है, *यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु कहकर अंगिकार करे और अपने हृदय मे विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मुर्दों मे से जीलाया, तो तू उद्धार पाएगा। क्योंकि उद्धार के निमित्त हृदय से विश्वास करने का परिणाम धार्मिकता होती है और मुंह से अंगिकार का परिणाम उद्धार होता है।* (रोमियो १०:९-१०)

देखिए ये, ये आपका और मेरा तरिका नही है, ये परमेश्वर का तरिका ही होना चाहिए। यीशु ने कहा, *मै ही मार्ग, सत्य और जीवन हूं; मेरे बिना कोई पिता के पास नही जा सकता है।* (युहन्ना १४:६)

चुन लिजिए कि किसकी सेवा करेगें

बाइबल कहती है कि हम यीशु के पास तब तक नही आ सकते हैं जब्र तक कि परमेश्वर हमारा स्वर्गिय पिता, उस के पास आने के लिए हमारी मदद करे (युहन्ना ६:४४-६५)। यदि आप ने कभी यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता के रुप मे नही बुलाया है, जिस के कारण आप अभी अपने मे ऐसा महसुस कर रहे हैं, ये इच्छा कि अपने जीवन का खालीपन दूर करे, ये परमेश्वर का आत्मा है जो आपको यीशु मसीह के पास ला रहा है।

परमेश्वर आपसे इतना प्यार करता है! उसके पास इतनी अदभुत आशिषें, प्रतिज्ञाएं और वरदान हैं, जो वो आप को देना चाहता है। उसने आपको चुना है कि आप सदा के लिए उसके परिवार के सदस्य हो जाएं।

लेकिन आपको उसे चुनना होगा। वो आपके लिए आपका मन तैयार नही करेगा, और ना ही वो जबरदस्ती खुद को आप पर थोपेगा। वो ९९ कदम उठाएगा, लेकिन आखरी कदम आपको उठाना पडेगा।

उसने आपको स्वतंत्र इच्छा दी है ताकि आप अपने चुनाव कर सके। आपको चुनना होगा कि आप किसकी सेवा करेगे,,, खुद की या परमेश्वर की? क्या आप यीशु से कहेगें कि वो आपका प्रभु हो जाएं? क्या आज आप ये निर्णय लेगें, इसी समय, कि अपने जीवन के हर क्षेत्र का अधिकार उसे दे? जब आप परमेश्वर और उस के पुत्र को चुनते हैं, तब आप अपने जीवन मे उसकी सामर्थ, उपस्थिती और शान्ति अनुभव कर पाएगें।

सबसे महान चमत्कार

यदि आप सारे संसार मे सबसे महान चमत्कार का अनुभव करना चाहते हैं,,, उद्धार का चमत्कार,,, तो अभी कर सकते हैं। केवल यीशु को अपने जीवन मे न्योता दे और आपके सारे पापों से क्षमा करने के लिए कहिए। उससे आपका भुतकाल मिटाने के लिए और आप के जीवन का प्रभु होने के लिए कहिए। फिर अपने हृदय मे विश्वास किजिए कि परमेश्वर ने उसे मुर्दों मे से जीलाया। ये बहुत ही सरल है।

क्या आप अभी मेरे साथ ये प्रार्थना करेगें?

प्रिय यीशु,

मै जानता हूं कि मै एक पापी हूं। कृपया मेरे पाप क्षमा कर और मेरा हृदय धोकर शुद्ध कर। क्रुस पर मेरे लिए मरने के लिए धन्यवाद।

बाइबल कहती है कि यदि मै अपने मूंह से अंगिकार करूं और हृदय से विश्वास करुं कि तू ही प्रभु है, तो मै उद्धार पाऊंगा। यीशु, मै विश्वास करता हूं कि तू ही प्रभू है और परमेश्वर ने तुझे मुर्दों मे से जीलाया है।

कृपया मेरे हृदय मे आ। मेरे जीवन का प्रभु हो। मुझे तेरे लिए चलना और अपना बाकि जीवन तेरे लिए जीना सीखा। मेरा जीवन बचाने और तेरे साथ स्वर्ग मे अनंतकाल रहने का मौका देने के लिए धन्यवाद। आमिन।

यदि आपने ये प्रार्थना अभी की है और यीशु पर उद्धारकर्ता के रुप मे विश्वास किया है। तो आप ने नए जीवन मे नया जन्म पाया है और परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा उद्धार पाया है। स्वर्ग मे स्वर्गदुत अभी **आपके** लिए और आपके उद्धार के लिए आनंद मना रहे हैं! परमेश्वर के परिवार मे स्वागत है!

मै खुश हूं कि आप ने यीशु के पीछे चलने का निर्णय लिया है। इस सरल प्रार्थना के द्वारा, आपका नाम अभी खास किताब मे लिखा गया है, जिसे बाइबल कहती है मेम्ने की जीवन की किताब। इस किताप्र मे उन सप्र लोगों के नाम हैं जिन्होंने यीशु मसीह को अपने दिल मे न्योता दिया है (प्रकाशितवाक्य ३:५)। स्वयं परमेश्वर ने आपका नाम अपनी किताब मे लिखा है, आपके उद्धार की हमेशा की शाश्वति देते हुए। अब आप परमेश्वर की संतान हैं।

आपके जीवन के लिए परमेश्वर की योजना

बाइबल कहती है, *तूने मेरे भीतरी अंगों को बनाया है, तू ने मुझे मां के गर्भ मे रचा है। मै तेरा धन्यवाद करूंगा क्योंकि मै भयानक और अदभुत रीति से बनाया गया हूं* (भजनसंहिता १३९:१३-१४) प्रभु आपसे इतना प्यार करता है! उसने आपके जीवन के लिए खास योजना बनाई है।

परमेश्वर ने आपके जीवन के लिए जो योजना बनाई है वो आपकी हानी की नही परन्तु संपन्नता की है, उसकी योजना उज्वल भविष्य और आशा की है (यिर्मयाह २९:११)। परमेश्वर ने आपके लिए महान चिज़ें रखी हैं।

जैसे आप उसमे अपना नया जीवन शुरु करते हैं, ये महान रोमांच, ये रोमांचक यात्रा, मै आपको प्रोत्साहित करता हूं कि उसके साथ समय बिताएं, उससे बातें करें। शान्त बैठिए और जब वो आपसे बातें करता है तप्र आप उसे सुनिए।

प्रतिदिन बाइबल पढने से उसकी वाणी पहचानने मे मदद होती है। खुद

को भेंड़ चरानेवाला चरवाहा कहते हुए यीशु ने कहा, *भेड़े उसके पीछे हो लेती हैं* ***क्योंकि वो उसकी आवाज़ पहचानती है*** (यूहन्ना १०:४)। उसकी आवाज़ पहचानने के लिए, आपको उसके वचन से परिचित होना होगा। जैसे आप बढ़ते हैं और अपने नए विश्वास और बाइबल के ज्ञान मे परिपक्व होते हैं, आप अपने मन और दिल मे प्रभु की आवाज़ सुनना सिखेंगे। जैसे वचन के बारे मे आपकी समझ बढ़ेगी वो आपको अदभुत सान्तवना और जीवन के लिए मार्गदर्शन देगा। जैसे आप उसकी आवाज़ पहचानना शुरु करते हैं, परमेश्वर आपके जीवन मे उसकी योजना और उद्देश पूरे करेगा। प्रभु ने आपके जीवन के लिए जो रखा है उससे न घबराएं। आपके जीवन के लिए प्रभु की योजनाएं उत्साहजनक और अच्छी हैं।

भावुक न हो जाएं!

परमेश्वर आपके जीवन के लिए उसकी योजना आपको एक झलक मे ही नही दिखाएगा। वो कहता है कि उसका वचन आपके पैरों के लिए दिपक और मार्ग के लिए उजियाला है (भजन ११९:१०५)। इसका अर्थ है कि प्रभु आपके जीवन मे उसके प्यार की ज्योति और उसके वचन की ज्योति चमकाएगा और आप पर वही प्रात प्रकट करेगा जिसे जानना जरुरी है ताकि आप अगला कदम ले सकें। आपको सिखना होगा कि उस पर दिन के बाद दिन और पल के बाद पल कैसे भरोसा करे। यही *विश्वास* है।

विश्वास सरल शब्दों मे यही है कि आप अपने जीवन के लिए परमेश्वर की जो इच्छा है उसे आज्ञाकारिता मे प्रतिउत्तर देते हैं। वो आपसे क्या कह रहा है इसे समझने मे आप शायद १०० प्रतिशत सही न हो, खासकर उसके साथ नये रुप मे चलते हुए। लेकिन ये ठीक है। केवल आप उसकी *आज्ञा* मानना चाहते हैं और उसकी आवाज़ सुनने की कोशिश कर रहे हैं इसी बात से वो प्रसन्न होता है।

आपके नए जीवन पर परमेश्वर का अधिकार और यीशु आपका प्रभु होना ही प्रतिदिन की तिर्थ-यात्रा है, आप कदम ब कदम की यात्रा कर रहे हैं। जैसे आप परमेश्वर के निकट आते हैं, बाइबल कहती है कि वो आपके निकट आएगा (याकूब ४:८)। वो जहां चाहे आपकी अगुवाई करेगा, एक समय एक कदम के द्वारा। इस प्रात मे हिम्मत रखिए कि आपके लिए परमेश्वर की योजना सबसे उत्तम है और उसके मार्ग हमेशा सही होते हैं। आपके मार्गदर्शन के लिए उसके हाथ पर विश्वास किजिए।

कूम्हार के हाथ

परमेश्वर आपका दिल जानता है। सच मे, आप खुद को जितना जानते हैं वो उससे भी उत्तम रुप मे आपको जानता है। इसलिए जरुरी है कि आप परमेश्वर पर भरोसा करना सिखें और उसे अपने जीवन को आकार देने दे।

ये सच्चाई बाइबल मे बताई गई है, जब परमेश्वर यिर्मयाह नाम के व्यक्ति से बातें करता है, परमेश्वर यिर्मयाह को कूम्हार के घर जाने के लिए कहता है और यिर्मयाह परमेश्वर की आज्ञा मानता है।

जब वो वहां पहुंचता है, वो देकता है कि कूम्हार चाक पर काम कर रहा है। परत्नु मिट्टी का जो बर्तन वो बना रहा था वो बिगड़ जाता है। तो कूम्हार उससे दूसरा बर्तन बनाता है। तब प्रभु ने यिर्मयाह से कहा, *जिस प्रकार मिट्टी कूम्हार के हाथ मे है, उसी प्रकार तुम मेरे हाथ मे हो* (यिर्मयाह १८:६)।

कूम्हार के बिना मिट्टी का खुद आकार लेना असंभव है। मिट्टी का खुद का अपना कोई उद्देश नही होता है। वो खुद आकार या रुप नही ले सकती है या वो कूम्हार का आकार और उद्देश नही पा सकती है जब तक कि कूम्हार उसे आकार न दे।

हालाकि कूम्हार अपनी योजना के अनुसार आकार दे, मिट्टी फिर भी

उसके हाथ मे रहती है कि अपना उद्देश पूरा करे। यदि कूम्हार उसे मटका बना दे फिर भी वो खुद पानी नही भर सकती है। कूम्हार को ही पानी भरना होगा और पानी बाहर फेंकना होगा।

१९०७ मे एडीलेड पोलाएड ने एक सुंदर गीत लिखा था, जिसका नाम था *अपने तरिके से काम कर, प्रभु* इस महान गीत के ये कुछ शब्द हैंः

अपने तरिके से काम कर, प्रभु,
अपने तरिके से काम कर, तू ही कूम्हार है, मै मिट्टी हूं,
अपनी इच्छा से मुझे आकार दे, जब कि मै राह देख रहा हूं,
समर्पण कर स्थिर हूं। अपने तरिके से काम कर, प्रभु,
अपने तरिके से काम कर। मेरे व्यक्तित्व को थामे रहे,
पूरी तरह से। अपनी आत्मा से भर दे, जब तक कि
सब मुझे मे वास करनेवाला मसीह न देखें।

क्या इसका ये अर्थ नही होता है कि अपने सृष्टिकर्ता परमेश्वर को समर्पित हो जाएं? कूम्हार के हाथ मे मिट्टी जैसे, आपको उसके हाथ मे आकार पाने के योग्य रहना है। परमेश्वर पर भरोसा करे, जैसे बाइबल कहती है, *जिसने तुम्हारे अंदर भला काम शुरु किया है वो उसे पूरा भी करेगा (पूर्ण करेगा या उसे परिपक्वता मे लाएगा) मसीह के दिनों तक* (फिलिप्पियो १:६)।

मसीह यीशु का दिन वो दिन है जब यीशु पृथ्वी पर वापस आएगा ताकि अपने अनुयायीओं को अपने संग स्वर्ग मे ले जाएं। और वो दिन कितना महिमामय होगा।

(नोट : यदि आपके पास बाइबल नही है, मै आपको प्रोत्साहित करुंगा कि अभी अपने लिए एक ले लें। किसी भी बुक स्टोर मे बाइबल मिलती है। आधुनिक अनुवाद मांगिए, जो समझने मे आसान होता है। जब आप अपनी

बाइबल पढना शुरु करते हैं, मै सलाह दूंगा कि आप नए नियम के यूहन्ना रचित सुसमाचार से शुरु किजिए। ये किताब आपको प्राहुत कुछ सिखाएगी कि यीशु मसीह कौन है और उसके संग आपका नया जीवन कैसे होगा।)

अध्याय दो

ये नया रास्ता

क्या आपने कभी लोगों
को ये कहते हुए सुना, नया जन्म या उद्धार?
नए विश्वासी के रुप मे ये
शब्द आपके लिए अर्थपुर्ण न हो।

नया जन्म पाने का अर्थ ये नही है कि आप दूसरा शारीरिक जन्म का अनुभव करेगें! नया जन्म पाना आत्मिक जन्म के प्रारे मे कहता है। जैसे आप मसीह के साथ चलना शुरु करते हैं आपका नया जीवन शुरु होता है। जब आप प्रार्थना कर परमेश्वर से अपने पापों की क्षमा मांगते हैं और यीशु को अपने जीवन का प्रभु होने देते हैं, आप ये नया जीवन शुरु करते हैं।

बाइबल मे एक आदमी था जिसे ये समझने मे मुश्किल हो रही थी। उसका नाम निकदिमुस था, और वो यीशु के दिनों मे यहुदी अगुव था।

जब निकुदिमुस यीशु के पास एक प्रश्न लेकर आया, यीशु ने उससे कहा,

जब तक कोई नया जन्म न ले, वो परमेश्वर का राज्य नही
देख सकता है।
निकुदिमुस ने उससे कहा,जब मनुष्य प्रुढा हो जाए तो वो कैसे
नया जन्म ले सकता है? वो अपनी मां की कोख मे दूसरी बार
प्रवेश कर जन्म नही ले सकता है, क्या ये हो सकता है?

यीशु ने उत्तर दिया,मै तुझ से सच सच कहता हूं कि जब तक कोई जल और आत्मा से न जन्मे, वह परमेश्वर के राज्य मे प्रवेश नही कर सकता। जो शरीर से जन्मा है वो शरीर है व्र जो आत्मा से जन्मा है वो आत्मा है (यूहन्ना ३:३-६)।

यीशु आत्मिक जन्म बता रहा था। जब आप नया जन्म पाते हैं, परमेश्वर का आत्मा आपकी आत्मा मे न आत्मा फुंकती है। तब मसीह आपमे *आत्मिक रुप मे जन्म* लेता है। पौलुस, मसीह का एक अनुयायी और प्रारंभिक मसीही चर्च का एक सामर्थी अगुवा, ये विचार बताता है जब वो बताता है, *मसीह तुम मे महिमा की आशा है* (कुलुस्सियों १:२७)

जब आप मसीह को अपने दिल मे आने के लिए कहते हैं, वो आपके जीवन मे ताज़ा शुरुवात देता है। सच मे, बाइबल आपको नई सृष्टि कहती है।

यदि कोई मसीह यीशु मे है, तो वह नई सृष्टि है, पूरानी बातें बित गई हैं और देखो परमेश्वर ने सबकुछ नया बनाया है! (२ कुरिन्थियों ५;१७)। अब स्वयं परमेश्वर का आत्मा आपके अंदर वास करने आता है। यही सुसमाचार का भेद और अदभुत प्रात है!

मसीह मे आपने शुरु किया ये नया जीवन आपके स्वाभाविक जन्म जैसे ही है। सच मे, शारीरिक रुप मे नए जन्मे बच्चे और आत्मिक रुप मे नया जन्म पाएं बच्चे मे समानता होती है।

जब बच्चे का जन्म होता है, उसे बचे रहने और बढ़ने के लिए बहुत सी चिज़ें होनी चाहिए। बच्चे को भोजन देकर उसका पोषण करना जरुरी है। भोजन और पोषण के बिना वो जल्दी ही भुखे मर जाएगा।

बच्चा जीवन की बुनियादी जरुरतों के लिए अपने माता-पिता पर आधारित होता है। वो खुद की देखभाल नही कर सकता है। किसी को उसे कपड़े पहनाने और भोजन देना पड़ता है। किसी को उससे प्यार कर उसकी

देखभाल करनी पड़ती है। बच्चे को उसे थामने के लिए प्यारी बाहों की जरुरत होती है ताकि वो आरामदेह और सुरक्षित महसुस कर सकें।

बच्चे को कोमल आवाज़ चाहिए ताकि उसका डर दूर हो जाए। बिना किसी परवाह के, अनदेखा किया गया बच्चा जी नही सकता है। बच्चे को प्यार भी पाना चाहिए। डॉक्टर कहते हैं कि बिना प्रेमभाव के, बच्चे पीछे जाते हैं और जीने की इच्छा भी खो बैठते हैं। संक्षिप्त मे, बच्चे बहुत नाज़ुक होते हैं।

जब बच्चे का जन्म होता है, वो एक ही दिन मे बातें करना, चलना और खुद की देखभाल करना शुरु नही करता है। नही, बच्चे को बढ़ने, परिपक्व होने और सिखने के लिए समय लगता है।

आत्मिक पोषण

यही चिज़ें आत्मिक रुप मे नए जन्मे बच्चे के लिए भी हो सकती है। बालक विश्वासी को आत्मिक रुप मे चाहिए, भोजन, छत, कपड़े, गर्मी, सुधी लेना और प्यार करना। जैसे शारीरिक परिपक्वता रातों रात नही आती है वैसे ही आत्मिक परिपक्वता भी रातों रात नही आती है। इस के लिए समय लगता है।

नया जन्मा पाया बच्चा आत्मिक पोषण कैसे पाता है? परमेश्वर का वचन पढने और उसकी आज्ञा मानने के द्वारा। जैसे छोटे बच्चे को बढ़ने और उन्नति के लिए भोजने जरुरी होता है, वैसे ही आपको अपनी आत्मा को भोजन देना होगा ताकि आप विश्वासी के रुप मे बढे और उन्नति पाएं। बाइबल जीवन की रोटी है, और इसके वचन आपकी आत्मा के लिए भोजन हैं। जब आप बाइबल पढते हैं, प्रार्थना कर परमेश्वर से मदद मांगिए कि वो अपने वचन आपको समझाने मे मदद करे।

परमेश्वर के साथ बातें करते हुए और उसकी आराधना करते हुए समय बिताने से आपकी आत्मा को भी भोजन मिलेगा। साथ ही, आपको बाइबल

पर विश्वास करनेवाले चर्च या ऐसे स्टडी ग्रुप मे साथ संगति करनी होगी जो पूरी बाइबल पर विश्वास करते हैं। विश्वासीयों के समुदाय मे, आप प्रेम, सहायता, सुरक्षा और छाया पाएगें। हालाकी चर्च सिद्धता से बहुत दूर है फिर भी ये परमेश्वर का तरिका है कि आप उसकी संतान के साथ बढें।

बच्चे के लिए प्रतिदिन सिखने का अनुभव होता है, बहुत सी नई वस्तुओं से, चेहरे से, आवाज़ से, रंग से और क्रियाओं से। वो परिचित होता है नए भोजन, वस्तुओं, शब्द और जगह से। बच्चा सिखता है कि जीवन बढने और सिखने की क्रिया है।

ये सारे सिद्धान्त आत्मिक संसार मे भी काम करते हैं। आपका नया जीवन और मसीह के साथ आपका संबंध उन्नति और सिखने की क्रिया है। आप ने सामना किए हर पाठ और अनुभव के द्वारा उसके साथ आपका संबंध परिपक्व होगा।

एक यात्रा

याद रखिए, परमेश्वर के साथ आपका संबंध एक यात्रा है। ये उसने आपके लिए जो रखा है उसे सिखने और बढने की क्रिया है। जैसे आप पाएगें कि आप प्रभु के साथ ज्यादा समय बिता रहे हैं, आप पाएगें कि आप उसके सिद्ध रुप मे अधिक और अधिक बदलते जा रहे हैं। एक विश्वासी का यही प्राथमिक लक्ष्य है,,, कि हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के जैसे अधिक और अधिक होते जाएं। जैसे आप समय निकाल कर उसे और अधिक जानते हैं, जैसे कूम्हार मिट्टी के साथ करता है, वो आपको अपने पुत्र के स्वरुप मे आकार देगा।

आपका जीवन ऊंचे बिंदू या नीचले बिंदू मे भी एक यात्रा होगा। ऐसा समय होगा जब आप प्रभु के वचन का पालन करेंगे और ऐसा समय होगा जब आप उसके वचन का पालन करने से चुक जाएगे। यहां तक कि

बाइबल के महान स्त्री और पुरुष भी अपने जीवन मे कई बार पाप से लढते रहे हैं।

पौलुस अपने शरीर मे होनेवाले युद्ध के बारे मे बताता है, और जो गलत है उसके बजाए उसे सही काम करने मे परेशानी होती थी। और उसने हमेशा सही काम करना ही नही चुना। उसने रोमियो ७:१८ मे कहा, *इच्छा तो है लेकिन मुझ से कोई भला कार्य प्रान नही पड़ता है।* जब भी आपको समय मिले रोमियो ७ पढिए ताकि आप उस युद्ध के बारे मे समझ सकें जो आपके और परमेश्वर की धार्मिकता के बीच और आपके शरीर और आपकी आत्मा के बीच छीड़ा है।

मसीह के लिए जीना आपको सिद्ध नही बनाता है। लेकिन आप परमेश्वर के साथ के संबंध मे जितना बढते जाएगें, उतना आसान होगा कि उस पर भरोसा रखें और उसके अनुग्रह पर अधिक आधारित रहे ताकि वो आपको परिक्षा और परखे जाने से निकाल लाएं। अपनी उलझनों के बावजुद, पौलुस पूरे भरोसे के साथ कह सकता था, *परमेश्वर का धन्यवाद हो जो हमे हमेशा जय के उत्सव मे लिए चलता है।* (२ कुरिन्थियों २:१४)

हालाकि जब आप जुझते हैं या असफल होते हैं (हम सब होते हैं), परमेश्वर का दिल हमेशा हमें फिर पुनःगठित कर फिर से सही मार्ग पर रखना चाहता है।

मधूर समर्पण

आप प्रतिदिन अपना जीवन मसीह को फिर से समर्पित करने के लिए सबसे महत्वपुर्ण प्रात पाएंगं, रोमियो १२:१ मे। प्रेरित पौलुस लिखता है कि *विश्वासीयों को अपना शरीर परमेश्वर को जीवित, पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ प्रालिदान चढाना होगा।* इसका अर्थ है कि सिखना होगा कि प्रतिदिन आपको अपनी इच्छा और निर्णय लेने कि शक्ति को उसे समर्पित

करना है। यीशु का आपके जीवन पर नियंत्रण का यही अर्थ होता है। जब आप प्रभु यीशु के साथ जीते हैं, तब आप सच मे आनंद और शान्ति का सही अर्थ खोज पाते हैं।

नीतिवचन की किताब (जो राजा सुलेमान ने लिखी है) हमे अपना जीवन प्रभु को समर्पित करने के लिए व्यवहारीक सलाह देती है : *संपुर्ण ह्रदय से प्रभु पर भरोसा रख और अपनी समझ का सहारा न लेना। अपने सारे मार्ग मे उसे जानना तो तेरे सारे मार्ग सुफल होगे* (नीतिवचन ३:५-६)

जैसे आप अपना जीवन मसीह को और अधिक देते हैं, आप पाएंगे कि उसकी पवित्र आत्मा आप मे काम कर रही है। जप्रा आप किसी परिक्षा या परखे जाने की परिस्थिती मे आते हैं, आप पाएंगे कि आप की शारीरिक इच्छा कम हो रही है और परमेश्वर की आत्मा आपके जीवन मे सक्रिय है।

ये २ कुरिन्थियों ३:१८ का काम है। ये वचन कहता है,*हम उसकी समानता मे बदलते जाते हैं, सदा बढ़नेवाली महिमा के साथ।* महिमा शब्द का अर्थ है, सुंदरता, आदर और उत्तमता, परमेश्वर आपका जीवन महिमा से महिमा से महिमा मे ले जाएगा, जब तक कि एक बहुमुल्य दिन आप स्वर्ग मे उसकी महिमा के रुप मे पूरी तरह से बदलकर खड़े होगें।

आपकी विरासत!

अब आपने यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु ग्रहण किया है, आप परमेश्वर की संतान बन गएं हैं। गलतियो ४:६-७ कहता है, *इसलिए कि तुम पुत्र हो, परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो हे अब्बा, हे पिता! कह कर पुकारता है, हमारे ह्रदय मे भेजा है। इसलिए अब तू दास नही, परन्तु एक पुत्र है, और जब पुत्र है तो परमेश्वर के द्वारा उत्तराधिकारी भी हैं।*

हिब्रु मे *अब्बा* का अर्थ पिता है। परमेश्वर ने आपको *अपने* राज्य मे और

अपने परिवार मे संतान के रुप मे स्वीकार किया है। आपने उसके साथ अनंतजीवन प्राप्त किया है। वाव! कितना अदभुत सौभाग्य है!

वारिस वो व्यक्ति होता है जिसका नाम संपत्ति, विरासत या लाभ पाने के लिए लिखा गया है, उसकी ओर से लिखा गया है जो उस व्यक्ति को कुछ खास देना चाहता है। हमारे बच्चे वो विरासत पाते हैं जो हम अपने इस पृथ्वी पर हमारा समय खत्म होने पर उन्हें देना चाहते हैं। हम उन्हें अपना वारिस बनाते हैं क्योंकि हम उन से प्यार करते हैं और उन्हें आशिष देना चाहते हैं।

परमेश्वर की संतान होने के नाते, उसके परिवार का भाग होने के कारण हम उसके सारे लाभ और आशिषों के लिए योग्य हैं। परमेश्वर ने आपको *मसीह का संगी-वारिस* बनाया है (रोमियो ८:१७)। आपने विरासत मे क्या पाया है? पहले और सबसे महत्वपुर्ण, आप ने अनंतजीवन पाया है। आपके पाप माफ कर दिएं गएं हैं। स्वर्ग आपकी मंज़िल है। बच्चे के रुप मे, आप ने वचन की सारी प्रतिज्ञाओं की विरासत पाई हैं।

जैसे आप उसके साथ नज़दिकी संबंध मे चलते हैं, आपके पास उसकी उपस्थिती, शान्ति और प्रयोजन की प्रतिज्ञा है। आप उसका आनंद, संयम और सान्तवना पाएगे। उसकी संतान होने के नाते आपके पास अधिकार है कि आप किसी भी समय उससे बातें करने या उसके समय बिताने के लिए जा सकते हैं। और आपकी मृत्यु के बाद, आप उसके साथ स्वर्ग मे अनंत जीवन प्राप्त करेगें,,, ऐसी विरासत जो कोई भी आप से छिन नही सकता है।

क्या आप समझते हैं कि ये विरासत, ये भेंट और आशिष, केवल परमेश्वर की ***संतान*** के लिए है? जिन्होंने यीशु पर अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रुप विश्वास करना नही चुना है वो उसके वारिस नही हैं। इसलिए, वो उसकी उपस्थिती, शान्ति और संपन्नता नही पा सकते हैं। ये आशिष **केवल** परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियों के लिए ही रखी गई हैं।

जीवन हमेशा आसान नही होगा

आप परमेश्वर की संतान फ्रान गएं और स्वर्ग के राज मे जा सकते हैं, इसका ये मतलब नही है कि इस पृथ्वी पर आपका जीवन सिद्ध और आसान होगा। हालाकि जब आप पूरे दिल से परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, फिर मुश्किल के समय होगे ही। बाइबल कहती है कि सूरज दुष्ट और भले मनुष्य दोनों पर उदय होता है, वर्षा धर्मी और अधर्मी दोनों पर होती है (मत्ती ५:४५)। आप के जीवन मे बारिश के और मुश्किल के दिन जरुर होगे।

याद आप कहेः तो फिर विश्वास करने से क्या फायद? खैर, अब जब कि आप विश्वासी हैं, और ये मुश्किल समय आते है, आप अपने विश्वासयोग्य साथी पर भरोसा रख सकते हैं *जो आपको कभी न छोडेगा न कभी त्यागेगा* (इब्रानियो १३:५)। आप कभी अकेले नही रहेगें!

आपको किसी भी मुसिबत से निकलने के लिए प्रभु आपको बल देगा। आपकी कमज़ोरी मे उसका बल सिद्ध है (२ कुरिन्थियों १२:९)। यशायाह की किताब मे, परमेश्वर हमसे ये कहता है, *डर मत, क्योंकि मै तेरे साथ हूं, इधर-उधर मत ताक, क्योंकि मै तेरा परमेश्वर हूं। मै तुझे ढृढ़ करुंगा और निश्चय ही तेरी सहायता करूंगा, और अपने धर्ममय दाहिने हाथ से तुझे संभाले रहुंगा* (यशायह ४१:१०)।

जब इस सृष्टि का रचनाकार परमेश्वर हमारी ओर से है तो हमे किस कि चिन्ता करनी चाहिए? जब आपको कोई समस्या होती है जो आपके दिल पर भारी बोझ होता है, तो बस उसे परमेश्वर को दें। बाइबल कहती है *अपना बोझ प्रभु पर डाल दे और वही तुझे संभालेगा, वह धर्मी को कभी टलने नही देगा* (भजन ५५:२२)।

चाहे परिस्थिती बड़ी हो या छोटी हो, परमेश्वर को परवाह है। वो आपके जीवन की हर चिज़ की परवाह करता है। उसने आपके सिर के बाल भी गिन रखें हैं (मत्ती १०:३०)।

प्रोत्साहित हो जाएं

आप परमेश्वर के लिए बहुत विशेष हैं। आपके जीवन की कोई भी छोटी से छोटी बात की उसे परवाह है। कोई समस्या उसके लिए बहुत बड़ी नही होती है। वचन कहता है, *उस सामर्थ के अनुसार जो हम मे क्रियाशिल है, कि हमारी विनती और कल्पना से कही अधिक बढकर कार्य कर सकता है* (इफिसियो ३:२०)। मै जानता हूं कि मै महान चिज़ों की कल्पना कर सकता हूं, ये वचन मुझे शाश्वति देता है कि परमेश्वर मेरी कल्पना से कई बढ़कर कर सकता है।

जब ऐसा महसुस होता है कि मेरे जीवन की बुनियाद डगमगा रही है, तो हिम्मत रखिए। मत्ती ७:२४-२७ मे, यीशु ऐसे व्यक्ति के जीवन मे आएं तुफान के बारे मे बताता है जिसकी नींव मज़बुत चट्टान पर बनी थी। यीशु ने कहा, मेंह बरसा, बाढ़ें आई, आंधियाँ चली और घर से टकराई; फिर भी वह नही गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर थी। यीशु मसीह मे आपके पास मज़बुत चट्टान है, जिस पर आप मज़बुती से खड़े रह सकते हैं।

जब विपत्ति की आंधी चलती है, आराम किजिए। अब आंधी के बीच आपके पास छत है। क्योंकि तू असहायों के लिए रक्षक, संकट मे पड़े दीन के लिए सहायक, तूफान मे शरण और धूप के समय छाया रहा है (यशायाह २५:४)।

यदि आप निराश और परेशान महसुस कर रहे हैं तो हिम्मत बांधिए नीतिवचन १८:२४ घोषित करता है *जिस मनुष्य के कई मित्र होते हैं, उसका विनाश हो सकता है, परन्तु एक ऐसा भी मित्र है जो भाई से बढ़कर साथ देता है।* यीशु आप का सबसे उत्तम मित्र है और वो भाई से बढ़कर आपके करीब रहता है।

परमेश्वर कौन है?

बाइबल, खासकर पुराने नियम मे, परमेश्वर का विवरण देने के लिए कई शब्दों का उपयोग करती है। दिए गएं वचन हमे उसके स्वभाव के बारे मे साफ समझ देती हैः

यदि आर्थिक दबाव और परेशानी आपको घेरकर आती है तो जान लिजिए कि परमेश्वर आपका यहोवा-यीरे है, जिसका अर्थ है परमेश्वर हमारा प्रयोजनकर्ता है। वो आपकी ओर से है।

यदि बीमार, रोग और दर्द आपके परिवार पर छाया करती है, तो महान वैद्य से आपको दुसरा पर्याय दिया गया है। वो यहोवा-राफा है, जिसका अर्थ है प्रभु हमारा चंगाईदाता है। यशायाह घोषित करता है, *वह हमारे ही अपराधों के कारण बेधा गया, वह हमारे ही अधर्मों के कामों के लिए कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, उसके कोड़े खाने से हम चंगे हुए* (यशायाह ५३:५)।

यदि आप ऐसी जीवनशैली या आदत मे फंसे हैं हो आपको अपना गुलाम बनाएं हैं, तो एक आशा है क्योंकि परमेश्वर *मेरे उद्धार का फ्राल है* (भजन १४०:७)।

यदि निराशा और दुःख की घटना या अकेलापन आपके दिल को तोड़ती और चिन्तीत करती है, तो कृपया जानिए कि प्रभु आपको सान्तवना दे सकता है। दुसरा कुरिन्थियों १:३ घोषित करता है, *धन्य है परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता, जो दयालु पिता और समस्त शान्ति का परमेश्वर है। वह हमे सब क्लेशों में शान्ति देता है ताकि हम उनको जो क्लेश मे हो वैसी ही शान्ति दे जैसी परमेश्वर ने स्वयं हमको दी है।* वो हमारा *यहोवा-शालोम* है, जिसका अर्थ है, प्रभु हमारी शान्ति है। प्रभु आपको आलौकिक आनंद से भरना चाहता है जो आपका बल होगा। *प्रभु का आनंद ही तुम्हारा फ्राल है* (नेहमयाह ८:१०)

जब आपको बुद्धि, दिशानिर्देश और मार्गदर्शन चाहिए, आप बस प्रभु से मांग सकते हैं और वो आपको देगा (याकूब १:५)। यदि ऐसा कुछ है जिसे आप नही समझ सकते हैं, तो ये जानकर सान्तवना पाईए कि *पवित्र आत्मा आप को सबकुछ सिखाएगा* (यूहन्ना १४:२६)।

यदि जीवन परेशानी और तनाव से भरा दिखता है, परमेश्वर पर भरोसा रखिए। यशायाह २६:३-४ कहता है, *जिसका मन तुझ मे लगा है, उसकी शान्ति तेरे द्वारा पूरी बनी रहेगी, क्योंकि उसका भरोसा तुझ पर है। यहोवा पर सदा भरोसा रख, यहोवा परमेश्वर हमारी सनातन चट्टान है।*

जब मुश्किल का समय आता है, और वो जरुर आएगें, जान लिजिए कि परमेश्वर हमे दिल की ऐसी शान्ति देते हैं जो हमारे मनुष्य की समझ से परे है। फिलिप्पियों ४:६-७ कहता है, *किसी भी बात की चिन्ता न करो, परन्तु प्रत्येक बात मे प्रार्थना और निवेदन के द्वारा तुम्हारी विनती धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत की जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति जो समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु मे सुरक्षित रखेगी।*

अनंतकाल का दृष्टिकोण

मै आपको प्रोत्साहित करता हूं कि आपको हमेशा अनंतकाल का दृष्टिकोण बनाएं रखना है। अनंतकाल का दृष्टिकोण रखने का अर्थ है कि केवल इसी पल मे और इसकी परेशानी मे न रहना। नही, विश्वासी के नाते, हम अंत की ओर देखते हुए जीते हैं,,, ये जानते हुए कि एक दिन यीशु हमे अपने साथ हमारे स्वर्गिय घर ले जाने के लिए वापस आएगा। विश्वासीयों के लिए ये कितना महिमामय होता कि हम उसे आमने-सामने देखें।

इसके कारण, जब मुश्किलें आती हैं, हम पौलुस के साथ कह सकते हैं, *क्योंकि मै ये समझता हूं कि वर्तमान समय के दुःखों की तुलना करना आनेवाली महिमा से जो हम पर प्रकट होनेवाली है, उचित नही है।* (रोमियो ८:१८)

चाहे आप खुद को किसी भी परिस्थिती मे पाएं, परमेश्वर आपकी हर जरुरत पूरी करने योग्य है। वो आपके लिए पर्याप्त है, अच्छे समय मे और मुश्किल के समय मे परमेश्वर आपका बल होगा। हालाकि आप महसुस करे कि आपके पास केवल वही है, आप शाश्वति रखिए आपको केवल उसी की जरुरत है।

परमेश्वर नियंत्रण करता है

बाइबल की सारी प्रतिज्ञाएं हमे महान आशा देती है। हम उसे पढते हुए प्रोत्साहना पाते और प्रेरित होते हैं, और अपने अंदर विश्वास बढते हुए देखते है। कुछ भी हो कई बार जब हमारे जीवन पर दबाव आता है हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं आसानी से भुल सकते है।

जब आपके जीवन मे निर्णय लेने और परिक्षा का समय आएगा, आप उससे सामना करने का नया मार्ग जानेगें। सारी परेशानी अपने हाथ मे लेकर अपनी सीमित शक्ति मे उससे निपटने की कोशिश करने के बजाएं, परमेश्वर पर भरोसा रखिए और पहले उसकी ओर देखिए।

मै जानता हूं कि ये आसान नही है! अपने ही तरिके से जीवन का उत्तर देना स्वाभाविक दिखाई देता है। कई साल से हम अकेले ही समस्याओं का सामने करते आएं हैं। आप इस तरह से शायद अधिकारी के रुप मे खुद को देखें। लेकिन सच्चाई ये है कि आप अपने जीवन के लिए सबसे उत्तम नही जानते हैं। केवल प्रभु ही आपके जीवन का अंत शुरु से जानता है। हमारी मुश्किल परिस्थितीयों का प्रतिफल तब सबसे उत्तम होता है जब हम रुककर परमेश्वर की आलौकिक बुद्धि, दिशानिर्देश और मार्गदर्शन की ओर देखते हैं।

इस अदभुत सृष्टि का सृष्टिकर्ता आप की ओर से है। वो सबकुछ जानता है और उसी ने सबकुछ बनाया है। आप परमेश्वर की संतान, एक विश्वासी हैं, ये कितना महान सौभाग्य है। आप इस पृथ्वी पर जितना समझ

सकते हैं उससे बढ़कर वो आप से प्यार करता है। उसने अपने राज्य मे आपको गोद लिया है और आपको अपनी संतान बनाया है।

वो हमेशा आपके साथ है कि आपकी मदद करे, मार्गदर्शन करे, सिखाएं, सान्तवना दे और आपको शान्ति, आनंद, धीरज और फ्रल दे। आपको जो भी चाहिए, परमेश्वर का अनुग्रह और प्रयोजन आप के लिए प्रयोजन करेगा। निश्चय ही ये उत्साहजनक, बहुतायत के जीवन जैसे सुनाई देता है, है ना?

जल्दि ही आप आश्चर्य करेगें कि आप प्रभु के बिना अब तक कैसे जीए। आप इस जीवन के लाभ केवल इस पृथ्वी पर ही नही कांटेगें, लेकिन साथ ही आप अपने लिए स्वर्ग मे खज़ाना जमा करेगें, जहां एक दिन आप अपने उद्धारकर्ता के साथ सदा के लिए वास करेगें!

अध्याय तीन

यीशु को क्रुस पर क्यों मरना पड़ा

शायद आप सोचे कि यीशु को हमारे लिए क्यों मरना पड़ा ताकि हम क्षमा पाकर अनंत जीवन पाएं। मै जानता हूं कि कई बार मै भी सोचता था कि हमे बचाने के लिए यीशु के पास कोई और रास्ता होता, लेकिन नही था। उसने अपना जीवन मेरे लिए दिया इसलिए मै उसका कितना आभारी हूं।

जब परमेश्वर ने इस संसार को बनाया

ये सिद्ध था और बिना दोष या पाप के था। आदम और हव्वा अदन के बाग मे रहते थे और प्रतिदिन प्रभु के साथ चलते थे। वहां कोई बीमारी नही थी, दर्द नही था और मृत्यु नही थी।

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को स्वतंत्र इच्छा दी थी, वो जो चाहते थे उसे चुनने की योग्यता दी थी। परमेश्वर ने कटपुतलीयाँ नही प्रानाई। वो चाहता है कि उसकी संतान उसकी सेवा करे और उसके मार्गदर्शन का पालन करे क्योंकि वो उससे प्यार करते हैं। परमेश्वर ने एक आज्ञा के द्वारा ही आदम और हव्वा को अपनी सृष्टि पर सारा अधिकार दिया था। परमेश्वर ने आदम से कहा था कि भले और बुरे के ज्ञान का पेड़ का फल न खाना (उत्पत्ति २:१७)

वर्जित फल

उत्पत्ति ३:१ मे, शैतान सर्प के रुप मे आकर हव्वा से कहता है, *क्या सच मे परमेश्वर ने कहा है कि तुम वाटीका का कोई फल न खाना? हव्वा ने उत्तर दिया, हम वाटीका के पेड़ का फल खा सकते हैं परन्तु जो पेड़ वाटीका के बीच है उसका फल के बारे मे परमेश्वर ने कहा है, कि तुम इस मे से न खाना और न इसे छूना, नही तो तुम मर जाओगे।*

तब शैतान ने हव्वा को झुठ बताकर कहा कि परमेश्वर नही जानता है कि उसने क्या कहा। *तुम निश्चय ही नही मरोगे।* उसने उससे कहा कि यदि वो फल खाती है तो *तुम परमेश्वर के तुल्य हो जाओगी और भले और बुरे को जान पाओगी।* शैतान ने हव्वा को सहमत किया कि वो परमेश्वर के तुल्य हो जाएगी और उसे उक्साया कि वो आगे बढ़कर फल खाएं।

नए विश्वासी होने के नाते, आपको शैतान की युक्ति के बारे मे जागरुक रहना है। उसने हव्वा को परमेश्वर की आज्ञाभंग करने के लिए सीधा नही कहा। उसने परमेश्वर की इमानदारी और उसकी भलाई के बारे मे उसके मन मे संदेह लाया। उसके बाद, आज्ञाभंग करने के लिए ज्यादा कदम नही लगे। इस किताब मे हम परिक्षा के बारे मे बाद मे और भी चर्चा करेंगे, परन्तु मै आपको अब प्रोत्साहित करना चाहता हूं कि आप हर संदेह और अविश्वास से अपने मन और हृदय की रखा करे।

हव्वा ने झुठ पर विश्वास किया और परिक्षा मे हिम्मत हार गई। फिर परमेश्वर का आदर कर और अपनी पत्नी की रक्षा करने के बजाएं, आदम ने परमेश्वर की आज्ञाभंग की और उसने भी वर्जीत फल खाया। उनकी आज्ञाभंग करने के परिणाम स्वरुप पाप इस संसार मे आया। परमेश्वर कभी नही चाहता था कि उसकी संतान पाप के परिणाम भुगले, परन्तु वो नही चाहता था कि मनुष्य अपनी स्वतंत्र इच्छा रखें और खुद के निर्णय ले।

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को कट-पुतली नही बनाया। वो नही

चाहता था कि वो उसकी आराधना इसलिए करे कि उसके पिछे कोई मकसद हो ताकि वो उन्हें खिंचकर कहे, अब मेरी आराधना करने का समय है। नही, वो चाहता था कि वो स्वयं अपनी इच्छा से चुनाव कर उसकी आराधना करे।

जब आदम और हव्वा परमेश्वर की आज्ञाभंग करने के लिए अपनी इच्छा का उपयोग किया, संसार मे पाप आया। इस तरह से बीमारी, निराशा, दुष्टता और मृत्यु भी आई। और संसार मे केवल शारीरिक मृत्यु ही नही आई, परन्तु उससे भी महत्वपुर्ण है, आत्मिक मृत्यु और परमेश्वर से अनंतकाल के लिए अलग होना उन लोगों के लिए आया जो यीशु को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु के रुप मे नही जानते हैं।

लहू बहाया जाना

उनके पाप के कारण, आदम और हव्वा परमेश्वर की उपस्थिती मे नही रह सकें, परमेश्वर ने उन्हें वाटीका से फ्राहर निकाल दिया। समय बितता गया और पीढी बितती गई। परन्तु परमेश्वर के पास एक योजना थी!

परमेश्वर ने अपने आलौकिक समय-सारणी के अनुसार योजना बनाई कि एक दिन आएगा, जब वो अपने सिद्ध पुत्र को इस पृथ्वी पर मरने के लिए भेजेगा ताकि उसके लहू के द्वारा, परमेश्वर हमारे पाप माफ कर सकें। मै नही जानता था कि परमेश्वर ने लहू बहाना क्यों निश्चित किया ताकि पाप की क्षमा मिल सकें, लेकिन उसने ऐसा किया। इब्रानियों ९:२२ कहता है, *लगभग व्यवस्था की हर एक बात लहू से ही शुद्ध होती है; और लहू बहाए बिना पापों की क्षमा नही है।* साधारण शब्दों मे कहे तो पाप से मृत्यु आई, लहु मे जीवन है, इसलिए आत्मिक जीवन लहू के द्वारा ही वापस मिलता है। यीशु की केस मे, फ्रालिदान से हम विश्वास करनेवालों के लिए एक बार ही सदा के लिए हमारा उद्धार मिला है।

परमेश्वर से मेल-मिलाप करने के लिए एक ही मार्ग था कि हम हमारी

गलतियों के बदले मे लहू का बलिदान चढ़ाएं। प्रायश्चित का अर्थ है ढांका जाना या शुद्ध करना जब कोई पाप करते हैं तब केवल, सरल शब्दों मे मुझे माफ किजिए काफी नही होता है। परमेश्वर का न्याय पूरा होना चाहिए ताकि पाप ढ़ांका जाएं और शुद्ध किया जाएं।

लहू का बलिदान चढ़ाना

पुराने नियम की सबसे पहली किताब से ही, परमेश्वर ने लोगों को बहुत स्पष्ट रुप मे बताया था कि कैसे उन्हें अपने पापों के प्रायश्चित के लिए परमेश्वर के सामने प्राणीयों का बलिदान चढ़ाना था। परमेश्वर ने इन के साथ वाचा बांधी - पवित्र, अटल प्रतिज्ञा - कि यदि वो अपने पापों के प्रायश्चित के लिए प्राणीयों का बलिदान चढ़ाएंगे, तो वो उन्हें क्षमा करेगा। उनकी भेंट के लिए उन्हें कुछ किमत चुकानी पड़ती थी; वो सच्चा बलिदान होना था।

अलग-अलग उद्देश के लिए परमेश्वर को अलग बलिदान चढ़ाने पड़ते थे। कुछ पापों से शुद्ध होने के लिए थे; दुसरे होमबली थे जो परमेश्वर के प्रति समर्पण दिखाते थे। और यहां तक कि संगति के लिए भी बलिदान होते थे।

प्राणियों का बलिदान चढ़ाने का ये विचार आधुनिक समाज के लिए अजिब सा दिखाई दे; कुछ भी परमेश्वर ने इसे स्थापित किया था। लेकिन फिर भी ऐसा कोई बलिदान नही था जो हमारे पापों के लिए पूरी किमत चुकाता हो।

प्रतिदिन परमेश्वर को बलिदान चढ़ाने की क्रिया सैकड़ो साल तक चलती रही। लेकिन वचन हमे बताता है कि ये वाचा पाप के प्रायश्चित के लिए काफी नही थी, *यदि पहली वाचा मे दोष नही होता, तो दुसरी वाचा की जरुरत ही नही पड़ती थी। उस मे दोष पाने पर उसने कहा, देखो, वो दिन*

*आ रहा है, प्रभु कहता है, जफ्र मै इस्राएल के घराने और यहुदा के घराने से **नई वाचा** बांधूंगा* (इब्रानियों ८:७-८),

एक नई वाचा

अपने महान प्रेम और दया के कारण, परमेश्वर वाचा स्थापित करना चाहता था। परमेश्वर ने स्वयं सबसे बड़ी किमत चुकाई और महान बलिदान दिया। वो अपना एकलौता पुत्र इस संसार मे भेजनेवाला था, यीशु को इस संसार मे भेजनेवाला था। यीशु सारे संसार के पाप उठाने आया था। अपना सिद्ध और बहुमुल्य लहू कलवरी के क्रुस पर बहाने के बाद, वो हमारी मौत मरा और हमारा कर्ज चुका दिया।

यीशु परमेश्वर का अंतिम बलिदान हो गया। उसका ये काम आसान नही था। उसे अपना स्वर्गिय घर छोडकर पृथ्वी पर आना था, मनुष्य रुप मे आकर मांस और लहूं धारण करना था। फिर उसे सबसे भयानक और पीड़ादायी मौत मरना था। यहां तक कि यीशु को क्रुस पर चढ़ाने के लिए ले जाने के जब सैनिक आएं उसके पहले, वो सोच रहा था कि क्या और कोई मार्ग है।

शारीरिक पिडा से परे ये तो ये जानना था कि सारे संसार का पाप उस पर आनेवाला था। वो जानता था कि पाप परमेश्वर से अलग करता है, और उसके द्वारा वो अपने स्वर्गिय पिता से क्रुस पर लटकाएं वक्त तक अलग रहेगा, ये सहने से बाहर था। उसने प्रार्थना कर अपने पिता से पुछा, क्या क्रुस की पिडा और अपमान को छोड कोई और रास्ता है? लेकिन उसने अपनी प्रार्थना का अंत ये कहते हुए किया, *फिर भी मेरी इच्छा नही लेकिन तेरी इच्छा पूरी हो* (मरकुस १४:३५-३६)

मै आभारी हुं कि यीशु ने खुद को अपने पिता की इच्छा के सामने समर्पित किया। अगर उसने समर्पण नही किया होता तो हम अभी भी अपने

पाप मे बंधे होते और हमे कोई आशा नही होती। प्रेरित पौलुस लिखता है, *दुर्लभ है कि किसी मनुष्य के लिए कोई मरे; पर हो सकता है कि किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का साहस भी कर ले। परन्तु परमेश्वर अपने प्रेम्को हमारे प्रति इस प्रकार प्रदर्शित करता है कि जब हम पापी ही थे मसीह हमारे लिए मरा* (रोमियो ५:७-८)।

जैसे यीशु क्रुस पर लटका था, पूरी पृथ्वी पर अंधकार छा गया, जैसे यीशु ने सच मे संसार का पाप उठाया था (दण्ड और शर्म दोनों) खुद पर उठा लिया। जब कि परमेश्वर पाप की ओर नही देख सकता है, यीशु अपने पिता की उपस्थिती जाती हुई महसुस की। उस पल मे, जब यीशु पिता से दूर हो रहा था और पीडा सह रहा था, वो याताना मे चिल्लाया, *मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड दिया?* (मत्ति २७:४६-५४)

और फिर सब पूरा हुआ। जफ्र यीशु क्रुर क्रुस पर मरा उसने **हमारे** छुटकारे की किमत **अपने** ही लहू से चुका दी। यीशु ने हमारे पापों के लिए कितनी महान किमत चुकाई है। परमेश्वर हम से इतना प्यार करता है कि वो अपने प्रिय पुत्र का फ्रालिदान करने के लिए तैयार हो गया ताकि हम उसके साथ स्वर्ग मे अनंतकाल बिता सकें।

मै आपको प्रोत्साहित करता हूं कि आप इब्रानियों ८ और ९ पढें ताकि आप यीशु का याजकपन और उसने अपना लहु बहाने के द्वारा हमारे साथ बांधी हुई वाचा जान सकें।

फटा पर्दा

यीशु के दिनों मे, यहुदी लोग परमेश्वर की आराधना करने के लिए यरुशलेम के मंदिर आते थे। मंदिर के अंदर एक बड़ा पर्दा था जो महा-पवित्र स्थान को भीतरी और बाहरी आंगन से अलग करता था।

महा-पवित्र स्थान वो था जहां याजक फ्रालिदान चढाएं प्राणी का लहू परमेश्वर की वेदी पर अपने लिए और लोगों पापों के प्रायश्चित के लिए

छिडकते थे। महा-पवित्र स्थान जो चाहे वो प्रवेश नही कर सकता था क्योंकि परमेश्वर की उपस्थिती वहां रहती थी। परमेश्वर ने केवल महायाजक को भीतर आने की अनुमति दी थी, और वो भी केवल साल मे एक ही, प्रायश्चित के दिन ही भीतर जा सकता था।

तलमुद के अनुसार, जिसमे यहुदियों के पवित्र लेख हैं, जब महायाजक परमेश्वर को बलिदान चढ़ाने के लिए महा-पवित्र स्थान मे जाता था, उसे ऐसे वस्त्र पहनने पड़ते थे जिसमे नीचे तक घंटियाँ लगी होती थी और उसके पैर मे रस्सी लगी होती थी। ये अजिब सुना देता है, लेकिन उसके ऐसे वस्त्र पहनने का कारण था, ये हंसने की बात नही है।

घंटीयों की आवाज़ का उद्देश उन लोगों के लिए था जो बाहर राह देख रहे थे। यदि वो घंटीयों की आवाज़ सुनते तो जान जाते थे कि याजक अभी भी जीवित है और चल रहा है। इससे भी बढ़कर, घंटीयों की आवाज़ ये बात दर्शाती थी कि परमेश्वर ने उनके बलिदान और भेंट स्वीकार और ग्रहण किएं हैं। वो ये कैसे जानते थे? क्योंकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सामर्थ याजक पर इतनी सामर्थ से आती थी, कि याजक भी शारीरिक रुप मे उसकी उस्थिती मे हिल जाता था। इस कारण याजक के वस्त्र से लगी घंटीयाँ बजती थी। घंटीयों की आवाज़ से ही बलिदान लानेवाले लोग जानते थे कि उनके बलिदान परमेश्वर ने स्वीकार किएं हैं।

यदि भेंट और बलिदान स्वीकार नही किए जाते, तो परमेश्वर की उपस्थिती याजक पर नही उतरती और उसके वस्त्र की घंटीयाँ नही बजती थी।

या यदि याजक अशुद्ध होता या उसका हृदय परमेश्वर के सामने सही नही होता, तो बलिदान स्वीकार नही किया जाता और याजक वही मर जाता था।

जब कि लोग महा-पवित्र स्थान मे प्रवेश नही कर पाते थे, क्योंकि अगर वो भीतर आते तो मर जाते, इसलिए वो रस्सी के सहारे याजक की मृत-देह

महा-पवित्र स्थान से बाहर खींचते थे। मै ऐसा काम करना पसंद नही करता और ना ही उस समय मे जीना चाहता था/

परमेश्वर के पास अपने लोगों के लिए योजना थी, एक बहुत ही उत्तम योजना जो उसके पुत्र यीशु के द्वारा पुरी होनी थी।

जब यीशु ने अपना जीवन दिया, वो अंतिम बलिदान था, सिद्ध और निर्दोष था। उसके लहू ने सारे संसार के पाप ढांक दिए। जब यीशु मरा, मंदिर का पर्दा ऊपर ने नीचे तक फट गया।

किसी भी मनुष्य के लिए ये पर्दा फाड़ना असंभव था, उसके बारे मे बताया जाता है कि वो हथेली जितना मोटा था, ये सीले हुए धागों लगभग ४-६ ईंच मोटा था। केवल परमेश्वर का हाथ ही, स्वर्ग से उतर कर उसे दो भागों मे फाड़ सकता था। ये महत्वपुर्ण है क्योंकि उस पर्दे की दुसरी ओर पहले परमेश्वर की उपस्थिती इस पृथ्वी पर वास करती थी। यीशु की मृत्यु ने केवल हमारे पापों के लिए ही किमत नही चुकाई और क्षमा और अनंतजीवन ही नही लाया लेकिन क्रुस ने हमे सीधे परमेश्वर तक जाने की पहूंच दी है; इससे मार्ग खुला की परमेश्वर की उपस्थिती मसीह के हर अनुयायी मे वास करे।

अब हमे महायाजक के द्वारा जाने की जरुरत नही है, क्योंकि स्वयं यीशु हमारा महायाजक बन गया है। हमे परमेश्वर को खोजने के लिए और किसी पर आधारित होने की जरुरत नही है। अब परमेश्वर ने एक उत्तम मार्ग तैयार किया है। परमेश्वर अपनी हरएक संतान के साथ व्यक्तिगत संबंध चाहता है। वो हमारे साथ वैसे ई चलना चाहता है, बातें करना चाहता है जैसे उसने आदम और हव्वा के साथ वाटीका मे किया था।

क्रुस पर मसीह की बलिदान के रुप मे मृत्यु और उसका लहू बहाया जाना, जबकि वो हमारा उद्धारकर्ता और प्रभु है, तो हम उसके पास जैसे हैं वैसे ही आ सकते हैं। अब हमारे पास कितना महान सौभाग्य है कि सर्वोच्च परमेश्वर की उपस्थिती मे आएं।

जैसे हम अपनी स्तुति और आराधना चढाते हैं, हम सीधे महा-पवित्र स्थान मे जा सकते हैं, वस्त्र पर घंटीयाँ लटकाएं बिना और पैरों मे रस्सी बांधे बिना। हम उसके सामने आ सकते हैं और स्वर्ग मे उसके सिंहासन के सामने अपनी प्रार्थनाएं उठा सकते हैं। हम हमारे उद्धारकर्ता और महायाजक के साथ चल सकते हैं और बातचित कर सकते हैं, जिसने हमारे लिए मार्ग बनाया कि हम हियाव के साथ उसके अनुग्रह के सिंहासन के पास जा सकें (इब्रानियों ४:१६) और मित्र जैसे उससे संगति कर सकें, अब और सदा के लिए। अब, प्रायश्चित के लिए बैल और बकरीयों का असीमित लहू लाने के बजाएं (इब्रानियों १३:१५) हम मसीह के पास *स्तुति के बलिदान* लेकर आ सकते हैं (इब्रानियो १३:१५)। नई वाचा के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो।

अध्याय चार

अदभुत अनुग्रह

शैतान नए विश्वासीयों अक्सर के ही झुठ के द्वारा हमला करता है और वो है दोषभावना और दण्डआज्ञा।
लेकिन मै आपको कुछ सलाह देना चाहता हूं : जब यीशु आपके लिए क्रुस पर मरा, उसने आपके पापों से आधे छुटकारे लिए दाम नही चुकाया। उसने संसार के कुछ ही पाप के लिए दाम नही चुकाया।

परमेश्वर ने कभी अपने पुत्र यीशु को अनुमति नही दी होती कि वो मनुष्य रुप लेकर आएं, क्रुसीकरण के दर्द और पीड़ा से जाएं, और अपने स्वर्गिय पिता से अलग हो कि केवल अधुरी आज़ादी के लिए दाम चुकाएं। नही हो सकता था! यीशु का लहू हर पाप को ढांकता है, चाहे छोटे हो या बड़े। यीशु का लहू उन सबको ढांकता है। क्रुस पर अपनी मृत्यु के द्वारा, यीशु ने संसार के **सारे** पापों का दाम चुकाया : जिसे आप दस हज़ार जीवन मे भी नही कर सकते थे।

भजन १०३:१-३ के शब्द सुनिए, *हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह, और जो कुछ तुझ मे उसके पवित्र नाम को धन्य कह। हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह और उसके किसी उपकार को न भुलना; तो तेरे सारे अधर्मों को क्षमा करता है।*

वचन का ये भाग कहता है कि वो तेरे **सारे** पापों को क्षमा करता है - दोनों दण्ड और शर्म भी। १० प्रतिशन नही, ५० प्रतिशत नही, ७५ प्रतिशत नही, **सारे!**

खुद को कभी भी दोषभावना या असुरक्षा की भावना मे न जाने दें। ये शैतान की केवल एक युक्ति है कि आपके उद्धारकर्ता की मौत और आपके अंदर उसके जीवन को दफ्ना दे।

जब आप अपने जीवन मे पाप के बारे मे परमेश्वर से कायलता महसुस करते हैं, उसका अंगिकार किजिए, और भरोसा किजिए कि यीशु ने उसका दण्ड और उसकी शर्म को से पूरी तरह से मिटा दिया है। शैतान कभी आपसे ये झुठ कहने न पाएं कि आपके पाप की गंदगी की शक्ति आपके पाप क्षमा और उन्हें शुद्ध और साफ करने के लिए बहाए गएं यीशु के लहू से ज्यादा शक्तिशाली है।

शैतान आपके मन मे नकारात्मक विचार आकर आपका विश्वास तोडने की कोशिश करेगा। वचन मे दृढ़ खड़े रहिए! रोमियो ८:१-२ कहता है, *इसलिए अब जो मसीह यीशु मे हैं उन पर कोई दण्ड आज्ञा नही है, क्योंकि हम शरीर के अनुसार नही लेकिन आत्मा के अनुसार चलते हैं। क्योंकि जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में तुम्हें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया है।*

क्या आप देख सकते हैं कि दोषभावना और दण्डआज्ञा मे फंसना कितना मुर्खता का है? विश्वासी होने के नाते आप पूरी तरह से आज़ाद हो सकते हैं। जब पुत्र आपको आज़ाद करता है तो आप सच मे आज़ाद हैं (यूहन्ना ८:३६)। परमेश्वर ने आपसे की हूई प्रतिज्ञाओं को थामे रहे।

परमेश्वर का अदभुत अनुग्रह

आप अपना जीवन भुतकाल मे और दोषभावना के भार मे नही जी सकते हैं। रीअर व्यु मिरर मे देखकर कार चलाना बहुत मुश्किल होता है! दोषभावना और दण्डआज्ञा शैतान के हथियार है कि आपको बांधे रखे, निराश रखे और बेकार रखें ताकि आप खुद के लिए परमेश्वर के राज्य को बढ़ा न सके।

हम मे से कोई भी परमेश्वर की दया और क्रुस यीशु के बलिदान के योग्य नही है। हमें सिखना होगा कि कैसे परमेश्वर के अनुग्रह पर आधरित रहे और भरोसा रखें। अनुग्रह परमेश्वर की ऐसी कृपा और आशिष है जिसके हम लायक नही हैं। अपने अनुग्रह से ही, परमेश्वर ने हमे ऐसा कुछ दिया है जिसके हम लायक नही थे - वो है दया और क्षमा। हमें उसके लिए भीख़ मांगने की जरुरत नही है। हमे केवल धन्यवाद और आनंद के साथ परमेश्वर का अनुग्रह स्वीकार करना है - परमेश्वर इसी से प्रसन्न होता है।

शुभ संदेश

दिए गएं ५ वचनों को अक्सर रोमियों का मार्ग के रुप मे जाना जाता है, क्योंकि ये सब रोमियों की किताब मे पाएं जाते हैं। ये वचन सच मे यीशु मसीह के सुसमाचार का साफ नक्शा है।

रोमियों ३: २३: *सब ने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित है।*

रोमियों ५:८: *परमेश्वर ने अपना प्रेम हम पर इस तरह प्रकट किया कि जब्कि हम पापी ही थे मसीह हमारे लिए मरा।*

रोमियों ६:२३: *पाप की मज़दुरी तो मृत्यु है, परन्तु हमारे परमेश्वर का वरदान मसीह यीशु मे अनंतजीवन है।*

रोमियों १०:९: *यदि तू अपने मूंह से अंगिकार करे कि यीशु ही प्रभु है, और अपने मन मे विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मुर्दों मे से जीलाया है, तो तू उद्धार पाएगा।*

रोमियों १०:१३: *जो भी परमेश्वर के नाम को पुकारेगा वो उद्धार पाएगा।*

स्वर्ग जाने का एक ही रास्ता है

हम पापी हैं, परन्तु परमेश्वर हम से इतना प्रेम करता है कि उसने हमे अनंतजीवन देने के लिए यीशु को हमारे पापों के लिए मरने दिया और हमें

जीवन का वरदान दिया। हमे केवल अंगिकार करना होगा कि हम पापी हैं और यीशु पर उद्धारर्ता और प्रभु के रुप मे विश्वास करना है।

कोई भी मनुष्य स्वर्ग इसलिए नही जाएगा क्योंकि वो भला व्यक्ति है। **कोई भी भले काम हमारे लिए उद्धार नही कमा सकते हैं।** दस आज्ञाओं का पालन करना और परमेश्वर की व्यवस्था मानना भी हमें स्वर्ग नही ले जा सकता है। चर्च जाना या संडे स्कुल जाना भी हमे स्वर्ग जाने का अधिकार नही देता है। एक परमेश्वर है ये विश्वास करना भी हमें स्वर्ग के महिमामय फाटक से जाने नही देगा। बहुत से लोग जो सोचते हैं कि शायद स्वर्ग है ये उन्हें उस फाटक से जाने देने के लिए काफी होगा। दुःख की बात है, ये उनकी गलती है।

स्वर्ग जाने का एक ही रास्ता है, और वो केवल परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा ही है, केवल यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा ही वो अनंतकाल के लिए उद्धार पा सकते हैं। *उद्धार और किसी के द्वारा नही है, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों को और कोई नाम नही दिया गया है जिससे वो उद्धार पाएं* (प्रेरित ४:१२)

अनुग्रह - पाप करने की अनुमति (लाईसन्स)

जब आप उद्धार पाते हैं, आप परमेश्वर का अदभुत अनुग्रह प्राप्त करते हैं। परन्तु उसने अपना अनुग्रह आपको दिया इसका ये मतलब नही है कि आप उसके अनुग्रह का गलत लाभ उठाएं। यहुदा की किताब भक्तिहिन मनुष्य के बारे मे बताती है जो परमेश्वर के अनुग्रह को अनैतिक जीवन जीने का लाईसन्स समझता है।

इसलिए वो प्रभु यीशु मसीह को अस्वीकार करता है (यहुदा १:४)। हम ये जानकर कि परमेश्वर हमे माफ करेगा, लापरवाही से पाप नही कर सकते हैं। गलतियों ५:१३ हमें याद दिलाता है, *हे भाईयों, तुम स्वतंत्र होने के लिए*

बुलाए गए हो। इस स्वतंत्रता को शारीरिक इच्छा पूरी करने का साधन न बनाओ, परन्तु प्रेम से एक दूसरे की सेवा करो।।

जब परमेश्वर का आत्मा आप मे आता है, तब आपके अंदर एक बदलाव आता है,,, ऐसा बदलाव जिसे शायद आप महसुस करते हैं या महसुस नही कर पाते हैं, परन्तु ये बदलाव आपके आस-पास के लोग महसुस कर पाएगें।

पौलुस लिखता है, *इसलिए यदि कोई मसीह यीशु मे है तो वो नई सृष्टि है, पुरानी बातें बीत गई हैं, देखो, सबकुछ नया हो गया है* (२ कुरिन्थियों ५:१७)।

मत्ती ७:२० मे, यीशु हमारी तुलना फल देनेवाले पेड़ से करता है। जैसे हम एक पेड़ को उसके फल के कारण ही पहचानते हैं और झाड़ीयों से फल पाने की कोशिश नही करते हैं, परमेश्वर कहता है कि हम उसकी संतानों को उनके फलों के द्वारा ही पहचानेंगे। आपकी क्रियाएं आपको दुसरों से अलग करेगी।

कृपया मुझे गलत मत समझिए,,, मै ये नही कह रहा हूं कि हम अपनी क्रियाओं के द्वारा उद्धार कमा सकते है। याद रखिए : आप अपना उद्धार कमाने के लिए कुछ नही कर सकते हैं। आप के उद्धार की किमत यीशु के लहू के द्वारा पूरी चुकाई गई है और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा उस पर मुहर लगाई गई है कि उसे उद्धारकर्ता और प्रभु ग्रहण करे। अफ्रा आप अच्छे काम करने और हर्षित स्वभाव रखने के लिए प्रोत्साहित हुए हैं क्योंकि परमेश्वर ने आप पर दया कर आपका उद्धार किया है आप उसके आभारी हैं। आपके अच्छे फल अच्छे काम के फ्राहरी अनुभव हैं, जो परमेश्वर ने आपमे शुरु किएं हैं।

उसके अनुग्रह मे चलना

मसीह मे हमारा जीवन परमेश्वर के मार्ग जानना सिखने की यात्रा है। यीशु ने कहा, *यदि कोई मेरे पीछे आएं, तो उसे खुद का इनकार कर अपना*

क्रुस उठाकर मेरे पीछे चलना होगा (लूका ९:२३)। आप प्रतिदिन इस संसार कि इच्छाओं को छोड परमेश्वर के अनुग्रह मे चलने के द्वारा मसीह के पीछे चलना सिखते हैं।

ऐसे समय भी होगे जब आप चुक जाएगें और आपको परमेश्वर से क्षमा मांगनी होगी। इस परिस्थिती मे जब आप चुक गएं हैं तब दोषभावना और हिनभावना से दब न जाएं। परमेश्वर जानता है कि हम कई बार पाप करेगें : *यदि हम कहें कि हम कि हम मे पाप नही है, तो हम में सच्चाई नही है और हम झुठे हैं, परन्तु यदि हम अपने पापों का अंगिकार करते हैं, तो वो हमारे पाप क्षमा करने और हमे सारे अधर्मों से शुद्ध करने मे विश्वासयोग्य और धर्मी है* (१ यूहन्ना १:८-९)

हमारे जीवन मे पाप से व्यवहार करने की परमेश्वर की ये क्रिया है :

१, पवित्र आत्मा आपके जीवन मे पाप के बारे मे कायलता लाता है।

२, हम परमेश्वर के सामने अपने पापों का अंगिकार करते हैं।

३, हम पाप से पश्चाताप करते हैं (या उससे फीर जाते हैं)

४, हम उसे भुल जाएं, और वो भी भुल जाता है।

पौलुस फिलिप्पियों ३:१३-१४ मे कहता है : *परन्तु एक बात है जो पीछे रह गया है उसे मै भुल जाता हूं और जो आगे हैं उसकी ओर बढते जाता हूं, मसीह यीशु मे मै परमेश्वर की महान बुलाहट की ओर आगे बढते जाता हूं।*

एक बार अपने पाप परमेश्वर के सामने अंगिकार करने के बाद और उससे क्षमा मांगने के बाद, ये समय होता है कि पवित्र आत्मा की सामर्थ मे नए बनकर आगे प्रगढते जाएं। ये परमेश्वर की भेंट और विश्वासी होने के नाते आपका अधिकार भी है। भजन १०३:१२ कहता है कि परमेश्वर हम से हमारे पाप दूर करता है पुर्व से पश्चिम जितनी दूर है।

जीवन की यात्रा मे आप खुद को कही भी पाएं, हमेशा इसे याद रखिए :

विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और ये तुम्हारे कामों से नही, परन्तु ये परमेश्वर का वरदान है; ये कामों का प्रतिफल नही है कि कोई मनुष्य इस मे घमण्ड करे। क्योंकि हम उसकी हस्तकला है, मसीह यीशु मे भले काम के लिए सृजे गएं हैं, जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ही तैयार कर रखा है ताकि हम उसमे चले। (इफिसियों २:८-१०)

अध्याय पांच

आत्मिक उन्नति

एक बार आपने यीशु के पीछे चलने का निर्णय लिया तो अब आपके पास अदभुत मौका है दुसरों को आपके विश्वास के बारे मे बताएं। पानी का बपतिस्मा आत्मिक उदाहरण है जो परमेश्वर हमें देता है ताकि हम यीशु के साथ का हमारा संबंध लोगों के सामने प्रकट कर सकें।

पानी का बपतिस्मा

विश्वासीयों का पानी का बपतिस्मा लेने के अहुत से कारण है, जिनमे पहला आज्ञाकारिता है। यीशु ने लोगों के बीच अपनी सेवकाई शुरु करने से पहले, उसने परमेश्वर के प्रति अपने पूरे समर्पण की घोषणा यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के हाथों बपतिस्मा लेने के द्वारा प्रकट की। परमेश्वर के पुत्र को बपतिस्मा देने की चिन्ता के उत्तर मे यीशु ने कहा कि ये बपतिस्मा *धार्मिकता पूरी* करना है (मत्ती ३:१५)। जब यीशु ने सच मे यरदन नदी मे डुबकी लगाई, परमेश्वर ने आकाशवाणी करते हुए कहा, *ये मेरा प्रिय पुत्र है, जिस मे मै अति प्रसन्न हुं* (मत्ती ३:१७) पौलुस हम से निवेदन करता है कि हम मसीह का अनुकरण करे (१ कुरिन्थियों

११:१), बपतिस्मा एक तरिका है जिसके द्वारा हम मसीह के समान हो सकते हैं।

यीशु ने अपने चेलों से कहा, *आकाश और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है इसलिए सारे संसार मे जाकर उन्हें मेरा चेला बनाओ, उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा मे बपतिस्मा दो, जो मैने तुम्हें आज्ञाएं दी हैं उन्हें मानना सिखाओ; देखो, जगत के अंत तक मै तुम्हारे संग हूं* (मत्ती २८:१८-२०)।

यीशु ने अपने चेलों को आज्ञा दी है कि उसने जो सिखाया वो जाकर लोगों को सिखाएं, और उसने खासकर विश्वास करनेवालों को बपतिस्मा देने के बारे मे भी कहा। इसलिए बपतिस्मा परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता की एक क्रिया है।

पानी के बपतिस्मे के चिन्ह

बपतिस्मा भीतरी अनुभव का बाहर प्रकट होना है। जब आप पानी का बपतिस्मा लेते हैं, आप अपने आस-पास के सब लोगों के सामने कहते हैं कि आप अब मसीह मे नई सृष्टि हैं, आप प्रभु से प्यार करते हैं और वो ही आपके जीवन का प्रभु है।

कुछ लोग पुछते हैं, पानी मे बपतिस्मा लेने के द्वारा क्या हम अनंत जीवन पाते हैं? इसका उत्तर है, नही। पानी का बपतिस्मा एक चिन्ह है, ये दर्शाता है, भीतरी बदलाव को बाहर प्रकट करना है। और वचन हमें ऐसा ही करने के लिए कहता है।

इस के बारे मे इस तरह से सोचिए। जब लोग विवाह करते हैं तब्र विवाह की अंगुठी बदलते हैं। विवाह की अंगुठी बाहरी रुप मे ये दर्शाती है कि इस व्यक्ति का विवाह हो चुका है। क्या विवाह की अंगुठी पहने से आपका विवाह होता है? नही। जब कि दुसरी ओर, अगर आपने विवाह की अंगुठी नही पहनी हैं तो क्या आप अचानक अविवाहित हो गएं हैं? बिलकुल नही! विवाह की अंगुठी आपके जीवन मे क्या हुआ ये दर्शाने के लिए केवल एक चिन्ह है।

पानी का बपतिस्मा भी ऐसे ही है। जैसे आप पानी मे डूबकी लगाते हैं, ये दर्शाता है कि आप अपना पुराना जीवन छोड रहे है। एक तरिके से जैसे मसीह आप के पापों के लिए क्रुस पर मरा था आप भी मर रहे हैं। फिर जब आप उठते हैं, तो शुद्ध, धोए हुए और साफ, पुनरुत्थित होकर निकलते हैं, मसीह जैसे नए जीवन के लिए। परमेश्वर मे अपना विश्वास रखने के द्वारा आप नएं व्यक्ति हो गएं हैं।

कुलुस्सियों २:१२ कहता है कि *और* ***बपतिस्मा मे उसके (यीशु के) साथ गाड़े गएं*** *और उसी के साथ जीलाएं भी गएं। यह उस विश्वास के के द्वारा हुआ जो परमेश्वर के सामर्थ पर है जिसने मसीह को मरे हुओं मे से जिलाया।* पानी का बपतिस्मा आपके पश्चातापी हृदय और मसिह के प्रेम को ग्रहण करने का सबूत है।

प्रेरितों के काम कि पुस्तक मे प्रेरित पतरस बड़ी भीड़ को प्रचार कर रहा था। जब लोग उसके वचन के द्वारा प्रेरित हुएं और उससे पुछने लगे कि हम कैसे प्रतिउत्तर दे पतरस से उत्तर दिया, *मन फिराव और यीशु मसीह के नाम से तुम मे से प्रत्येक बपतिस्मा ले कि तुम्हारे पापों की क्षमा हो और तुम पवित्र आत्म का वरदान पाओ।* वचन ४१ मे हम पढते हैं कि जिन्होंने उद्धार का संदेश सुना उन्होंने बपतिस्मा लिया, और लगभग ३००० लोग उस दिन प्रारंभिक चर्च मे जोडे गएं! (प्रेरित २:३८-४१)

अगर आप प्रेरितों के काम की पुस्तक मे आगे बढेगें, तो आप जानेगें कि जैसे लोगों ने मसीह यीशु का संदेश ग्रहण किया, उन्होंने अपना विश्वास बाहरी रुप मे प्रकट करने के लिए पानी का बपतिस्मा लिया।

इसलिए पानी का बपतिस्मा महत्वपुर्ण है क्योंकि यीशु चाहता है कि हम उसके लिए अपना प्रेम लोगों के सामने दर्शाएं। पानी का बपतिस्मा पश्चाताप किए दिल का चिन्ह है और मसीह यीशु मे आपके विश्वास का चिन्ह है।

त्रिएकता

मै यहां आपको त्रिएकता के प्रारे मे बहुत ही संक्षिप्त मे बता रहा हूं। क्योंकि मै महसुस करता हूं कि जैसे हम पवित्र आत्मा के बारे मे अधिक चर्चा करेगें, ये आपके लिए मददगार होगा। साथ ही, जैसे आप अपने विश्वास मे अधिक स्थापित होते हैं, तो आपको त्रिएकता के प्रारे मे कुछ बुनियादी सच्चाई जानना प्रहुत जरुरी है पिता परमेश्वर, पुत्र परमेश्वर और पवित्र आत्मा परमेश्वर।

त्रिएकता की विचारधारा एक भेद है। और हां, ये समझना और तीन अलग व्यक्तित्व की एकता के बारे मे बताना मुश्किल है। एक परमेश्वर ने अलग व्यक्तित्व। त्रिएकता मे, हमारे पास है पिता परमेश्वर, जो स्वर्ग मे ऊंचे पर विराजमान है; पुत्र यीशु मसीह, जो हमे उद्धार देता है, और पवित्र आत्मा, जो हमारे साथ वास करने के लिए आता है।

पवित्र आत्मा

जब लोग त्रिएकता के बारे मे कहते हैं तो पिता परमेश्वर और पुत्र परमेश्वर पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है। लेकिन पवित्र आत्मा त्रिएकता का व्यवहारिक भाग है, हमे उसे अनदेखा नही करना चाहिए।

बाइबल कहती है कि पवित्र आत्मा हमारा शिक्षक है, जो *सारी सच्चाई मे हमारी अगुवाई करता है* (यूहन्ना १६:१३)। वो हमारा सलाहकार और शिक्षक है (यूहन्ना १४:२६)। परमेश्वर की आत्मा को आपके जीवन के लिए बयाने के रुप मे भी बताया गया है। २ कुरिन्थियों ५:५ घोषित करता है, *अब जिसने हमें इसी अभिप्राय से तैयार किया है, उसने हमें बयाने में आत्मा दिया है। जो आनेवाली बातें हमें बताता है।*

पवित्र आत्मा को समझने के लिए, प्रेरितों के काम की पुस्तक का अध्यन करना सबसे उत्तम होगा। इस पूरी किताब मे आप विश्वासीयों के जीवन मे

उस के काम देखेंगे। जब पवित्र आत्मा के बारे मे बताया गया है, कई बार वो चेलों को निर्देश या जानकारी दे रहा है। कुछ उदाहरण प्रेरित १:२ और १०:९-२२ मे पाएं जाते हैं।

पवित्र आत्मा चर्च को भी बल और हिम्मत देता है। उदाहरण के लिए, प्रेरित ९:३१ मे हम पढते हैं, *अतः सारे यहूदिया, गलील और सामरिया की कलीसिया को शान्ति मिली और उनकी उन्नति होती गई, और वह प्रभु के भय में चलती तथा पवित्र आत्मा के प्रोत्साहन मे बढ़ती गई।* ये वचन बहुत ही महत्वपुर्ण है क्योंकि ये दिखाता है कि कैसे पवित्र आत्मा प्रेरित २ अपने उंडेले जाने के फ्राद लोगों की सहायता की।

सच मे, जब तक यीशु पिता के पास स्वर्ग मे नही गया तब पवित्र आत्मा लोगों मे कभी वास नही करता था (प्रेरित १)। देखिए, पुराने नियम मे, पवित्र आत्मा लोगों पर केवल कुछ समय के लिए और खास उद्देश के लिए ही आता था। इसके उदाहरण न्यायियों की किताब मे पाएं जाते हैं, जहां चार अलग मौकों पर वचन कहता है कि परमेश्वर का आत्मा उस पर (शिमशोन पर) सामर्थी रुप मे उतरा (न्यायियों १४:६, १९; १५:१४)। ये तब हुआ जब पवित्र आत्मा ने शिमशोन के द्वारा फ्राल और सामर्थ का काम पूरा किया था। पूरे पुराने नियम मे यही तरिका चलता रहा।

पवित्र आत्मा का वरदान

जब यीशु पृथ्वी छोड स्वर्ग मे गया ये सबकुछ बदल गया। यीशु अपने चेलों से कहता है कि जाकर पिता की प्रतिज्ञा की राह देखें : *उसने उन्हें यरुशलेम न छोडने की आज्ञा दी, लेकिन पिता की प्रतिज्ञा के पूर्ण होने की राह देखें, जिसे तुमने मुझ से सुना है* (प्रेरित १:४)। यीशु किस प्रतिज्ञा के बारे मे कहा था? वो वचन ५ मे उत्तर देता है *: यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया, परन्तु अब से थोडे दिनों के पश्चात तुम पवित्र आत्मा से फ्रापतिस्मा पाओगे।* उसके पिता का वरदान तो धन्य पवित्र आत्मा है!

सबसे अदभुत खबर है कि अफ्रा पवित्र आत्मा केवल कुछ खास समय या उद्देश के लिए नही आता है। वो सब विश्वासीयों को कही भी हर जगह भरने के लिए आता है।

प्रेरित १:८ मे, यीशु ने कहा कि पवित्र आत्मा पाने के फ्राद ये दो चिज़ें होगी :

१, *वो तुम्हें सामर्थ देगा*

२, *वो मेरा गवाह होगा*

गवाह शब्द का अर्थ है सबूत देना या साक्षी देना। पवित्र आत्मा की सामर्थ लोगों को ये सबुत देने के योग्य बनाएगी कि यीशु ने जो होने का दावा किया है वो वही है। और सच मे यही हुआ।

सामर्थ पाना

इन चेलों ने वही किया जो यीशु ने कहा था; वो यरुशलेम गएं और उपरी कोठरी मे राह देखते रहे। जैसे वो राह देख रहे थे, वो परमेश्वर की स्तुति करने लगे और प्रतिज्ञा पूरी हुई। चेले पवित्र आत्मा से भर गएं! पवित्र आत्मा ने उन्हें परमेश्वर की महानता के बारे मे प्रचार करने और गवाही देने का साहस दिया, जब उन्होंने ऐसा किया चमत्कार होने लगे।

पौलुस ने भी लोगों से कहा कि मेरा संदेश और मेरा प्रचार ज्ञान के लुभावनेवाले शब्दों के द्वारा नही था, परन्तु *आत्मा और सामर्थ के प्रमाण मे था।* इस तरह से, लोगों का विश्वास मनुष्य की बुद्धि पर नही लेकिन परमेश्वर की सामर्थ पर होगा (१ कुरिन्थियों २:४-५)।

पवित्र आत्मा ने प्रारंभिक चर्च को सामर्थ और योग्यता दी की बिना किसी बाइबल के या आज हमारे पास जो आधुनिक तकनिक है, जैसे प्रिन्टींग प्रेस, रेडीयो, टेलीविजन या इंटरनेट के बिना ही पूरे संसार मे प्रचार करे। इतिहास बताता है कि यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद २०० साल मे ही पूरे संसार मे प्रचार हो गया।

प्रारंभिक चर्च जहां भी गया, उन्होंने सुसमाचार बताया; ये उनके पवित्र आत्मा के द्वारा भरे जाने के परिणाम स्वरुप उन से बाहर बहता गया।

मुझ से भी महान काम

प्रेरित पतरस की छाया से ही बीमार लोगों को चंगा करती थी (प्रेरित ५:१५)। ये स्वयं पतरस के कारण नही हुआ था, लेकिन इसलिए हुआ क्योंकि परमेश्वर पवित्र आत्मा से भरा था।

यीशु ने अपने अनुयायीयों से कहा कि मुझ पर विश्वास करता है, वे कार्य जो मै इस पृथ्वी पर रहते हुए करता हूं वो उससे भी *महान काम* करेगा (यूहन्ना १४:१२)। कैसे? क्योंकि वो स्वर्ग मे अपने पिता के पास जानेवाला था और सान्तवना देनेवाला पवित्र आत्मा भेजनेवाला था।

वही पवित्र आत्मा जिसने यरदन नदी मे यीशु के बपतिस्मे के समय उसे भरा, सामर्थ दी और तैयार किया वही अब हमारे देश को भरेगा। हमे शक्ति देकर सेवकाई के काम के लिए तैयार करेगा (प्रेरित १:४-५,८; यूहन्ना १४:१२)। यीशु ने बीमारों को चंगाई दी, उसने अंधों की आंखें खोली, लंगड़े चलने लगे, जीवन पुनःगठित हुए, और यहां तक कि मुर्दे भी फिर से जीवित हो गएं। इन सब चमत्कारों के फ्रााद, यीशु ने कहा कि हम इससे भी महान काम करेगें। हम ये सफ्रा केवल पवित्र आत्मा की सामर्थ पाकर ही कर सकते हैं, और वो चाहता है कि हम उसकी सामर्थ तक पहूंचे। उसने अपनी सामर्थ और अधिकार हमे दिया है/

प्रेरित ३ मे, पतरस ने लंगड़े व्यक्ति से कहा था, *सोना और चान्दि तो मेरे पास नही है, लेकिन मेरे पास जो है वो मै तुझे देता हूं: यीशु मसीह नासरी के नाम मे उठ और चल फिर।* पतरस के पास क्या था? सामर्थ! उसे वो कहां से मिली थी? पवित्र आत्मा से।

कम से कम दो बार यीशु ने कहा, *जैसे पिता ने मुझे भेजा है, मै तुम्हें*

भेजता हूं (यूहन्ना १७:१८, यूहन्ना २०:२१)। पिता ने यीशु को कैसे भेजा था? सामर्थ और अधिकार के साथ। यीशु ने मत्ती २८:१८ मे कहता है, *आकाश और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।*

सारा अधिकार

जबकि यीशु को उसके पिता ने सारा अधिकार देकर भेजा था, और उसने हमें वैसे भेजा जैसे उसके पिताने उसे भेजा था, तो हमे वही सामर्थ दी गई है जो मसीह को दी गई थी! १ यूहन्ना ४:१७ कहता है, *जैसे वो है, वैसे ही हम भी इस संसार मे हैं।* वाव!

क्या परमेश्वर चाहता था कि केवल पहली शताब्दि का चर्च ही सामर्थ मे चले? नही, निश्चय ही नही! आज जैसे बहुत से थियॉलॉजियन सिखाते हैं उसके विपरित भी ये वरदान, चेलों के और प्रारंभिक चर्च के अनुभव हज़ारों साल पहले नही मरे। यीशु आज, कल और युगानयुग एकसा है (इब्रानियों १३:८)। यीशु इस पृथ्वी पर रहते हुए जिस सामर्थ मे चलता था, परमेश्वर चाहता है कि हम भी उसी सामर्थ मे चले।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा

आप शायद सोचते होगें कि यीशु ने पृथ्वी पर रहते हुए जो चमत्कार किएं थे, वही चमत्कार हम के सामान्य विश्वासी के नाते कैसे कर सकते हैं। यीशु कैसे कह सकता है कि हम उससे भी महान काम करेगे? उत्तर पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व मे पाया जाता है।

हमने पानी के बपतिस्मे के बारे मे कहा है, लेकिन दूसरा बपतिस्मा भी है, जो मै अभी आपको बताना चाहता हूं : पवित्र आत्मा का बपतिस्मा।

प्रेरित २:३८-३९ मे प्रेरित पतरस कहता है, *मन फिराओ, और यीशु मसीह के नाम मे तुम मे से प्रत्येक बपतिस्मा ले कि तुम्हारे पापों कि क्षमा हो; और तुम पवित्र आत्मा का वरदान पाओगे। क्योंकि वह प्रतिज्ञा तुम्हारे और*

तुम्हारी संतान के लिए और उन सबके लिए है जो दूर-दूर हैं, अर्थात वे सब जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।

ध्यान दिजिए पतरस ने यहां तीन पॉईन्ट दिएं हैं :

१, मन फिराओ। मन फिरने का मतलब है, अपनी स्वार्थी इच्छा और पापमय तरिकों से मुड़ जाएं और परमेश्वर और उस के तरिकों की ओर मूड़े।

२, बपतिस्मा ले। पतरस यहां पानी के बपतिस्मे के बारे मे कह रहा था।

३, पवित्र आत्मा का वरदान पाएं।

आज कुछ चर्च और संप्रदाय सिखाते हैं कि जब्र हम नया जन्म पाते हैं, हम यीशु को ग्रहण करते हैं और यीशु को ग्रहण करने के द्वारा हम पवित्र आत्मा पाते हैं।

दूसरे चर्च और संप्रदाय दिखाते हैं कि पवित्र आत्मा से भरना और सामर्थ पाना केवल चेलों या मसीह के दिनों के विश्वासीयों को या प्रारंभिक चर्च को ही दी गई थी।

आज भी बहुत से लोग विश्वास करते हैं कि *उद्धार और पवित्र आत्मा से भरना* दो अलग अनुभव हैं। और, ये वरदान पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा आज भी सारे विश्वासीयों के लिए उपलब्ध है।

चर्च की अलग परंपरा होने के बावजुद भी, अर्थ लगाने के नियम हैं और नियम मे सौहलियत भी दी गई है। यीशु ने मत्ती १८:१६ मे कहा, *दो तीन गवाहों के मुंह से प्रत्येक तथ्य की पुष्टि हो जाए।* यहां तक कि बहुत सी न्यायिक प्रणाली मे, किसी भी अपराधी को दोषी करार देने के पहले, कम से कम दो आखों देखें गवाहों की जरुरत पड़ती है। नही तो फिर, ये तो बस किसी भी व्यक्ति के विरोध मे ब्रास एक ही व्यक्ति के शब्द होते हैं। अच्छी खबर है कि वचन मे पवित्र आत्मा के बारे मे ब्राहुत से गवाह हैं।

नया नियम कई जगह पर विश्वासीयों का पवित्र आत्मा प्राप्त करने के अनुभव के बारे मे कई तरिके से बताया है। कई बार, उसे *वरदान* के रुप मे बताया है (प्रेरित २:३८)। दूसरी जगह वचन कहता है *उंडेला गया* (प्रेरित १०:४५)। कई बार वचन बताता है *भर जाना* (प्रेरित २:४)। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा भी एक संदर्भ है (मरकुस १:८; प्रेरित १:५)। जैसे आप इन वचनों का अध्यन करते हैं, आप पाएगें कि अलग रुप मे उपयोग किएं गएं शब्द का अर्थ एक ही होता है।

मै विश्वास करता हूं कि बाइबल स्पष्ट रुप मे सिखाती है कि उद्धार और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दो अलग और अदभुत अनुभव हैं।

उसके लिए ये एक संदर्भ है : जब यरुशलेम मे प्रेरितों ने सुना कि सामरिया के लोगों ने परमेश्वर का वचन ग्रहण किया है, उन्होंने पतरस और यूहन्ना को वहां के विश्वासीयों के पास भेजा!

क्यों? पतरस और यूहन्ना वहां एक उद्देश के साथ भेजे गएं! यरुशलेम मे प्रेरितों ने सुना की सामरीया ने परमेश्वर का वचन ग्रहण किया है। तो फिर पतरस और यूहन्ना को क्यों भेजा? क्योंकि उन्होंने ये भी सुना था कि सामरिया के विश्वासीयो ने पवित्र आत्मा प्राप्त नही किया है।

प्रेरित ८:१४-१७ कहता है, *पतरस और यूहन्ना ने वहां पहूंचकर उनके लिए प्रार्थना की कि वो पवित्र आत्मा पाएं। क्योंकि अभ्भ तक वो उन मे से किसी पर नही उतरा था, उन्होंने केवल प्रभु यीशु के नाम मे बपतिस्मा लिया था। तब पतरस और यूहन्ना ने उन पर हाथ रखें और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया।*

याने हम यहां पाते हैं कि जिन लोगों ने विश्वास किया, उन्हें विश्वासी कहा गया। उन्होंने पानी मे बपतिस्मा लिया था। परन्तु किसी कारण से, यरुशलेम के प्रेरितों को लगा कि इन नए जन्में विश्वासीयों मे किसी महत्वपुर्ण प्भात की कमी है। उन्होंने पतरस और यूहन्ना को उन पर हाथ रखने के लिए भेजा ताकि वो पवित्र आत्मा पाएं।

ये एक और वचन है जो बताता है कि उद्धार और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दोनों अलग-अलग अनुभव है : प्रेरित १९ मे, पौलुस कुरिन्थियों के नगर मे आता है, जहां बहुत से लोग यीशु के अनुयायी बन जाते हैं। यीशु के अनुयायी होने का क्या अर्थ है? अवश्य ही, वो लोग जिन्होंने पश्चाताप किया है। जिन्होंने अपने जीवन मे यीशु को न्योता दिया है या उसे स्वीकार किया है। उन्होने विश्वास किया है कि ये जीवित परमेश्वर का पुनरुत्थित पुत्र है, और उन्होंने पानी का बपतिस्मा लिया है।

पौलुस ने उन से पुछा, *विश्वास करने के बाद क्या तुम ने पवित्र आत्मा प्राप्त किया है?* यदि यीशु पर प्रभु के रुप मे विश्वास करना और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाना एक ही अनुभव होता तो वो उन से ये प्रश्न क्यों पुछता था?

उन्होंने पौलुस से कहा, *नही, हमने कभी सुना भी नही था कि पवित्र आत्मा है* (वचन २)। स्पष्ट है कि वि विश्वासी थे। स्पष्ट है कि उन्हें चेले कहा गया था (वचन १)। फिर पौलुस ने *उन पर हाथ रखा* जब उसने ऐसा किया, *तब पवित्र आत्मा उन पर आया, और वो अन्यभाषा बोलने लगे और भविष्यवाणी करने लगे* (वचन ६)।

इन दोनों उदाहरणों मे, हम एक तरिका देखते हैं, जिसके बारे मे पतरस प्रेरित २:३८ मे बताता है; विश्वास करे, बपतिस्मा ले और पवित्र आत्मा प्राप्त करे। फिर भी, हम जल्दी से इस तरिके से कोई नियम न प्रनाएं।

प्रेरित ९ मे हम शाऊल के बदलाव के प्रारे मे पढ़ते हैं। शाऊल एक कट्टर यहुदी था, वो चर्च और विश्वासियों को सताता था। दमिश्क के मार्ग मे, यीशु उसके सामने प्रकट होकर कहता है, *तू मुझे क्यों सताता है?* इस अनुभव मे, शाऊल शारीरिक रुप मे अंधापन और आत्मिक रुप मे बदलाव पाया। कुछ दिनों बाद हन्नयाह नाम का एक व्यक्ति आकर शाऊल पर हाथ

रखकर प्रार्थना करता है कि वो दृष्टि पाएं और पवित्र आत्मा से भर जाएं। शाऊल तुरंत देखने लगता है, पवित्र आत्मा से भर जाता है, और फिर बपतिस्मा लेता है। शाऊल का नाम पौलुस रखा जाता है और वो सारे प्रेरितों मे सबसे महान होता है, उसने नए नियम का लगभग दो-तिहाई भाग लिखा है।

हम वचन से प्रहुत से उदाहरण देख सकते हैं, जहां क्रम शायद बदल सकता है : १) पश्चाताप २) पानी का बपतिस्मा और ३) पवित्र आत्मा प्राप्त करना।

क्या पश्चाताप करने के पहले बपतिस्मा लेना संभव है? हां, परत्नु वो केवल किसी के नहाने से बढ़कर नही होगा। क्यों? क्योंकि पश्चाताप की क्रिया और यीशु को अपने जीवन का प्रभु प्रानने के लिए न्योता देना तो पानी का बपतिस्मा लेना और आत्मा से भरने के लिए जरुरी होता है।

परन्तु स्पष्ट रुप मे हमने देखा है कि ये संभव है कि पश्चाताप करे और पानी का बपतिस्मा लेने के पहले ही पवित्र आत्मा से भर जाएं, ये बिलकुल वैसे ही है जैसे हमने देखा है कि ये संभव है कि पश्चाताप कर पानी का बपतिस्मा ले और फिर पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाएं।

यीशु का उदाहरण

जब यीशु यहां पृथ्वी पर था, चेलों ने उस मे पुत्र परमेश्वर का शारीरिक रुप देखा था। यीशु मसीह परमेश्वर का जीवित पुत्र इस पृथ्वी पर देहधारी हुआ था।

बाइबल कहती है, *वचन देहधारी हुआ, और उसने हमारे बीच डेरा किया, और हमने उसकी महिमा देखी, ऐसी महिमा जैसे पिता के एकलौते की महिमा हो, जो अनुग्रह और सच्चाई से परिपुर्ण था* (यूहन्ना १:१४)।

फिर से फिलिप्पियों २:६ कहता है, *जिसने परमेश्वर के स्वरुप मे होते हुए भी परमेश्वर के समान होने को अपने वश मे रखने की वस्तु न समझा,*

परन्तु उसने अपने आप को ऐसा शुन्य कर दिया कि दास का स्वरुप धारण कर मनुष्यों की समानता मे हो गया।

परमेश्वर अपने पुत्र मे होकर, स्वर्ग से निकलकर, पृथ्वी पर आया, उसने मांस और लहु का रुप धारण किया, पापरहित जीवन जीया, और क्रुस पर चढ़ाया गया, गाढ़ा गया और तीसरे दिन जी उठा। बाद मे, वो पृथ्वी पर कई दिनों तक चलता रहा और सैकड़ो लोगों के सामने अपने जी उठने का सबूत देता रहा। उसके बाद जल्दि ही वो स्वर्ग मे उठाया गया, जहां अब वो परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है।

जब यीशु मसीह इस पृथ्वी पर आया, वो एक बालक के रुप मे आया। वो एक ही दिन पुरे परिपक्व व्यक्ति के रुप मे प्रकट होकर खुद परमेश्वर का पुत्र होने का दावा नही किया। पवित्र आत्मा ने यीशु को कुंवारी मरियम के गर्भ मे डाला था। लूका १:३५ मे हम पढ़ते है, *पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, और सर्वोच्च की सामर्थ तुम पर छाया करेगी; इस कारण जो पवित्र तुम से जन्म लेगा उसे परमेश्वर का पुत्र कहा जाएगा।* नौ महिने बाद, किसी भी बच्चे के जन्म मे लगनेवाले समय जैसे ही, यीशु का जन्म हुआ।

हमारे नए जन्म का अनुभव भी इसी तरह से है। वही पवित्र आत्मा, जिसने यीशु के बीज के द्वारा यीशु को उ के गर्भ मे डाला था, वो अब मसीह का आत्मिक बीज लेकर हम मे डालता है। मसीह आपमे जन्मा है। नही, से होने के लिए नौ महिना का समय नही लगा। ये उसी पल होता है जब आप उसे अपने जीवन मे न्योता देते हैं और आप उससे पापों की क्षमा मांगते हैं और परमेश्वर की संतान बनाने के लिए कहते हैं।

प्रेरित पौलुस इसे सुसमाचार का भेद कहता है : *मसीह तुम मे महिमा की आशा है* (कुलुस्सियों १:२७)। जब पवित्र आत्मा हमारे अंदर मसीह का बीज बोता है, हम नया जन्म पाते हैं। इसका मतलब है कि मसीह हम मे जन्मा है। यीशु जब निकुदमुस से बात कर रहा था, वो इसी बारे मे कह रहा

था, उसने कहा, *तुम्हें नया जन्म लेना होगा* (यूहन्ना ३:१३)। हमारे उद्धार के अनुभव मे, पवित्र आत्मा ही आकर हमारे अंदर मसीह का बीज रखता है। बाद मे यीशु की सेवकाई मे वो कहता है, *यदि तुम ने मुझे देखा है तो पिता को देखा है।* यीशु पुराने समय जैसे ही कह रहा था, *जैसे पिता वैसा पुत्र है। यीशु ने ये भी कहा था कि जो पिता ने कहा है वो केवल वह कहता है* (यूहन्ना ८:२८)

यीशु जब पृथ्वी पर था, वो पूरा परमेश्वर था, लेकिन वो पुत्र परमेश्वर का व्यक्तित्व था। कुलुस्सियों २:९ कहता है, *क्योंकि उसी मे परमेश्वरत्व की समस्त परिपूर्णत सदेह वास करती है।* इसका मतलब है पिता की परिपुर्णता, पुत्र की परिपुर्णता और पवित्र आत्मा की परिपुर्णता यीशु मे थी।

हालाकि यीशु कह सकता था, यदि तुम ने मुझे देखा तो तुम ने पिता को देखा है। वो पृथ्वी पर रहते हुए पिता परमेश्वर नही था, और ना ही पवित्र आत्मा परमेश्वर था। फिर भी, पवित्र आत्मा परमेश्वर पृथ्वी पर आया और उसने मसीह का जीवन भरा और उसे सामर्थ दी।

सेवकाई के लिए सामर्थ

जब यीशु ने यूहन्न बपतिस्मा देनेवाले के द्वारा यरदन मे बपतिस्मा लिया, आकाश खुल गया और पवित्र आत्मा शारीरिक रुप मे कबूतर की नाई उस पर उतर आया, और परमेश्वर ने आकाशवाणी की, *ये मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मै अति प्रसन्न हुं* (यूहन्ना ३:२२)। त्रिएकता का तीसरा व्यक्तित्व, धन्य पवित्र आत्मा, यीशु मे वास करने और उसके जीवन मे उसे सामर्थ देने के लिए आया था।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने यूहन्ना १:३३-३४ मे कहा, मैने उसे(यीशु को) नही पहचाना, परन्तु वो (पिता) जिसने मुझे पानी का बपतिस्मा देने के लिए भेजा उसने कहा, *जिस पर तू आत्मा उतरते और ठहरते देखें (वास करते,*

निरंतर रहते, निवास करते) देखता है, पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देनेवाला(डूबोनेवाला, नीचे डूबोनेवाला) वही है और मैने देखा और साक्षी भी दी है कि यही परमेश्वर का पुत्र है। पवित्र आत्मा से भर जाने के इस अनुभव के बाद ही यीशु ने अपनी सेवकाई शुरु की थी (मत्ती ३:११-१७; ४:१७)

शायद आप पुछ रहे हैं, डेविड, क्या आप मुझ से ये कहना चाहते हैं कि यीशु को परमेश्वर के काम करने के लिए पवित्र आत्मा से भरना जरूरी था? हां, मै यही कह रहा हूं!

हां, यीशु परमेश्वर का पुत्र था, लेकिन पवित्र आत्मा ने यीशु के जीवन मे और उसकी सेवकाई मे सामर्थ दी थी।

यीशु जानता था कि एक दिन वो क्रुस पर चढ़ाया जाएगा। एक दिन वो जीवित हो उठेगा। एक दिन वो अपने पिता के पास स्वर्ग जाएगा। और, एक दिन वो हमे, चर्च को आज्ञा देगा, कि सारे जगत मे जाकर हरएक व्यक्ति को सुसमाचार प्रचार करे।

यीशु के पास जो सामर्थ थी उसके बिना हमें ऐसा करना कैसे संभव है? इसलिए यीशु ने कहा, जैसे मेरे पिता ने मुझे भेजा है वैसे ही मै भी तुम्हें भेजता हूं। इसलिए यीशु ने अपने चेलों से कहा कि वो अपने पिता के पास स्वर्ग मे जा रहा है, परन्तु उन्हें यरुशलेम मे ही राह देखना होगा जब तक कि वो उसी सामर्थ से भर न जाएं जिससे वो स्वयं भरा था/

यीशु को स्वयं अपने स्वर्गिय पिता के काम करने के लिए पवित्र आत्मा से भरना पड़ा। चेलों को परमेश्वर के काम करने के लिए पवित्र आत्मा की सामर्थ से भरने की जरुरत थी। और हमे भी परमेश्वर का काम करने के लिए पवित्र आत्मा से भरने की जरुरत है।

वही पवित्र आत्मा जिसने यीशु को उसकी सेवकाई शुरु करने से पहले बपतिस्मा लेते समय भरा था, उसी ने उपरी कोठरी मे चेलों को भी भर

दिया। उसी समय उनकी सेवकाई शुरु हुई। यीशु ने अपने चेलों से प्रेरित १:८ मे कहा, *जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तुम सामर्थ पाओगे, और तुम यरुशलेम, यहुदिया, सामरिया मे और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगें।*

खुश खबर ये है कि वही पवित्र आत्मा आज चर्च को भरने के लिए आता है। पवित्र आत्मा परमेश्वर का वरदान है। वो सब विश्वसीयों के लिए है, और मै सोचता हूं कि परमेश्वर चाहता है कि उसका पूरा चर्च पवित्र आत्मा की सामर्थ से भर जाएं।

यीशु स्वर्ग मे पिता की दाहिनी ओर बैठा है और उसकी आज्ञा माननेवालों पर अपनी आत्मा उंडेलने की राह देख रहा है।

परमेश्वर ने कमज़ोर चर्च को जन्म नही दिया। परमेश्वर चाहता है कि उसका चर्च उसकी आत्मा और सामर्थ से भर जाएं। बाइबल कहती है कि परमेश्वर हमें अपनी आत्मा बिना किसी नांप से देता है (यूहन्ना ३:३४)। परमेश्वर चाहता है कि उसकी सामर्थ आप के जीवन मे काम करे। ये आपके लिए उसका वरदान है, और उसका गवाह होना आपकी मंज़िल है।

मै विश्वास करता हूं कि वचन हमे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के लिए सिखाता और उत्साहित करता है। जो हमें मसीह के लिए विजयी जीवन जीने और परमेश्वर का काम करने की सामर्थ देता है।

यूहन्ना प्रापतिस्मा देनेवाले ने कहा,मै तुम्हें पानी से मन फिराव के लिए बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे पश्चात आ रहा है, वह मुझ से इतना सामर्थी है कि मै उसकी जूती भी उठाने के योग्य नही हूं, वह स्वयं तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा (मत्ती ३:११-१७)।

जब हम हमारे अंदर वास करनेवाल पवित्र आत्मा की उपस्थिती प्राप्त करते हैं, यीशु ही हमे पवित्र आत्मा मे बपतिस्मा देता है। याद किजिए यूहन्ना १:३३ मे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले मे शब्द? वही तुम्हें पवित्र आत्मा मे बपतिस्मा देगा।

परमेश्वर कुछ खास स्वभावगुण

परमेश्वर का पुत्र यीशु, पवित्र आत्मा से जन्मा था। बाद मे, जब वो यूहन्ना से बपतिस्मा लेता है, वो पवित्र आत्मा से भर जाता है।

वचन कहता है, *उसमे ईश्वरत्व की परिपुणता सदेह वास करती थी* (कुलुस्सियों २:९)। यीशु ने कहा, *यदि तुम ने मुझे देखा, तो तुम ने पिता को देखा है, क्योंकि मै पिता मे हूं और पिता मुझे मे है* (यूहन्ना १०:३०। यीशु ने स्पष्ट रुप मे पिता का दिल और उसका चरित्र दिखाया। उसके व्यवहार और शब्दों ने पिता को दर्शाया और उसका काम पूरी तरह से परमेश्वर का काम था। सच मे, यीशु का एक नाम इम्मानुएल है, जिसका अर्थ है परमेश्वर हमारे साथ है।

जबकि यीशु ने कहा था कि उसने वही कहा और किया जो परमेश्वर चाहता था, फिर भी उसका अपना व्यक्तित्व था। यह विश्वास के महान भेदों मे से एक था। यीशु दोनों था वो परमेश्वर का पुत्र था और साथ ही वो पुत्र परमेश्वर भी था।

जब हम यीशु को अपने दिल मे आने के लिए न्योता देते हैं और नया जन्म पाते हैं, मसीह का व्यक्तित्व, स्वभाव और चरित्र हम मे जन्म लेता है। वो पवित्र आत्मा के द्वारा रखें जाते हैं, बिलकुल वैसे ही जैसे पवित्र आत्मा ने कूंवारी मरियम की कोख मे मसीह का बीज रखा था।

पुराने नियम मे, पवित्र आत्मा प्रकट हुआ था, परन्तु वो लोगों पर केवल कुछ खास काम और उद्देश के लिए ही आता था। उन दिनों मे, परमेश्वर का आत्मा मनुष्यों मे वास नही करता था। जैसे परमेश्वर का आत्मा मनुष्यों पर आता था, उसने दाऊद और शिमशोन जैसे मनुष्यों को युद्ध मे अस्वाभाविक सामर्थ दी और यशायाह, यहजकले और दानिएल जैसे भविष्यवक्ताओं को आत्मिक प्रकाशन दिया। सच मे, बाइबल की सारी किताबों के लेखक

जिसमे पुराने नियम के लेखक भी हैं, उन्होंने पवित्र वचन पवित्र आत्मा की प्रेरणा से ही लिखे हैं।

फिर भी, आईए यीशु के विषय देखें, पवित्र आत्मा हमारे साथ वास करने, रहने और निरंतर बने रहने के लिए आता है। यीशु के स्वर्ग वापस जाने के बाद पवित्र आत्मा की हमेशा की सेवकाई शुरु हुई। यीशु ने प्रेरित १:५ मे अपने चेलों से कहा था, *क्योंकि यूहन्ना पानी से बपतिस्मा देता है, परन्तु तुम अब से कुछ ही दिनों मे पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।*

वो आगे प्रेरित १:८ मे कहता है कि पवित्र आत्मा सच मे उसके चेलों पर आएगा और उन मे वास करेगा। विश्वासी होने के नाते, अब आपका शरीर *पवित्र आत्मा का मंदिर* है (१ कुरिन्थियों ३:१६)।

पवित्र आत्मा हम मे वास करता है वो हमारा मार्गदर्शक और सलाहकार है। वो हमे सारी सच्चाई मे ले जाता है। वो हमारे लिए वचन का अर्थ बताता है, और हमे सामर्थ देता है, बिलकुल वैसे ही जैसे उसने यीशु को पृथ्वी की सेवकाई के लिए सामर्थ दी थी। मसीही जीवन के लिए यीशु हमारा आदर्श है। वो पवित्र आत्मा से भरा, सामर्थ पाया और तैयार किया गया था, हमे भी वैसे ही होना चाहिए।

परमेश्वर की सच्चाई

आज, चर्च मे बहुत से लोग विश्वास मे दुर्बल और कमज़ोर हैं। उन्होंने शायद पश्चाताप किया होगा। उन्होंने शायद पानी का बपतिस्मा भी लिया होगा। परन्तु, परमेश्वर की बहुमुल्य प्रतिज्ञा को तुच्छ जाना, वो पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व और सामर्थ से नही भरे हैं।

मै आपको गड़बड़ी मे नही लाना चाहता हूं। इन अलग-अलग परिस्थिती के बारे मे आपको बताने का मेरा उद्देश आपको जानकारी देना है। आपके मसीही जीवन मे आप ऐसे लोगों से मिलेगें जो इन मे से किसी एक दृष्टिकोण को पकड़े रहते हैं।

पवित्र आत्मा के विषय पर कई किताबें लिखी गई हैं। मै नही चाहता कि इस किताब मे आपको पवित्र आत्मा के बारे मे अलग-अलग चर्च के विभिन्न सिद्धान्तिक विश्वास प्रताने की कोशिश करूं।

मै कोई थियॉलॉजियन नही हूं। मै बाइबल का केवल एक विद्यार्थी हूं। इस पूरी किताब मे, मै आपको बता रहा हूं कि बाइबल क्या कहती है, चर्च क्या कहता है ये नही और ना ही कि विख्यात डीनॉमिनेशन क्या कहता है।

विभिन्न विवरण से परेशान न हो जाएं; आपको बस इतना ही जानना होगा कि वचन का अर्थ बताने के लिए लोगों के अपने अलग दृष्टिकोण हैं। मुझे याद है एक बार एक प्रचारक जानते थे कि उनके डीनॉमिनेशन के सब लोग उन्ही की तरह विश्वास नही करते थे। उन्होंने आगे ये भी कहा कि वो जानते थे कि उस चर्च के पहले के सभी पास्टर वचन का वही अर्थ नही बताते थे। अंत मे उन्होंने कहा, यहां तक कि मेरी पत्नी और मै भी वचन के हर भाग पर सहमत नही हैं

जैसे आप ये किताब पढ रहे हैं, मै चाहता हूं कि आप प्रार्थना कर प्रभु से मांगे कि वो आपसे बातें करें और आपके दिल पर उसकी सच्चाई प्रकट करे। मै आपसे जो कह रहा हूं वो उतना महत्वपुर्ण नही है जितना वचन आपसे क्या कहता है वो महत्वपुर्ण है।

प्रतिज्ञा थामे रहे

हम उन दिनों मे रह रहे हैं जो मनुष्य के इतिहास मे अंतिम दिन हो सकते हैं। हम शायद वो पीढ़ी हो जो मसीह के दुसरे आगमन मे सहायक हो। यदि ये सत्य है, तो अब, सबसे अधिक, हमे प्रेरितों के काम की शिक्षा की ओर ध्यान देना होगा, हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक की शिक्षा की ओर ध्यान देना होगा। चर्च को बुद्धि का उपयोग कर पहले चेलों से सलाह लेनी

चाहिए। हमें हिम्मत के साथ खड़े होना चाहिए और जो विजय पहले से ही हमारी है उस मे चलना चाहिए।

हमें आगे बढकर पिता की प्रतिज्ञा थामनी होगा : धन्य पवित्र आत्मा हमें तैयार करने और परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए सामर्थ देने आया है। परमेश्वर ने कहा कि अंत के दिनों मे वो अपनी आत्मा सारे लोगों पर उंडेलेगा (प्रेरित २:१७-१८)। आज परमेश्वर उन लोगों को खोज रहा है जो उसके लिए भुखें हैं। वो उन्हें खोज रहा है जो हिम्मत के साथ उसकी आज्ञा मानेगें।

पृथ्वी पहले कभी न प्रकट हुई प्रभू की सामर्थ देखने के लिए तैयार हो जाएं। परमेश्वर सारी पृथ्वी पर मंडरा रहा है और इस समय अपने चेलों पर अपनी आत्मा उंडेल रहा है। मै जानता हूं कि आप और मै ऐसे ही नही टलनेवाले हैं। ये समय है कि उस सामर्थ मे चले जो परमेश्वर ने अपने चर्च के लिए निश्चित की है : १०० प्रतिशत विजय, शत्रु की १०० प्रतिशत सामर्थ पर, हर समय १०० प्रतिशत।

मत्ती २८ के अनुसार, हमे आज्ञा दी गई है कि सारे देशों के लोगों को चेला बनाए, उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम मे बपतिस्मा दे। यही हमारी आज्ञा है; यही हमारा काम है। ये समय है कि चर्च प्रतिज्ञा थाम ले। और, अब जबकि आप एक विश्वासी हैं, इस मे आप भी शामिल हैं। चाहे आप नएं विश्वासी ही क्यों न हो, आप मसीह के याजक होने की सेवकाई के भाग हैं। पतरस लिखता है, *तूम एक चुना हुआ वंश, राजकिय याजकों का समाज, एक पवित्र प्रजा और परमेश्वर की निज संपत्ति हो, जिस से तुम उसके महान गुणों को प्रकट करो जिसने तुम्हें अधिकार से अपनी ज्योति मे बुलाया है* (१ पतरस २:९)। आपको शायद ये सहमत करनेवाला न हो लेकिन हर विश्वासी परमेश्वर के लिए पवित्र याजक है, जिसने परमेश्वर के

द्वारा दिया गया अधिकार पाया कि पवित्र आत्मा की सामर्थ से प्रभु को संसार मे प्रकट करे।

पवित्र आत्मा से भर जाएं

कृपया किताब के इस भाग को जल्दि से पार मत किजिए। आज हम जिस संसार मे जी रहे हैं, इसमे हमें हमारे जीवन मे परमेश्वर की सामर्थ के व्यवहारिक काम की जरुरत है। चर्च के पास योग्यता है कि यीशु और प्रारंभिक चेलों ने जो चमत्कार किए थे वही करे। तो फिर हम क्यों नही?

शायद खुद पर दया करने की बात आपके संसार पर बनी है। आज बहुत से विश्वासी सोचते हैं कि वो कुछ नही हैं, वो अपने संसार मे फर्क नही ला सकते हैं। ये शायद इसलिए है क्योंकि उन्होंने उद्धार पाया है लेकिन वो पवित्र आत्मा से न भरे, न तैयार हुए और ना ही सामर्थ पाएं हैं।

चर्च, मसीह की देह के लिए ये समय है कि खड़े हो जाएं और आत्मिक स्थान ले ताकि अपने परिवार, समाज, स्कुल, दफ्तर, शहर और संसार के देशों तक जीवित परमेश्वर के अनुग्रह और सामर्थ के साथ पहूंचे। पवित्र आत्मा के द्वारा योग्यता प्राप्त करने के द्वारा, आप फर्क ला सकते हैं। समय अब है। यदि आप पवित्र आत्मा के द्वारा नही भरे हैं, तो मै आपको न्योता देता हूं कि आप यीशु को अनुमति दे कि वो आपको पवित्र आत्मा और सामर्थ से भरने दे। मेरे साथ अभी ये प्रार्थना किजिए :

प्रिय स्वर्गिय पिता, तूने बाइबल मे प्रतिज्ञा की थी कि तू अपने चेलों को पवित्र आत्मा का वरदान देगा। प्रभु, मै अपने जीवन मे तुझ से अधिक चाहता हूं, मुझे तेरी और सामर्थ चाहिए, इसलिए मुझे अभी भरने के लिए अपनी पवित्र आत्मा भेज। यीशु, मेरा दिल शुद्ध कर और मुझे अपने बहुमुल्य पवित्र आत्मा से भर दे। इस अदभुत वरदान के लिए धन्यवाद। मुझे तेरी सेवा करने की जिज्ञासा दे और तू इस पृथ्वी पर जो करता था वही करने दे। दुसरों को

तेरे महान प्रेम के बारे मे बताने के लिए कृपया मुझे पवित्र आत्मा की सामर्थ से भर दे। पवित्र आत्मा, मेरे जीवन मे तेरा स्वागत है। मै अपना दिल तेरे लिए खोलता हूं। यीशु के नाम मे प्रार्थना करता हूं, आमिन।

अब परमेश्वर का पवित्र आत्मा अपने दिल मे प्राप्त किजिए और उसकी सामर्थ की परिपुर्णता मे जीए।

विभाग - दो

यीशु
मे
बने रहे

अध्याय ६

परमेश्वर का वचन पढिए

आपकी एक शारीरिक देह है जिसे आप प्रतिदिन भोजन देते हैं। इसी तरह से, आपकी एक आत्मा है, जिसे प्रतिदिन पोषक आत्मिक भोजन देना जरुरी है।

इस तरह से सोचिए कि आप खाएं बिना कितने दिन तक काम कर सकते हैं? एक दिन? कोई बात नही। लेकिन दिन के अंत मे आपको कैसे महसुस होगा?

एक हफ्ते के बारे मे क्या? ये ज्यादा चुनौति से भरा है, परन्तु शायद आप ये भी कर ले। और फिर से, आपको हफ्ते के अंत मे क्या लगेगा? थकान? अवश्य ही, कमज़ोर लगेगी? ३० दिन ४० दिन तक भोजन करने के बारे मे क्या,,, आपका शरीर पूरी तरह से सबकुछ देकर पूरी तरह से मरने के लिए कितना समय लगेगा?

परमेश्वर ने हमें जीवित और तंदुरुस्त बनाएं रखने के लिए खुद को बनाएं रखने का सिद्धान्त बनाया है : हमें जीवित रहने के लिए भोजन करना होगा। यदि आप न चाहे तो इस सिद्धान्त मे विश्वास नही कर सकते हैं; बस इसका उल्लंघन किजिए और देखिए क्या होता है। ३० दिनों बाद,,, ४० दिनों बाद,,, शायद ५० दिनों बाद,,, आप मर जाएगें।

यही सिद्धान्त आत्मिक रुप मे भी सही है। हमारा आत्मिक पोषण क्या है? परमेश्वर का वचन। जितना ज्यादा हम अपने जीवन मे इस के बिना

आगे बढेगें हम आत्मा मे उतने ही कमज़ोर होगे। आपकी आत्मा मे मसीह के जीवन को भोजन मिलना चाहिए ताकि वो बढ़े और तंदुरुस्त हो जाएं। बाइबल पढ़ना आपकी आत्मा के लिए पोषण है। आराधना और आत्मिक गीत के द्वारा उसकी स्तुति करना मानो जीवन के जल की नदी से पानी पीना है (प्रकाशितवाक्य २२:१)।

मसीह के साथ मज़बुत और अर्थपुर्ण संबंध प्राप्त करने के लिए उससे बातें करते हुए समय बिताना बहुत ही जरुरी है। जैसे आप वचन पढते हैं, जल्दि ही आप पाएगें कि हालाकि ये ये हज़ारों साल पहले लिखा गया है लेकिन फिर भी ये वचन आपके जीवन मे अभी भी व्यवहारिक हैं। इन किताबों मे आप उन लोगों की कहानीयाँ पढेगें जो आप जैसे ही थे, पढने के लिए नए अध्याय होगे, आपकी आत्मा के लिए ताज़गी होगी, और जरुरत के समय सान्तवना मिलेगी।

प्रतिदिन का डीवोशन

यीशु ने प्रार्थना की, *रोज की रोटी हमे दें* (मत्ती ६:११)। ये जरुरी है कि आप प्रतिदिन परमेश्वर का वचन पढ़ने और आत्मिक भोजन खाने के लिए समय निकाल सकें। विश्वासी हमेशा इस समय को डीवोशन कहते हैं।

डीवोशन सामान्य रुप मे परमेश्वर के साथ बातचित करने के लिए दिन का समय अलग करना है, ताकि हम उसकी आराधना करे और सिखें कि पवित्र आत्मा हमें क्या सिखाना चाहता है। परमेश्वर अपने वचन के द्वारा आप से बातें करेगा, आप पाएगें कि ये आपको आपके दिन के लिए बल देता है।

ये शान्त समय सुबह या शाम के वक्त हो सकता है। समय महत्वपुर्ण नही है; लेकिन आप उत्तम समय बिताएं ये जरुरी है।

आप दुसरे विश्वासीयों से ज्यादा समय वचन पढते हैं इसलिए आप उन

से ज्यादा पवित्र नही हैं। उसके साथ आपका शान्त समय घड़ी के बजाएं परमेश्वर के प्रेम से प्रेरणा पाना चाहिए।

परमेश्वर के साथ समय बिताना

जब आप किसी से प्यार करते हैं, और वो आपके लिए विशेष होते हैं, तो ये स्वाभाविक है कि आप उस व्यक्ति के साथ समय बिताना चाहते हैं। प्रभु के साथ समय बिताने मे भी ऐसा ही है। उसके साथ आपका समय अच्छा अनुशासन है, लेकिन ये धार्मिक विधी नही होनी चाहिए। यदि आप एक दिन परमेश्वर का वचन पढ़ना चुक गएं तो दोषी महसुस मत किजिए। बहुत से विश्वासी डीवोशन की दिनचर्या के साथ बंधे हैं, जो कि शान्त समय बिताना है, लेकिन वो प्रभु के साथ उत्तम समय नही बिता रहे हैं। परमेश्वर ये नही चाहता है।

परमेश्वर जानता है कि आपका जीवन व्यस्थ है कि आप काम खत्म करे और बील चुका सके। वो चाहता है कि आप अपने दिन के एक भाग के रुप मे उसके साथ समय बिताने के लिए कुछ समय अलग रखें और पूरे दिन भर उसकी जीवित उपस्थिती बनाएं रखना सिखें। पौलुस कहता है कि हमे निरंतर प्रार्थना करनी चाहिए (१ थिस्सलुनीकियो ५:१७)। एक तरिके से, इसका मतलब है कि चाहे हम कुछ भी कर रहे हो, हमारा ध्यान सबसे पहले परमेश्वर पर ही रहना चाहिए। यीशु ने कहा, *मुझ मे बने रहो और मै तुम मे बना रहुंगा* (यूहन्ना १५:४)। यीशु हमें हमेशा अपने विचार और क्रियाओं मे उसके साथ जुडे रहने के लिए प्रोत्साहित करता है, ताकि हम उसके लिए अपनी सेवा पूरी कर सके।

परमेश्वर ने अपना एकलौता पुत्र बलिदान दिया ताकि उसके साथ स्वर्ग मे अनंतकाल तक रहे। वो आपसे बहुत प्यार करता है और आपके साथ समय बिताना चाहता है। वो आपके साथ संबंध रखने के योग्य है। जैसे आप

उसके साथ समय बिताते हैं, उससे संगती करते है और उसका वचन पढ़ते हैं ये संबंध बढ़ता जाता है।

मेरे मन मे कोई नही है कि आपका डीवोशन आपके लिए विशेष समय होगा, ऐसा समय जब आप परमेश्वर की उपस्थिती अपनी बगल मे महसुस करेगें, ऐसा समय जिस के लिए आप प्रतिदिन राह देखेंगे, और मन की ऐसी दशा होगी जो आपको पूरा दिन संभाले रहेगी। परमेश्वर के साथ संबंध बढाने के लिए एक व्यवहारिक तरिका है उसके वचन मे समय बिताना।

परमेश्वर की वाणी सुनना

याद रखिए कि मसीहियत जीवित परमेश्वर के साथ संबंध है। आप किसी से प्राप्त किए बिना उन से संबंध नही रख सकते हैं। परमेश्वर से संपर्क करने के लिए बहुत से तरिके हैं। और हां, परमेश्वर आप से बातें करेगा। आपको आकाश से बड़ी ज्योति या बादल से गहरी आवाज़ सुनने की आशा नही करनी चाहिए। परमेश्वर अपनी संतान से बहुत से तरिकों से बातें करता है।

परमेश्वर का बात करने का एक तरिका है, उसके वचनों के द्वारा। आपका डीवोशन का समय इतना महत्वपुर्ण क्यों है इसका एक और कारण है; वो मौका है प्रभु आपसे बातें करे। यदि आप अपना दिल खोलकर वो जो कहता है उसे स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, तो वो आप पर सच्चाई, प्रकाशन प्रकट करेगा और आपके जीवन मे व्यवहारिक सहायता करेगा।

परमेश्वर एक और तरिके से बात करता है वो है *शान्त धीमी आवाज़*(१ राजा १९:१२)। सामान्य रुप मे उसकी आवाज़ सुनी नही जाती है, हालाकी कभी सुनी भी जा सकती है। लेकिन भी, आप अपने मन मे शान्ति महसुस करते हैं, भरोसा होता है और आप जानते हैं कि परमेश्वर आप से बातें कर रहा है।

हमारे दिल मे शान्ति देने के द्वारा ही वो अधिकतर हम से बातें करता है और जीवन मे मार्गदर्शन करता है। फिलिप्पियों ४:७ कहता है, *परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु मे सुरक्षित रखेगी।* विश्वासी होने के नाते *मसीह की शान्ति तुम्हारे हृदय की रक्षा करे* (कुलुस्सियों ३:१५)।

परमेश्वर चाहे आप से किसी भी तरह बात करे, उसकी वाणी हमेशा पवित्र आत्मा और पवित्र वचन के अनुसार ही होती है।

मेरी भेंड़ मेरी आवाज़ पहचानती है

बाइबल मे यीशु को चरवाहे के रुप मे भी बताया गया है, जो अपनी भेंड़ को पुकारता है। आप शायद भजन २३ का परिचित वचन जानते हैं : प्रभु मेरा चरवाह है

यूहन्ना कि पुस्तक मे, यीशु ने कहा, *परन्तु जो द्वार से प्रवेश करता है, वह भेड़ों का चरवाहा है। द्वारपाल उसके लिए द्वार खोलता है और भेड़ उसकी आवाज़ पहचानती है, वह अपनी भेड़ों का नाम ले लेकर पुकारता है और उन्हें बाहर ले जाता है। जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल लेता है तो उनके आगे आगे चलता है, और भेड़ उसके पिछे हो लेती हैं, क्योंकि वे उसकी आवाज़ पहचानती है। और वे किसी दूसरे के पीछे कभी नही जएगी, परन्तु उससे भागेगी, क्योंकि वे दुसरों की आवाज़ नही पहचानती* (यूहन्ना १०:२-५)।

आप प्रभु के साथ जितना ज्यादा समय बिताएगें, उसकी आवाज़ से आप उतने ही परिचित होते हैं। जैसे आप फोन पर अपने मित्र की आवाज़ पहचानते है, वैसे ही जब आप प्रभु के साथ पहचान करने मे समय बिताते हैं, तो जब वो आपसे बात करेगा तब उसे पहचानना आसान होगा। आप अपने चरवाहे की आवाज़ पहचान पाएगें, और आप उसके पीछे चलेंगे; आप अनजान के पीछे नही चलेगें।

यदि आपके दिल मे कभी परमेश्वर की वाणी सुनने के बारे मे कोई शक या गडबड़ी हो, प्रभु से प्रार्थना मे ये कहीए। शैतान पसंद करेगा कि आप ये सोचे कि परमेश्वर आप से बातें नही कर रहा है और आप जो आवाज़ सुन रहे हैं वो केवल आपकी कल्पना है। शैतान के झुठ को अपने उपर जयवन्त न होने दे।

यदि आप गडबडी मे हैं, प्रभु से सहायता मांगिए। १ कुरिन्थियों १४:३३ कहता है,*क्योंकि परमेश्वर गडबडी का परमेश्वर नही परन्तु शान्ति का है।* यदि आप उससे कुछ पुछे तो वो आपको शान्ति देगा और उत्तर की शाश्वति देगा। आप जो भी सुनते हैं उसे हमेशा बाइबल के साथ जांच सकते हैं : परमेश्वर हमेशा अपने लिखीत वचन से सहमत होकर ही काम करेगा और वो कभी अपने ही वचनों के विरोध मे काम नही करता है।

आप परमेश्वर के साथ डायरेक्ट लाईन मे जुड़े हैं

परमेश्वर दूसरे लोगों द्वारा भी आप से बात कर सकता है। कुछ भी हो, आपको हमेशा याद रखना होगा कि *वचन की कोई भी भविष्यवाणी व्यक्तिगत विचारधारा का विषय नही है* (२ पतरस १:२०)। दूसरे शब्दों मे, जब परमेश्वर किसी व्यक्ति को अपनी इच्छा प्रकट करने के लिए उपयोग करता है, तप्रा बाइबल से भविष्यवाणी का एक सच्चा वचन मेल खाना चाहिए ताकि प्रभु ने आपसे जो भी कहा है उसकी पुष्टि करे। ये जान लेना महत्वपुर्ण है कि आप के जीवन मे आप जो सलाह ले रहे हैं वो ऐसे लोगों से आएं जो मसीह पर विश्वास करते हैं और परमेश्वर की आत्मा के द्वारा चलते हैं।

नए विश्वासी होने के नाते, ये दुःख की बात है लेकिन आपको ये जानना होगा कि कुछ विश्वासी लोगों पर नियंत्रण करना चाहते हैं ये दर्शाते हुए कि जैसे मानो दूसरों के लिए वो ही परमेश्वर की वाणी है। केवल आपके अंदर

की परमेश्वर की आत्मा ही आपको बता पाएगी कि क्या वो व्यक्ति सच मे परमेश्वर की दिल की बात कह रहा है या नही। दूसरे लोग आपको उक्साना चाहेगें, उनसे सावधान रहिए। और याद रखिए, लोग सच मे बहुत गलत हो सकते हैं। परमेश्वर की सलाह परमेश्वर के वचन से और उसकि शान्ति के साथ ही आती है

दूसरे जो कह रहे है उसके बारे मे परमेश्वर ने आप की आत्मा से प्रातें नही की है, तो शायद आप ये अनुमान लगा सकते हैं कि ये संदेश परमेश्वर से नही है। हमे सिखनेवाला दिल चाहिए और आत्मा से चलनेवाले लोगों को हमारे जीवन मे प्रभु की सच्चाई कहने देना चाहिए। परत्नु हमें अपने जीवन के बारे मे दूसरों ने पाई प्रेरणा और मार्गदर्शन स्वीकार नही करना चाहिए। यदि आप अपनी आत्मा मे महसुस नही करते हैं कि किसी के शब्द परमेश्वर के वचन से मेल नही खाते हैं तो इजेक्ट बटन दप्राईए और उसे बाहर कर दिजिए।

परमेश्वर ने आप से सीधा संपर्क रखा है। जप्रा कि वो दूसरे विश्वासी का उपयोग करेगा ताकि आप के जीवन मे किसी प्रात को साबित करे और प्रेरणा और सूधी का स्रोत हो जाएं, परमेश्वर हमारे जीवन का मार्गदर्शन करने के लिए लोगों का उपयोग नही करता है, वो स्वयं हमारा मार्गदर्शन करता है। वही इसे करता है उसके वचन के द्वारा, हमारे दिल मे उस धीमी आवाज़ के द्वारा और कई प्रार दूसरे व्यक्ति के द्वारा साबित करता है।

बाइबल कहती है, *प्रियों, प्रत्येक आत्मा की प्रतिति न करो, परन्तु आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं या नही; क्योंकि संसार मे अनेक झूठे नबी निकल पड़े हैं* (१ यूहन्ना ४:१)। पहली नज़र मे शायद आप कहे कि पवित्र आत्मा और दुष्ट आत्मा का फर्क जानना आसान है। लेकिन सावधान हो जाईए। बाइबल हमे चेतावनी देती है, *शैतान भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रुप धारण करता है। इसलिए यदि उसके सेवक भी*

धार्मिकता के सेवक होने का रुप धारण करते हैं तो इसमे कोई आश्चर्य नही (२ कुरिन्थियों ११:१४-१५)।

आप परमेश्वर को जितना उत्तम जानोगे, उतनी जल्दी ही आप ढोंगी को जान पाएगें। शैतान धोका देनेवाला और झुठ का पिता है; आप को आत्मिक रुप मे दृढ होना है और हमेशा प्रार्थना कर आत्मा को परखिए और निश्चित किजिए कि वो सच मे परमेश्वर की ओर से है। आप के प्रतिदिन के डीवोशनल समय मे प्रभु के करिब रहने के लिए ये एक कारण है। उसके साथ बात करते हुए समय बिताने के द्वारा, उसकी सुनने, उसकी आराधना करने और उसके वचन पढने के द्वारा, आप उसकी आवाज़ पहचानना शुरु करेगे। इस तरह से, चाहे आपके सामने धोका किसी भी रुप मे आएं आप सरक्षित रहेगें।

अध्याय सात

आराधना और प्रार्थना

इस अध्याय मे, मै चाहता हूं कि डीवोशन के समय प्रभु की उपस्थिती मे आकर उसकी आराधना करने और उससे बात करने आने के बारे मे आपको थोडा बताऊं। आराधना और प्रार्थना भी विश्वासीयों के लिए महत्वपुर्ण है : केवल उसकी उपस्थिती मे हम बदल सकते हैं, और परमेश्वर की उपस्थिती मे बहुत सी चिज़ें संभव हो सकती है।

परमेश्वर के साथ समय बिताने के द्वारा, आप बदल जाएंगें, बदलवा आएगा,,, उसके पुत्र यीशु मसीह के स्वरुप मे। आपके लिए परमेश्वर का यही लक्ष्य है कि हरदिन आपको यीशु की समानता मे अधिक और अधिक बदलते जाएं। आराधना और प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप अपना डर, परेशानी, चोट और समस्याएं प्रभु को समर्पित करे।

आराधना और प्रार्थना तो आपका ये मानना है कि वही आपकी सारी परेशानी का उत्तर है और आप खुद अपनी शक्ति मे अपनी समस्याओं का सामना नही कर सकते हैं।

यदि आप सच मे प्रभु को जानना चाहते हैं; यदि आप चाहते हैं कि वो आपका जीवन बदल दे उसे परिवर्तित करे दे; यदि आप उसके साथ करीबी संबंध के लिए भुखे हैं; यदि आप पहचानते है कि आपको खुद के और दुसरों

के जीवन मे परिपुर्णता और चंगाई लाने के लिए आपको जानना होगा कि आपको उसकी सामर्थ और बल की जरुरत होगी,,, इसलिए आईए परमेश्वर की उपस्थिती मे आएं, उसकी आराधना करे और उससे प्रातें करे।

आराधना क्या है?

परमेश्वर ने हर मनुष्य मे आराधना की भूख रखी है। जैसे हम अपनी भूख को समर्पण और सराहना के द्वारा उस एक मात्र परमेश्वर की ओर लगाते हैं परमेश्वर उस भूख को तृप्त करना चाहता हैं।

आराधना बहुत सी परंपरा और रिवाज के द्वारा अगणित तरिके से प्रकट की जाती है। लेकिन फिर भी, परमेश्वर का आदर करनेवाली, मसीह पर केन्द्रित, आत्मा की अगुवाई मे की गई आराधना मे हमेशा आभार, श्रद्धा और समपर्ण होता है। सरल शब्दों मे कहे तो, आराधना दो शब्दों का विवाह करना (जुड जाना) है योग्य और होना जब हम गंभिरता से उसकी आराधना करते हैं, हम सच मे परमेश्वर के सामने हमारे जीवन मे उसकी योग्यता या मुल्य प्रकट कर रहे हैं।

आराधना क्यों ?

परमेश्वर नही चाहता है कि आप उसकी आराधना इसलिए करे क्योंकि उसे आपकी आराधना की जरुरत है। वो चाहता है कि आप उसकी आराधना इसलिए करे क्योंकि आपको खुद उस तरह का करिबी संबंध चाहिए, और इसलिए क्योंकि वो आपके समर्पण के लिए पूरा योग्य है।

जब आप प्रभु की आराधना करते हैं, आप ये मानते हैं कि महान है जो आपसे बढकर है। आप मानते हैं कि एक जीवित परमेश्वर है और वो आपके जीवन पर प्रभु है। इस के कारण आप हर परिस्थिती का सामना करने के लिए उससे बल और विजय पाएगें।

आराधना इस संसार की परेशानी उठाकर उसे दूर कर देगी और

आपको आत्मिक क्षेत्र मे ले जाएगी। वहां परमेश्वर अपनी उपस्थिती आप पर उंडेलेगा और साफ्रित करेगा कि **वही सारी चिज़ों पर मालिक है**।

एक पुराना गीत कहता है, ओ कितनी महान संगति, ओ कितना महान आनंद, कि अनंतकाल की बाहों मे बने रहे सच्ची आराधना हमे उस स्थान मे लेकर आती है जहां हम अपनी चिन्ताएं देकर जीवित परमेश्वर की अदभुत मित्रता का आनंद लेते हैं।

मै परमेश्वर की आराधना कैसे करुं?

परमेश्वर की आराधना और स्तुति करना खासकर संगित के साथ जुड़ा होता है। फिर भी परमेश्वर के सामने सच्ची आराधना प्रकट करने के बहुत से मार्ग हैं।

बाइबल कहती है, *हे पृथ्वी के सारे लोगों, यहोवा का जयजयकार करो, आनंद से जयजयकार करो और भजन गाओ। वीणा बजाकर हां मधूर स्वरों से वीणा बजाकर परमेश्वर की स्तुति करो, तुरही और नरसिंगे के स्वर मे राजा परमेश्वर के सम्मुख आनंद से जयजयकार करो* (भजन ९८:४-६)। वाद्यों से संगित फ्राजाना, गाना और आनंद से चिल्लाना परमेश्वर की स्तुति करने के प्रगटिकरण हैं। यदि आप संगितकार हैं, तो अपने वाद्यों द्वारा प्रभु की आराधना किजिए। उसने आपको योग्यता और श्रमता दी है और जब आप बजाते हैं तो आप उसे महिमा देते हैं और आराधना कर रहे हैं। जैसे आप इसे करते हैं वैसे आप आशिष पाएगें और परमेश्वर धन्य होगा।

सबसे उत्तम वाद्य है जो मै अपने हाथ से बजा सकता हूं। हे देश-देश के सब लोगो, तालियाँ बजाओ। आनंद के स्वर मे परमेश्वर का जयजयकार करो (भजन ४७:१)। ताली बजाना स्तुति का एक रुप है।

आप आराधना के चिन्ह के रुप मे स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठा प्रभु की आराधना कर सकते हैं। *पवित्र स्थान मे अपने हाथ उठाकर प्रभु की स्तुति*

करो (भजन १४७:२)। दाऊद ने भजन ६३:४ मे कहा, *इसी प्रकार मै जीवन भर तुझे धन्य कहता रहूंगा, तेरा नाम लेकर अपने हाथ उठाऊंगा।* बाइबल ऐसे वचनों से भरी है जो कहते हैं कि गीत गाना आराधना का एक रुप है। ये एक वचन ही हमे चार प्रकार गीत गाने के लिए कहता है : *भजन गाओ, परमेश्वर का भजन गाओ, भजन गाओ, हमारे राजा का भजन गाओ* (भजन ४७:६)। आपको प्रभु के लिए गीत गाने के लिए उत्तम गायक होने की जरुरत नही है। परमेश्वर आपके दिल का गीत सुनता है, आप के गले की आवाज़ नही।

आनंद से चिल्लाना भी आराधना है। बाइबल मे ३० से भी ज्यादा संदर्भ हैं जहां परमेश्वर के लोग चिल्लाएं थे। भजन ५:११ कहता है, *परन्तु सब जो तुझ पर भरोसा रखते हैं आनंदित हो जाएं, और वे सदैव आनंद के गीत गाते रहें, क्योंकि तू उनकी रक्षा कर कि वे जो तेरे नाम से प्रिती रखते हैं तुझ मे प्रफुल्लित हो।*

भजन ३२:११ कहता है, हे धर्मियों, यहोवा में आनंदित और मगन रहो। और हे सब सीधे मन वालो, आनंद से जयजयकार करो। भजन ४७:१ कहता है, *हे देश देश के सब लोगो, तालियाँ बजाओ, आनंद के स्वर मे परमेश्वर का जयजयकार करो।*

शायद परमेश्वर के लिए चिल्लाना कुछ अजिब लगे, इसे इस तरह से सोचिए : यदि कोई खेल चल रहा है और आपकी टीम जीत रही है, तो आप क्या करेगें? आप चिल्लाएगें। यदि आप को जो टीम पसंद है, और वो अच्छा खेलकर जीत जाती है तो क्या आप उत्साहित नही होगे? क्या आप खुद को विजय के कारण चिल्लाते हुए नही देखते हैं? पूरा स्टेडियम चिल्लाने और तालियों के शोर से भर जाएगा। खैर, परमेश्वर ने आपके लिए महान युद्ध किया और उसे जीता। तो ये समझने लायक है कि विश्वासी बड़े उत्साह, आनंद और विजय से परमेश्वर के लिए क्यों न चिल्लाएं।

कुछ लोग परमेश्वर की आराधना करते हुए नाचते हैं। बाइबल कहती है

कि प्रभु का आत्मा राजा दाऊद पर आया और, *दाऊद अपनी पूरी शक्ति से प्रभु के सामने नाचा* (२ शमुएल ६:१४)।

देना आराधना का एक रुप है

परमेश्वर की आराधना करने का खास तरिका है अपनी संपत्ति के द्वारा उसे भेंट देना। इन भेंटों को हमेशा दसवा अंश के रुप मे बताया जाता है, जिसका सरल अर्थ है कि परमेश्वर ने आपको जो भी दिया उसका दस प्रतिशत परमेश्वर को देना।

बाइबल मलाकी ३:८-१२ मे कहती है : *क्या मनुष्य परमेश्वर को लूट सकता है? फिर भी तुम मुझ लूटते हो। परन्तु तुम पुछते हो, हमने किस प्रकार मे तुझे लूटा है? दशवांश और भेंटों मे। तुम पर भारी शाप पड़ा है, क्योंकि तुम मुझे लूटते हो, वरन सारी जाति ऐसा करती है। सेनाओं के यहोवा का यह वचन है, सारे दशवांश भंडार मे ले आओ कि मेरे भवन मे भोजन वस्तु रहे, और ऐसा करके मुझे परखो कि मै तुम्हारे लिए आकाश के झरोखे खोलकर तुम्हारे उपर अपरंपार आशिष की वर्षा करता हूं कि नही। तब मै तुम्हारे लिए नाश करनेवाले को ऐसा घुडकूंगा कि वह तुम्हारी भूमि की उपज को नाश नही करेगा, न तुम्हारी दाखलता के फल कच्चे गिरेगे। सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। तब सारी जाति तुम्हें धन्य कहेगी क्योंकि तुम्हारा देश मनोहर देश होगा सेनाओं का यहोवा यही कहता है।*

वचन के इस भाग मे बढनेवाला एक क्रम है, जो देने के बारे मे परमेश्वर की आज्ञा से शुरु होता है, उसके बाद परमेश्वर से प्रतिज्ञा आती है और फिर जो परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं उन के लिए आशिष है। ये स्पष्ट है कि परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग दसवांश दे और यदि वो नही देते हैं तो ये परमेश्वर को **लूटना** है।

मुख्य बात हमारे हृदय की मनोदशा है। दसवांश के द्वारा परमेश्वर हम

से कहता है,::क्या तुम मुझ पर भरोसा रखते हो? जब आपके पास परमेश्वर का दृष्टिकोण होता है, तो आप पाएगें कि आपके पास जो भी है सब परमेश्वर का है। दसवांश तो केवल परमेश्वर ने आपको जो दिया है उसका एक भाग परमेश्वर को वापस देना है। ऐसा करने के द्वारा, आप उसके प्रयोजन के लिए उसका धन्यवाद प्रकट और आपके जीवन के हर क्षेत्र मे उस के प्रयोजन के लिए उसे समर्पण करते हैं। यदि आप इस प्रात से चिन्तित है कि आप अपनी कमाई का दसवा भाग प्रभु को देने के लिए आपके पास काफी पैसा नही है, तो ये विश्वास मे प्रढ़ने के लिए आपका मौका है। याद रखिए, परमेश्वर केवल आपके धन के योग्य ही नही है, परन्तु उसे ये न देना लूटना है।

मलाकी के अदभुत और सामर्थी प्रतिज्ञाओं को न भुले। जब आप परमेश्वर के पास दसवा अंश लाने के द्वारा उसका आदर करते हैं, वो उस भरोसे को आशिष देगा जो आप उस पर रखते हैं। परमेश्वर विश्वासयोग्य है और वो आपकी आज्ञाकारिता के लिए आपको प्रतिफल देगा।

भंडार क्या है?

मलाकी मे, हमे निर्देश दिया गया है कि हम भंडार मे दसवा अंश लेकर आएं। भंडार का अर्थ क्या होता है इस पर बहुत विवाद होता है। मै विश्वास करता हूं कि सच मे, भंडार ऐसी जगह है जहां जरुरतमंद लोगों के लिए **प्रयोजन** रखा गया है। जप्र कोई अपना दसवा अंश भंडार मे लाने के द्वारा प्रभु का आदर करता है, परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है कि वो उसकी फसल को आशिष देगा। आपकी फसल शायद आपका परिवार या व्यापार या नौकरी हो। याद रखिए, परमेश्वर विश्वासयोग्य है और वो आपकी आज्ञाकारीता के लिए आपको आशिष देगा।

उसी तरह से देखा जाएं तो, मै विश्वास करता हूं कि आपका आत्मिक

भंडार शायद चर्च हो या कोई सेवकाई हो जो आपके जीवन मे उत्तम आत्मिक पोषण देती है।

प्रेरित पौलुस इसे कुरिन्थियों के चर्च के लिए इस तरह से कहता है : *जबकि हम ने आत्मिक बातें बोई तो क्या यह बड़ी बात है कि हम भैतिक वस्तुओं की फसल तुम से प्राप्त करें?* (१ कुरिन्थियों ९:११)। कुरिन्थियों के विश्वासीयों के पास बहुत भैतिक वस्तुएं थी, परन्तु वो आत्मिक निवेश का सही मुल्यांकन नही कर रहे थे जो पौलुस और दूसरे अगुवे अपने जीवन मे करते हे।

जैसे आप प्रभु मे बढ़ते हैं, प्रभु से परख मांगिए कि जो सेवकाई मसीह मे बढ़ने मे आपकी सहायता कर रही है उसे पहचान सके और देखिए कि आप कैसे इस भंडार मे फ्रो सकते हैं।

बीज बोना

पुराने नियम मे दसवा अंश के बारे मे बताया गया है इसका ये अर्थ नही है कि परमेश्वर केवल उस समय ही इसे चाहता था। नही, आज भी परमेश्वर अपने लोगों से दसवा अंश चाहता है।

बहुत से विश्वासी इस झुठ पर विश्वास करते हैं कि दसवा अंश पुराने नियम (व्यवस्था) मे सिखाया गया है, तो आज उन्हें अपनी कमाई का दसवा भाग देने की जरुरत नही है। वो यही कहते हैं कि अफ्र हम नएं नियम (अनुग्रह) मे जीते हैं और अफ्र हमें दसवा अंश देने के सिद्धान्त का आदर करने की जरुरत नही है।

काश मै आपको इस किताब मे परमेश्वर के देने और प्राप्त करने और बीज का समय और फसल का समय, परमेश्वर की वाचा की प्रतिज्ञा और आप को संपन्न करने की उसकी योजना के सिद्धान्त के बारे मे सिखा पाता। परन्तु अब के लिए, मुझे आपके दिल ये बीज बोने दिजिए। बाद मे आप खुद

पुराने और नए नियम मे दसवा अंश और देने का सिध्दान्त परमेश्वर के वचन से सिख सकते हैं।

आप के लिए यहां कुछ उदाहरण है :

- पुराने नियम के सबसे पहले अध्यायों मे जाते तो पाएगें कि परमेश्वर ने मूसा को व्यवस्था देने के पहले, इब्राहिम ने मलकिसदेक को दसवा अंश दिया था, जो उस समय महायाजक था (उत्पत्ति १४:१७-२०)।

- जब परमेश्वर नूह के साथ वाचा बांधता है कि कभी बाढ के द्वारा पृथ्वी को नाश नही करेगा, वो उससे वादा करता है, *जब तक पृथ्वी रहेगी, बोना और कांटने का समय,,, खत्म नही होगा* (उत्पत्ति ८:२२)। परमेश्वर घोषित करता है कि बीज बोना फसल लेकर आएगा।

- बाद मे निर्गमन की किताब मे, परमेश्वर सीनै पर्वत पर मूसा को व्यवस्था देता है जिस मे दसवा अंश देने का सिद्धान्त परमेश्वर के लोगों के लिए व्यवस्था के रुप मे स्थापित किया जाता है।

- फिर नए नियम मे, पौलुस देने और बोने और कटनी करने के इस सिद्धान्त पर ज़ोर देते हुए कहता है, *इसे याद रखिए : अब मै ये कहता हूं कि जो थोडा बोएगा वो थोडा ही काटेगा, और जो अधिक बोएगा वो अधिक काटेगा। प्रत्येक व्यक्ति जैसा उसने अपने मन मे निश्चित किया है वैसा ही करे, न कुढ़-कुढ़ कर और न दप्पाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम करता है। और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है, जिससे तुम सदैव, सब बातों मे परिपुर्ण रहो, और हर भले काम के लिए तुम्हारे पास भरपूरी से हो* (२ कुरिन्थियों ९:६-८)

परमेश्वर के वचन के शुरु मे ही, परमेश्वर ने दसवा अंश और बीज और कटनी के समय के बारे मे निश्चित किया, और वो पूरे पुराने नियम और नएं नियम मे ये सिद्धान्त बनाएं रखता है। जब आप प्रभु को उसने आपको जो भी दिया उसका कम से कम दसवा भाग देते हैं, आपकी भेंट बीज हो जाती

है, जिसे आपने परमेश्वर के राज्य मे बोया है। परमेश्वर उस बीज को लेकर उससे फसल बनाता है ताकि आप के जीवन को और दूसरे के जीवन को आशिष दे सकें। प्रभु आपको और आपके स्त्रोतों को उसके काम के लिए उपयोग करना चाहता है। परमेश्वर के साथ सहभागी होना कितने सौभाग्य की प्राप्त है।

कभी भी अपना दसवा अंश कुडकुडाते हुए या तिरस्कार के साथ न दे। परमेश्वर ने आपको जिसके द्वारा आशिष दी है उसमे से उसे कुछ देना सच मे आपकी आराधना और उसके लिए आपको प्रेम को प्रकट करता है।

याद रखिए, २ कुरिन्थियों ९:७ कहता है, *प्रत्येक व्यक्ति जैसा उसने अपने मन मे निश्चित किया है वैसा ही करे, न कुढ़-कुढ़ कर और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम करता है।*

देने के बारे मे अपना दिल और अपने उद्देशों को जांचिए। जब आप दसवा अंश से परमेश्वर का आदर करना और उसकी आज्ञा मानना चुनते हैं, आप परमेश्वर की आशिष और प्रयोजन को नएं और उत्साहजनक रुप मे अनुभव करना शुरु करेगें।

भेंट

भेंट, दसवा अंश से अलग है, वो आपके दसवा अंश से अलग और उससे बढ़कर है। जब आप परमेश्वर को खास भेंट देते हैं, वो ऐसी भेंट होनी चाहिए जिसके लिए आपको कुछ चुकाना पड़ता है। यही बलिदान की भेंट की विचारधारा होती है।

इसका उदाहरण २ शमुएल २४ मे है। परमेश्वर ने इस्राएल देश के विरोध मे मरी भेजी थी क्योंकि राजा दाऊद ने लोगों के विरोध मे पाप किया था। फिर दाऊद पश्चाताप करता है। परमेश्वर का एक भविष्यवक्ता दाऊद के पास आता है और उसे अरौना नाम के वयक्ति के खलियान मे एक वेदी

बनाने के लिए कहता है। दाऊद अरौना के पास उसका खलियान खरिदने जाता है ताकि वो वहां वेदी बना सकें। अरौना, राजा दाऊद से कहता है कि उसे वेदी बनाने और बलिदान की भेंट चढाने के लिए उसे जो भी चाहिए वो ले सकता है। अरौना, दाऊद के सामने झुक जाता है और उसे वो सारे स्रोत देता है जो दाऊद को भेंट चढाने के लिए जरुरी थे। राजा दाऊद उससे कहता है, *क्योंकि मै अपने परमेश्वर को ऐसी होमबली नही चढाऊंगा जिसका मैने कुछ मुल्य नही चुकाया हो* (वचन २४)। दाऊद उस व्यक्ति को उसके स्रोत के लिए धन देता है और फिर परमेश्वर को भेंट चढाता है।

देखिए, आराधना की भेंट जो आपके लिए महत्वहिन हैं या उसके लिए आपको कुछ दाम चुकाना नही पड़ा, तो ये आराधना सच्ची आराधना नही है। जब आप परमेश्वर को कोई भेट देते हैं, तो वो आपके लिए विशेष होने पाएं,,, उसके लिए आपको कुछ दाम चुकाना पड़े,,, वो आपके लिए महत्वपुर्ण और अर्थपुर्ण हो। ये वास्तविक है चाहे आप दसवा अंश के रुप मे धन दे या आप अपने समय का बलिदान दे। परमेश्वर जानता है कि आपका समय आपके लिए बहुमुल्य है। जप्रा आप दिन का अपना बहुमुल्य समय निकालते हैं कि आराधना द्वारा उसका आदर करे या दूसरों की सेवा करे, वो आपको केवल आशिष ही नही देगा, परन्तु वो आपको अधिक समय देने के द्वारा आपको प्रतिफल देगा। वो ये कैसे करता है ये भेद है। परमेश्वर के साथ मेरा जीवनभर का संबंध होने के बाद और अगणित व्यक्तिगत अनुभवों के बाद, मै जानता हूं कि ये सच है।

२४/७ (निरंतर) आराधना

परमेश्वर की आराधना करना केवल चर्च के लिए ही आरक्षित नही है। इसके विपरित, आराधना एक मनोदशा है। आराधना आपकी वो मनोदशा है जिसे आप अपने दिल मे पूरा हफ्ता लिए चलते हैं। आप दिन भर मे जो सामान्य काम करते हैं उसके द्वारा आप अदभुत रुप मे प्रभु की स्तुति कर

सकते हैं। हर एक पल परमेश्वर के साथ संपर्क रखने को हम *मसीह मे चलना कहते हैं। वचन या कार्य मे जो कुछ करो, सब प्रभु यीशु के नाम मे करो और उसके द्वारा परमेश्वर पिता को धन्यवाद करो* (कुलुस्सियों ३:१७)।

जब भी आप घर का काम, स्कुल का काम, व्यापारा संबंधी काम या चाहे कुछ भी काम करे, उसे सबसे उत्तम रुप मे करने की कोशिश करे, ये जानते हुए कि आप परमेश्वर के बल के द्वारा ही उसे पूरा कर सकते हैं। जब आप ऐसा करते हैं, आप सच मे परमेश्वर की अराधना करते हुए उसे महिमा दे रहे हैं, आपको आशिष और प्रतिफल मिलेगा।

परमेश्वर का वचन कहता है, *उसी मे हम जीवित रहते, चलते फिरते और अस्तित्व रखते हैं* (प्रेरित १७:२८)। चाहे हम खुद कुछ भी काम करे, हमे उसे आत्मा के द्वारा करना होगा और ये जानना होगा कि हम प्रभु की आराधना के लिए जीवित पात्र हैं।

जब हम परमेश्वर के बारे मे सोचते है कि वो हमारा प्रेमी बॉस, हमारा शिक्षक या सलाहकार है, तो हम अपना काम करने के लिए अदभुत प्रेरणा प्राप्त करेगें। जब आप अपने काम मे परमेश्वर का आदर करने के लिए उत्तमता से काम करते हैं, तो आप जीवन मे और उत्तम होते चले जाएंगें, और आप आशिष पाएगें : *अपना सब काम यहोवा पर सौंप दे, और तेरी योजनाएं सफल होगी* (नीतिवचन १६:३)।

प्रार्थना

आराधना जैसे ही, हमें प्रार्थना की ओर भी मुश्किल के रुप मे नही देखना है। प्रार्थना केवल परमेश्वर से बातें करना है, आप उससे करिबी मित्र के रुप मे प्रात कर सकते हैं।

जैसे प्रभु की आराधना करने के बहुत से तरिके हैं, वैसे हि प्रार्थना का कोई खास तरिका नही है। सच मे, बाइबल मे उन लोगों की बहुत सी

कहानीयाँ है जिन्होंने बहुत से कारणों के लिए अलग-अलग तरिके से प्रार्थना की थी। शायद लोगों के मन मे प्रार्थना के बारे मे सबसे सामान्य चित्र यही आता है कि हम घुटनों पर है, हाथ बंधे हैं, सिर झुका है और आंखें बदं है। फिर भी, बाइबल हमे कैसी प्रार्थना करे इसके बहुत से उदाहरण देती है।

बाइबल मे दिए प्रार्थना के उदाहरण

बाइबल कहती है जब दानिएल अपने घर की उपरी कोठरी मे था, वो दिन मे तीन बार घुटनों पर आकर प्रार्थना करता था। ये ऐसा भी बताती है कि जब दानिएल ने प्रार्थना की, उसने परमेश्वर को धन्यवाद दिया और उससे सहायता मांगी (दानिएल ६:१०-११)। ध्यान दिजीए दानिएल को भी अपने जीवन की खास बातों के लिए सहायता की जरूरत पड़ी, वो पहले परमेश्वर के पास धन्यवादी दिल के साथ जाता था। धन्यवाद दिए बीना वो परमेश्वर से कुछ नही मांग़ता था।

उत्पत्ति १७:३ कहता है कि इब्राहिम परमेश्वर के आम ने अपने मुंह के बल गिरता था। इब्राहिम परमेश्वर के पास पूरे समर्पण और नम्रता के साथ आता था।

मरकूस ११:२५ मे, यीशु ने अपने चेलों से कहा, *इसलिए मै तुम से सच कहता हूं, कि* ***तुम प्रार्थना मे जो भी मांगो****, तो विश्वास करो की तुम्हें मिल गया है, और तुम्हें मिल जाएगा। जब तुम प्रार्थना के लिए आते हो और तुम्हारे मन मे किसी के विरोध मे कुछ है, तो उन्हें क्षमा करो ताकि तुम्हारा स्वर्गिय पिता भी तुम्हारे पाप क्षमा करे।* उस ने अपने अनुयायीयों से कहा कि **विश्वास मे खड़े** रहे, परमेश्वर पर विश्वास करे।

एक जगह, यीशु ने अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाई और अपनी आंखें खुली रखकर अपने पिता से प्रार्थना की (यूहन्ना ११:४१)।

जब हन्ना (पुराने नियम की एक भक्तिपुर्ण स्त्री) प्रार्थना करने मंदिर गई,

वचन कहता है कि वो *अपने दिल से कह रही थी, केवल उस के होठ हिल रहे थे, परन्तु उसकी आवाज़ नही आ रही थी* (१ शमुएल १:१३)। परमेश्वर ने उसे संतान देने के द्वारा आशिष दी, उसके दिल की इमानदारी के कारण, उसके दिखावे के कारण।

भजन १४२:१ मे दाऊद लिखता है, ***मै पुकारकर परमेश्वर को दुहाई*** *देता हूं, मै अपने शब्दों में परमेश्वर से विनती करता हूं*

जैसे आप देख सकते हैं, प्रार्थना करने का कोई सही या गलत तरिका नही है। आप खड़े रह सकते या घुटनों पर आ सकते हैं, अपनी आखें खुली या बंद कर सकते हैं, परमेश्वर को पुकार सकते हैं या धीमी आवाज़ मे अपने दिल मे उससे बातें कर सकते हैं। प्रार्थना किसी ढांचे या तरिके या स्थिती मे बंधी नही है; केवल आपके लिए आरामदेह हो और ये दिल की बात होती है।

आप परमेश्वर से क्या कहते हैं?

जब आप प्रार्थना करते हैं, परमेश्वर को बताएं कि आप उससे कितना प्यार करते हैं और उसने आपके लिए जो भी किया है उसके लिए उसका धन्यवाद करते हैं। उसकी आराधना किजीए। भजन १००:४ कहता है, *उसके फाटकों मे धन्यवाद के साथ और उसके आंगनों मे स्तुति करते हुए आओ। उसे धन्यवाद देकर उसके नाम की स्तुति किजिए।* आप जिस के लिए आभारी है उसके लिए धन्यवाद दिजीए। केवल वही स्तुति और आदर के योग्य है।

यदि आप नही जानते हैं कि उसकी स्तुति कैसे करे, बहुत से भजन मे महान स्तुति की प्रार्थना के उदाहरण हैं, आप प्रार्थना के लिए इन का उपयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, भजन १०३ स्तुति का सुंदर उदाहरण है जिसमे भजनकार परमेश्वर ने उसके की हुई कई बातों को याद करता है।

जब आप प्रार्थना करते हैं, परमेश्वर से क्षमा मांगे अपने पापमय विचार, मनोदशा, काम और क्रिया के लिए। आपने क्या गलत किया है उसके बारे मे उसके सामने अंगिकार करने मे सटिक रहे और शाश्वति रखिए कि वो बड़े आनंदे आपको माफ करने के लिए खड़ा है। प्रेरित यूहन्ना १ यूहन्ना १:९ मे लिखता है, *यदि हम अपने पापों को मान ले तो वह हमे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्मों से शुद्ध करने मे विश्वासयोग्य और धर्मी है।*

मत्ति ६:१४ मे, प्रार्थना के बारे मे यीशु की शिक्षा के भाग के रुप मे, वो हमें आज्ञा देता है कि जिन्होंने हमारे विरोध मे पाप किया है उन्हें हम क्षमा करे। मसीह को दर्शाने का एक महान तरिका है कि हम दूसरों के प्रति दयालू और करुणा का हृदय रखें।

आपके अंगिकार न किए गएं पाप के लिए शर्म लाकर आपकी शान्ति चुराने की शैतान की योजना से सावधान हो जाईए। परमेश्वर आपको दण्ड नही देना चाहता है। अंगिकार की प्रार्थना के द्वारा वो आपको न्योता देता है कि आप उससे अपने पापों की क्षमा मांगे और दूसरों को क्षमा करे। जैसे आप हियाव से यीशु, अपने वकील के पास आते हैं, आप क्षमा प्राप्त करते हैं, आप पिता के साथ शुद्ध संगति वापस पाएगें और उद्धार के आनंद को फिर ज्योतिर्मय करेगें। आमिन।

विश्वास से प्रार्थना करना जरुरी है

यदि आप के जीवन मे आपको मार्गदर्शन या दिशानिर्देश की जरुरत है, तो परमेश्वर से मांगिए। याकूब १:५-८ मे, हमे प्रेरणा दी जाती है कि हम विश्वास की आत्मा मे परमेश्वर की बुद्धि के पीछे जाएं।

यदि तुम मे से किसी को बुद्धि की कमी हो तो वह परमेश्वर से मांगे और उसे दी जाएगी, क्योंकि वह प्रत्येक को बिना उलाहना दिए उदारता से देता है। परन्तु विश्वास से मांगे और संदेह न करे, क्योंकि जो संदेह करता है वह समुन्दर की लहर के समान है, जो हवा से उठती और उछलती है। ऐसा

मनुष्य यह आशा न रखें कि उसे परमेश्वर से कुछ प्राप्त होगा। क्योंकि दुचित्ता होने के कारण वह अपनी सारी चाल मे अस्थिर है। जब आप प्रभु से बुद्धि मांगेगें प्रभु आपको वो देगा; आपको केवल विश्वास करना है।

इब्रानियों ११:६ कहता है कि परमेश्वर के पास आनेवाले को ये विश्वास करना चाहिए कि वो है और वो अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है। यदि आपकी कोई जरुरत है आप के जीवन मे, आपके परिवार मे, आपके धन या आपकी तंदुरुस्ती मे उसे परमेश्वर को दे दें। बाइबल कहती है कि हमें **किसी प्रकार की** चिन्ता नही करनी चाहिए : *किसी भी बात की चिन्ता न करो, परन्तु प्रत्येक बात मे प्रार्थना और निवेदन के द्वारा तुम्हारी विनती धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत की जाए। तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु मे सुरक्षित रखेगी* (फिलिप्पियों ४:६-७)।

अपनी प्रार्थना मे ढृढ़ रहे, और परमेश्वर आपकी ढृढ़ता का प्रतिफल देगा। भजन ५५:१७ कहता है, *मै तो सांझ को, भोर को और दोपहर को गिड़गिड़ाकर विनती करुंगा और वह मेरी आवाज सुन लेगा।* हिम्मत मत हारिए, धीरज के साथ प्रार्थना किजीए। *धर्मिजन की प्रभावशाली प्रार्थना से बहुत कुछ हो सकता है* (याकूप्र ५:१६)। परमेश्वर आपके दृढ निश्चय का प्रतिफल देगा। आप दरवाज़ा खटखटाएं बिना उसके खुलने की आशा नही कर सकते हैं। यीशु हमे प्रोत्साहित करता है, *मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा; ढुंढो तो तुम पाओगे, खटखटाओ तो तुम्हारे लिए द्वार खोला जाएगा। क्योंकि जो भी मांगता है वो पाता है। क्योंकि जो भी मांगता है उसे मिलता है; जो ढूंढ़ता है वो पाता है, जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाता है* (मत्ती ७:७-८)। ढृढ़ प्रार्थना एक मौका है कि परमेश्वर के लिए गहरी होनेवाली भुख दिखाए और ये भरोसा बढाएं कि प्रभु आपकी पुकार सुनता है।

अपने उद्धारकर्ता को अपने दिन के बारे मे बताएं और उसे बताएं कि

आप क्या महसुस करते हैं और आपकी जरुरत क्या है। दूसरे लोग जिन्हें सहायता की जरुरत है उनके लिए प्रार्थना किजीए,,, प्रियजन,,, मित्र,,, सहकर्मी,,, आपके उपर और जो देश पर अधिकारी हैं उनके लिए प्रार्थना किजीए,,, यहां तक अपने शत्रुओं के लिए भी। परमेश्वर आपसे, अपनी संतान से सुनना चाहता है, वो चाहता है कि आप अपने दिल की चिन्ताओं के बारे मे उससे प्रातें करे।

मै हमेशा प्रार्थना की यही तस्विर बनाता हुं : मेरे स्वर्गिय पिता की गोद मे और उसकी बाहों मे आना और उसे इमानदारी से अपने दिल मे जो भी है वो सब बताना।

एक विश्वासी के रुप मे आप सबसे महत्वपुर्ण काम यही कर सकते है कि आप परमेश्वर के साथ समय बिताना, उसकी आराधना करें, और आज से कई साल बाद जब आप बढ़कर और परिपक्व होकर परमेश्वर के साथ एक करीबी संबंध मे आएगे। सच मे, ये अनंतकाल के लिए आनंद की बात होगी।

मै आपको प्रोत्साहित करता हूं कि परमेश्वर के साथ इस डीवोशन के समय मे और किसी चिज़ से अपना ध्यान भटकने न दे। ठान ले कि आप उसकी उपस्थिती मे आकर उसकी आराधना करेगें और प्रार्थना करेगें। निश्चित कर ले कि आप उसके पुत्र, हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता के स्वरुप मे परिवर्तिह हो जाएगें। इस तरह से, आपका जीवन आशिष पाएगा और आप निरंतर और ढृढता से उसके मार्ग मे बने रहेगें।

अध्याय आठ

जुड़ जाएं

अपनी बाइबल पढना, प्रभु की आराधना करना,
और प्रार्थना करना अपनी आत्मा को भोजन देना और
यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत संबंध मज़बुत करने के लिए
बहुत ही व्यवहारिक तरिका है। आप ये सब खुद कर सकते हैं।
परन्तु परमेश्वर जानता है कि अकेले खड़े रहना आसान और
स्वास्थ पुर्ण नही है, और वो चाहता है कि
आपको सहायता मिले।

सच मे परमेश्वर ने हमे दूसरे विश्वासीयों की संगति मे रहने के लिए बनाया है। इसलिए ये महत्वपुर्ण है कि आप एक चर्च खोज निकाले जहां आप दूसरे विश्वासी के संग सीख सके और बढ़ सकें, जो इसी तरह से विश्वास करते हैं, चेले बनना, सुरक्षा, प्रोत्साहन और विश्वासीयों की संगति मे जुड़ने से सूधी ली जाती है।

जब कि आपने मसीह के पीछे चलने का निर्णय लिया है, तो शायद ऐसा दिखाई दे कि आपके बहुत से विश्वासी मित्र नही हैं। ये इस बात पर आधारित है कि आपके परिवारवाले मसीह की सेवा करने के आपके निर्णय को कैसे प्रतिउत्तर देते हैं, शायद आपको लगे कि पूरे संसार मे केवल आप ही एक विश्वासी हैं। अगर आप ऐसा सोचते हैं, तो निराश मत होईए। ये

संसार करोड़ो विश्वासीयों से भरा है। ये एक कारण है कि चर्च जाने से आपको प्रेरणा क्यों मिलती है। जब आप ऐसे कमरे मे आते हैं जहां सब लोग आप जैसे ही परमेश्वर से प्रेम करते हैं, तो कई बार आप स्वर्ग की छोटी झलक पाते हैं और आप जिस आनंद से भरते हैं वो रोमांचित करनेवाला होता है।

चर्च क्यों जाना चाहिए?

पूराने नियम मे परमेश्वर के लोगों को कहा गया था *सब्त का दिन स्मरण रखना और उसे पवित्र रखना* (निर्गमन २०:८)। सब्त का दिन आराधना और विश्राम का दिन है। परमेश्वर जानता है कि चर्च हमारे लिए कितना महत्वपुर्ण है, और वो याद दिलाता है कि हम वचन का पालन करे।

रोमियो १०:१७ कहता है, *विश्वास, परमेश्वर का वचन सुनने से आता है।* आप परमेश्वर का वचन कहां सुन सकते हैं? एक अदभुत जगह है चर्च, जहां आप अपने पास्टर और मित्रों के मुंह से ये सुन सकते हैं। परमेश्वर ने चर्च मे अगुवाई करने के लिए प्रहुत से लोगों को वरदान दिए, बुलाहट और अभिषेक दिया है। वो लोग इसलिए हैं कि आपको बल दे, मार्गदर्शन करे और आपको परमेश्वर की शिक्षा और वचन से भर दे।

परमेश्वर का वचन कहता है *दूसरे विश्वासीयों के संग इकट्ठा होने न छोड़ो, परन्तु, एक दूसरे को हमेशा प्रोत्साहित करो,,,* (इब्रानियों १०:२५)। परमेश्वर चाहता है कि हम उससे और दूसरों से जुड़ा हुआ महसुस करे और ऐसे लोगों के साथ हमारी संगति के द्वारा प्रोत्साहन पाएं जो हम जैसे ही यीशु से प्रेम और आकर्षण रखते हैं।

परमेश्वर के वचन से बल, प्रोत्साहन और निर्देश देने के साथ साथ, लोकल चर्च के साथ जुड़ना आपको संगित और गीतों के द्वारा प्रभु की आराधना करने का मौका देगा। बाइबल कहती है, *परमेश्वर अपने लोगों की*

स्तुति पर विराजमान होता है (भजन २२:३), दूसरे विश्वासीयों के संग आराधना करने का समय ताज़गी, शान्ति और आनंद का समय हो सकता है, जैसे आप महसुस करते हैं कि परमेश्वर की उपस्थिती उस स्थान को भर रही है। यीशु ने कहा, *जहां दो या तीन मेरे नाम से इकट्ठा होते हैं, मै उन के मध्य होता हुं* (मत्ती १८:२०)। जैसे विश्वासी लोग एक साथ मिलकर परमेश्वर की स्तुती करते हैं, परमेश्वर की मधुर उपस्थिती का स्वागत हम हफ्ते बहुत से चर्च मे होता है।

बहुत से चर्च मे संडे स्कुल क्लासेस होती है। शायद आप बचपन मे संडे स्कुल गएं हो, परन्तु वो केवल बच्चों के लिए ही नही है। उन मे क्लासेस, बाइबल स्टडी होती है और सब व्यस्कों के लिए छोटी संगति होती है। ये सच मे परमेश्वर के वचन के प्रारे मे आपका ज्ञान और समझ ब्रढ़ाने के लिए महान समय होगा, परिपक्व विश्वासीओं से प्रश्न पुछना, और आपने खुद जिस का अध्यन किया है उसका प्रतिउत्तर पाना, और दूसरे विश्वासी से परिचित होकर उन से मिलने का आनंद लेना।

लोकल चर्च खोजने के कारण आपको अपना समय, योग्यता और धन देकर प्रभु की सेवा करने का मौका मिलता है। परमेश्वर ने आपको योग्यता दी है जो आपके चर्च के लिए महान सहायता हो सकती है। वो अवश्य ही आपकी सेवा को कई तरह से उपयोग कर सकते हैं। आपका चर्च मानो आपका परिवार होता है, क्योंकि वो मसीह मे आपके भाई और बहन हैं। यदि उन्हें किसी ऐसे क्षेत्र मे सहायता चाहिए जिसमे आपको वरदान मिला है, तो प्रार्थना कर प्रभु से मांगिए कि आप कैसे उसे पूरा कर सकते हैं।

प्रेरित पौलुस रोमी चर्च से कहता है, *क्योंकि जैसे हमारे शरीर मे बहुत से अंग हैं और सभी अंगों का एक ही कार्य नही हैं, वैसे ही हम भी जो अनेक हैं, मसीह मे एक देह हैं, और एक दूसरे के अंग हैं। जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमे दिया गया है, हमें विभिन्न वरदान मिले हैं* (रोमियो १२:४-

६)। परमेश्वर ने हमे अदभुत वरदान दिए हैं, जब आप उनका उपयोग उसकी महिमा के लिए करते हैं तो वो प्रसन्न होता है। सरल शब्दों मे कहे तो, जब हम मसीह की देह मे अपना योगदान देते हैं तो चर्च तंदुरुस्त रहता है।

जो पीयानो बजाया नही गया है वो तो केवल के फर्नीचर है। जब उसे अच्छे से बजाया जाता है तो वो आनंद का गीत लाता है। परमेश्वर अपनी धून आपके जीवन के द्वारा प्रगजाने पाएं। प्रभु से प्रार्थना कर मांगिए कि वो आपको उसकी सेवा करने के लिए मार्ग प्रगताएं।

मै एक चर्च का चुनाव कैसे करुं?

शायद आप खुद से कह रहे हैं, मै कैसे जानूं कि कौन से चर्च जाना चाहिए? आज बहुत से अलग अलग चर्च हैं उन पर अलग लेबल लगे हैं। तो कौन-सा सही है? कुछ चर्च एक तरिके से विश्वास करता है, तो दूसरे अलग विश्वास करते हैं। तो आप कैसे चुनेंगें?

प्रार्थना कर परमेश्वर से मांगीए कि वो आपको ऐसे चर्च मे ले जाएं जहां वो चाहता है कि आराधना कर उसकी सेवा करे। फिर परमेश्वर पर भरोसा किजिए कि आप जहां आराधना कर रहे हैं उस के प्रगारे मे आपको शान्ति दे।

दूसरी बात, ऐसा चर्च खोजिए जो पूरी बाइबल पर विश्वास करता हो। आज बहुत से लोग और चर्च अपने आराम के लिए या राजनैतिक रुप मे सही दिखने के लिए उन्होंने वचन मे समझौता किया है, ताकि चुन ले कि वो क्या विश्वास करना चाहते हैं और जिसका वो इनकार करना चाहते हैं, उसे फेंक दे। बाइबल २ तिमुथियुस ३:१६ मे कहती है, *संपूर्ण पवित्रशास्त्र पवित्र आत्मा की प्रेरणा से रचा गया है और शिक्षा, ताड़ना, सुधार और धार्मिकता की शिक्षा के लिए उपयोगी है।* ये ऐसा नही कहता है कि कुछ भाग ये कहता है **संपूर्ण पवित्रशास्त्र** बाइबल ये भी कहती है कि हमें बाइबल

मे न कुछ जोड़ना नही चाहिए और न कुछ निकालना चाहिए (प्रकाशितवाक्य २२:१८-१९)।

मै बस इतना ही कहना चाहूंगा कि हर समय बाइबल का अर्थ बतानेवाले सुसमाचार की सेवक हमेशा सही होते हैं, ये ऐसा नही है। एक सामान्य मनुष्य होने के नाते, यहां तक कि पास्टर भी कई बार चूक सकता है। इसलिए हमें ये महत्वपूर्ण है कि आप हमेशा पवित्र आत्मा से सहायता मांगे कि वो आपको बताएं कि संदेश देनेवाले प्रचारक की बात क्या परमेश्वर के वचन से मेलखाती है या नही।

आप परमेश्वर का वचन सुन सकते हैं, मसीही रेडीयो स्टेशन पर और मसीही टेलिविजन प्रोग्राम मे और नेटवर्क पर जैसे आई एन एस पी (द इन्सपिरेशन नेटवर्क); आय लाईफ टीवी (इन्सपिरेशन लाईफ टेलीविज़न) और आई एन आई (इन्सपिरेशन नेटवर्क इंटरनॅशनल), ये इन्सपिरेशन नेटवर्क के द्वारा प्रस्तुत किए गएं कुछ विभाग हैं। यहां फिर से ध्यान दिजीए, कोई व्यक्ति रेडीओ या टेलिविज़न पर प्रचार कर रहे हैं इसका ये अर्थ नही है कि वो हमेशा परमेश्वर के वचन की सच्चाई प्रगता रहे हैं। याद किजीए वो वचन जो मैने पहले बताया था : *प्रियों प्रत्येक आत्मा की प्रतिति न करो, परन्तु आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं या नही; क्योंकि संसार मे अनेक झूठे नबी निकल पड़े हैं* (१ यूहन्ना ४:१)।

अपना विश्वास बांटना

यीशु मे आपके नए विश्वास के बारे मे परमेश्वर चाहता है कि आप इसे अपने परिवार और मित्रों के साथ बांटे, या उनके साथ बांटे जो आपको मसीही होने के बारे मे पुछता है। अपनी आशा के विषय पुछे जाने पर उत्तर देने को तत्पर रहो (१ पतरस ३:१५)। आपके आस-पास के लोग अवश्य ही आपकी मनोदशा, जीवनशैली और व्यवहार का बदलाव दे रहे हैं, तो आपको

तैयार रहना होगा कि उन्हें बता सकें कि आप इतना अलग जीवन क्यों जी रहे है।

परमेश्वर ने आपके जीवन के लिए जो कुछ किया है वो अदभुत है। आपको अंधकार से ज्योति मे लाया गया है, और आप स्वर्ग जाने के रास्ते पर हैं।

किसी को ये बताना कि परमेश्वर ने आपके जीवन मे क्या किया है, इसे गवाही कहते हैं। ये गवाही देना महत्वपुर्ण है कि कैसे परमेश्वर के अनुग्रह और दया ने आपको उद्धार दिया है, क्योंकि जिन लोगों से आप बात करते हैं शायद वो यीशु को नही जानते हैं। आपकी सहायता के द्वारा, वो मसीह के उद्धार के ज्ञान के पास आ सकते हैं। ये कितनी अदभुत बात है कि आपने प्रभु के अनुग्रह के बारे मे गवाही देने के लिए हिम्मत करने के कारण कोई अनंतकाल के लिए स्वर्ग मे वास करेगा।

अपनी गवाही बांटना केवल एक अच्छा काम ही नही है, ये आनंदपुर्ण **जिम्मेदारी** है। यीशु ने अपने चेलों से कहा था कि सारे संसार मे जाकर उसके बारे मे बताओ। अब आप जानते हैं कि मसीह आपके पापों के लिए मरा। और उसके बिना नर्क मे सदा के लिए रहने के बजाए, उसने आपको अपने साथ स्वर्ग मे अनंत जीवन दिया है, तो आप उसका सुसमाचार दूसरों बांटना चाहेगें। ये सच्चाई केवल खुद तक रखना तो बहुत व्यर्थ करना है।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं अगर कॅनसर के लिए कोई अच्छी दवाई का आविष्कार हो जाएं और डॉक्टर सारी जानकारी छिपाकर रखते हैं? यदि डॉक्टर शान्त रहे तो उस से बहुत से लोग लाभ पाने से वंचित रह जाएगे। सच्चाई ये है कि परमेश्वर के अनुग्रह की खज़र किसी भी वॅक्सिन या दवाई से बढ़कर है। उसके उद्धार का संदेश इस संसार के किसी भी व्यक्ति के लिए अंतिम उपचार है।

सुसमाचार का शुभ संदेश बांटना

किसी न किसी समय, सब का जीवन खत्म हो जाएगा। फिर भी, कुछ लोग स्वीकार करते हैं कि आत्मा सदा जीवित रहता है।

अनंतकाल चुनाव नही है। चाहे कोई अनंतकाल स्वर्ग मे बिताएं या नर्क मे, वो इसे कही न कही जरुर बिताएगे। अनंतकाल पर विश्वास करना या न करना इस सच्चाई को नही बदलता है कि वो एक दिन जरुर आएगी। हम अनंतकाल स्वर्ग मे यीशु के साथ बिताएं इसलिए यीशु ने सबकुछ किया है, लेकिन अब ये हम पर, उसकी संतान पर आधारीत है, इस संसार को उसका सुसमाचार बताने की जिम्मेदारी हम पर है।

सुसमाचार का अर्थ है शुभ संदेश और सुसमाचार प्रोत्साहन और आशा के लिए परमेश्वर का वचन है। बाइबल केवल इतिहास का लेखा ही नही है, लेकिन ये लोगों की परेशानी के लिए उत्तर भी देती है, और भी बहुत कुछ है।

खास डीलीवरी

जब आप किसी मित्र या परिवार के सदस्य को पत्र लिखते हैं, तो आपको उसे पोस्ट ऑफिस मे देना पड़ता है, इस भरोसे के साथ कि आपने लिखे पते पर वो इसे पहूंचाएगें। आपने जो लिखा है वो बहुत ही विशेष और उद्देशपुर्ण होगा। यदि वो पत्र नही पहुंचता है तो ये कितनी निराशा की बात होगी/यदि पोस्ट ऑफिस उसे भुल जाएं, या उसे न देने का निर्णय ले।

इसी तरह से, परमेश्वर के पास संसार को देने के लिए एक पत्र है, और उसने अपने वचन के लिए और उसके सुसमाचार के लिए हम पर भरोसा किया है। पोस्टल करियर जैसे ही, हमें यीशु का सुसमाचार संसार को बताने के लिए विश्वास योग्य बने रहना है। परमेश्वर हमारे लिए ये चुनावी नही रखा है। हमे सुसमाचार *समय - असमय* बताने के लिए तैयार रहना चाहिए (२ तिमुथियुस ४:२)।

उसने ये नही कहा, यदि तुम्हें याद रहे, तो तुम्हारा मित्र जान ले कि मै कौन हूं उसने ये नही कहा, यदि तुम कर सको तो मेरे पुत्र यीशु के बारे मे तुम्हारे परिवार को बताने के लिए मै तुम्हारी सराहना करूंगा। उसने ये नही कहा, यदि ये तुम्हें ज्यादा परेशान न करे, तो क्या तुम अपने सह-कर्मी को सुसमाचार बताओगे? नही, सच मे, उसने अपने वचन मे स्पष्ट किया है कि सारे देशों मे जाकर चेले प्रानाने हैं।

स्वर्ग मे उठाएं जाने के पहले, यीशु ने अपने चेलों से कहा था कि सारे जगत मे जाकर विश्वासीयों को चेले बनाओ, उन्हेम बपतिस्मा दो और जो बातें मैने तुम्हें सिखाई है उन्हें मानना सिखाओ (मत्ती २८:१९-२०)। यही हमारी महान आज्ञा है।

कृपया ध्यान दिजीए कि ये वचन हमें ये आज्ञा नही दे रहा है कि हमें संसार के देशों मे जाना होगा, शायद परमेश्वर हमारे दिल मे ये इच्छा दे कि हम विदेशों मे जाकर वहां के लोगों को प्रचार करे। लेकिन आपका अपने मित्र और परिवार का समुह है, जिस पर आपसे बढ़कर और कोई प्रभाव नही डाल सकता है। वो लोग आपकी प्राथमिकता है। एक बार जब आप दूसरों तक मसीह को ले जाते हैं, तो वो दूसरे को बताते हैं, और वो भी दूसरों को बताते हैं, जब तक कि सारे संसार तक यीशु मसीह का सुसमाचार न पहुंच जाएं।

शायद आप खुद से कह रहे हैं, मेरा विश्वास दूसरों को बताने के लिए मै खुद परमेश्वर और बाइबल के बारे मे ज्यादा नही जानता हूं। खैर, यीशु ने सामरी स्त्री को बताया था कि वो कैसे उद्धार पा सकती है। उसका जीवन गड़बड़ी मे था, परन्तु उसने अपना हृदय यीशु को दे दिया और तुरंत अपने नगर जाकर लोगों को बताया कि यीशु ने उससे क्या कहा था। उसकी गवाही के परिणाम स्वरुप, *उस स्त्री की प्रात सुनकर सामरी नगर के बहुत लोगों ने उस पर विश्वास किया* (यूहन्ना ४:३९)। क्या ये अदभुत नही

है? उसे विश्वासी बनकर कुछ ही घंटे हुए थे, फिर भी प्रभु ने दूसरों को विश्वास मे लाने के लिए उसका उपयोग किया।

आप क्या नही जानते हैं उसकी परवाह मत किजीए। सामरी स्त्री जैसे, आप जो जानते हैं उसका परमेश्वर उपयोग कर सकता है ताकि दूसरे लोगों को परमेश्वर के पास ला सकें। परमेश्वर ने अपने बहुमुल्य सुसमाचार के लिए आप पर विश्वास किया इसलिए आनंद मनाईए; ये अदभुत, दूसरों को जीवन देनेवाला संदेश बताने के लिए बिलकुल न डरे।

और याद रखिए, जो यीश को अपना उद्धारकर्ता बनाना चाहता है उसके लिए आप जिम्मेदार हैं। ये पवित्र आत्मा का काम है। आपकी जिम्मेदारी है कि यीशु की गवाही सच्चाई और अनुग्रह से बताएं।

अध्याय नौ

युद्ध करे

इस संसार मे दो शक्तियाँ हैं। आप सोच सकते हैं कि वो अंधकार और ज्योति या भला और बुरा है। आप जो चाहे वो कह सकते हैं, वो बहुत सरल रुप मे परमेश्वर और शैतान हैं।

आदी मे जब परमेश्वर ने सारे स्वर्गदूतों को बनाया था, उसने उन्हें स्वतंत्र इच्छा के साथ बनाया था, जिसमे उसकी सेवा करना और आराधना करना शामिल है। लूसीफर के बहुत ही सुंदर स्वर्गदूत था, जिसे स्वर्ग मे आराधना मे अगुवाई करने के लिए बनाया गया था (यहजकेल २८:१३)।

एक दिन लूसीफर घमण्ड से फूलने लगा। वो स्वर्ग का पूरा ध्यान और सराहना चाहता था, और वो विश्वास करता था कि उसे वो मिल भी जाएगा। एक तिहाई स्वर्गदूत लूसीफर के साथ हो लिए कि परमेश्वर को दूर करने और उसका सिंहासन लेने मे लूसीफर की मदत करे, वो अपने सृष्टिकर्ता और प्रभु परमेश्वर के विरोध मे आएं। उनके फ्रालवे के कारण, परमेश्वर ने लूसीफर (शैतान) को और उसके स्वर्गदूत (दुष्टात्माओं) को निकाल फेंका जिसके कारण वो अनंतकाल के लिए दोषी और पूरे भविष्य के लिए नरक के अथाह कुण्ड के लिए मे फेंका जाना निश्चित किया (यशायाह १४:१२-१५)। उसके बलवे के परिणाम स्वरुप ही शैतान और उसकी दुष्ट आत्माएं आज तक मनुष्यों को परेशान कर रही हैं।

सच्चाई ये है कि परमेश्वर ने शैतान पर १०० प्रतिशत विजय पाई है। शैतान हारा हुआ है, वो हार चुका है। वो नरक मे अनंतकाल तक रहेगा। शैतान झुठा और धोकेबाज़ है। उसका काम *चोरी करना, घात करना और नाश करना है।* दूसरी ओर यीशु ने कहा कि मै इसलिए आया हूं कि वो जीवन पाएं और बहुतायत का जीवन पाएं (यूहन्ना १०:१०)। याद रखिए कि विजय पहले से ही हमारी है।

आत्मिक युद्ध

इफिसियो ६:१०-१२ हमे स्पष्ट बताता है कि हमारा युद्ध शारीरिक नही है, परन्तु आत्मिक है ऐसा युद्ध जो आत्मिक क्षेत्र मे होता है :

अंत प्रभु और उसके सामर्थ की शक्ति मे बलवान बनो। परमेश्वर के सारे हथियार पहन लो जिससे तुम शैतान की युक्तियों का सामना करने के लिए खड़े रह सको। हमारा मल्ल-युद्ध लहू और मांस से नही है, परन्तु प्रधानों से, अधिकारीयों से, अंधकार की सेना के हाकिमों से और दुष्ट की उस आत्मिक सेना से है जो आकाश मे है।

हालाकि ये कोई साईन्स फ्रिक्शन फिल्म जैसे सुनाई दे, मै आपको शाश्वति देता हूं कि ये युद्ध वास्तविक है। एक आत्मिक संसार है और वो इस स्वाभाविक संसार जितना ही वास्तविक है जिसमे आप और मै रहते हैं। फिर भी ये आत्मिक संसार आप आखों से नही देख सकते हैं। इस क्षेत्र मे आपकी आत्मा के लिए युद्ध छिडा है। परन्तु, जब आप यीशु का नाम पुकारते हैं तो परमेश्वर ये युद्ध जीत जाता है। जब आप यीशु से अपने पापों की क्षमा मांगते और आपके दिल मे आने के लिए कहते हैं, वो वही करता है। अब यीशु आपके अंदर रहता है। परमेश्वर ने अब आपको अंधकार के राज्य और उसकी सामर्थ से छुडाया है और आपको अपने प्रिय पुत्र के राज्य मे लाया है (कुलुस्सियो १:१२-१४)।

भीतरी सामर्थ

पवित्र आत्मा आपके अंदर रहता है और यीशु का लहू जो क्रुस पर बहा था वो आपके पाप ढ़ांकता है। यीशु ने अपने लहू के द्वारा आपका जीवन खरिदा है, और उसने अपना आत्मा आप मे निवेश किया है। आप परमेश्वर की संपत्ति हैं, जो सबसे ज्यादा दाम देकर खरीदी है। एक दिन, प्रभु वापस आएगा, और जब वो आएगा, तो वो दावा करेगा कि आप उसके हैं क्योंकि परमेश्वर के पवित्र आत्मा की मूहर आप पर है।

प्रेरित २०:२८ कहता है, *उसने अपने लहू से परमेश्वर का चर्च खरिदा है*/ यीशु ने अपना जीवन देने के द्वारा महान किमत चुकाई है। परमेश्वर कभी भी अपने एकलौते पुत्र को ऐसे चर्च के लिए मरने नही देगा जो सीमाओं मे बंधा हो। बिलकुल नही।

आप को जानना होगा कि आप के पास शत्रु की सामर्थ पर १०० प्रतिशत अधिकार है, क्योंकि यीशु की सामर्थ आप मे है। यीशु ने नाम मे ही, पृथ्वी और पृथ्वी के नीचे की दुष्ट आत्माएं कांपती है। फिर भी, आप परमेश्वर की संतान हैं इसका ये अर्थ नही है कि शैतान की सामर्थ आपको परेशान नही करेगी। लेकिन इसके विपरित, वो अब पहले से ही ज्यादा क्रोधित हो चुका है, क्योंकि आप उसके शिकंजे से निकल गएं हैं। एक समय आप अनंतकाल नर्क मे बिताने के लिए उसके साथ बंधे थे, परन्तु अब आप अनंतजीवन और प्रेमी परमेश्वर के साथ स्वर्ग मे अनंतकाल बिताने जा रहे हैं।

शैतान आप के विरुद्ध आने की कोशिश करेगा, कि आपकी परिक्षा ले, कि आपको पाप मे फंसाएं, और धोका देने की कोशिश करे। जब आप पाते हैं कि शैतान आपका जीवन, आपका परिवार, आपका विवाह, आपकी नौकरी, या आपका धन चुराने की कोशिश कर रहा है, आप को वही करना चाहिए जो याकूब विश्वासीयों को करने के लिए कहता है, *परमेश्वर के अधीन हो जाओ और शैतान का सामना करो तो वो भागेगा* (याकूब ४:७)।

ज़ोर से शैतान से कहे और उसे यीशु के नाम मे जाने की आज्ञा दे। आप के बाकि जीवन मे आत्मिक युद्ध होगे। लेकिन कभी न भुले, जब मसीह ने हमारे पाप के लिए क्रुस पर दाम चुकाया तब परमेश्वर युद्ध जीत गया।

शत्रु की सामर्थ से कभी न डरे और न भयभित हो, क्योंकि जो संसार है उससे भी महान आप मे है (१ यूहन्ना ४:४)।

यीशु ने हम से प्रतिज्ञा की है, *तुम पृथ्वी पर जो कुछ बांधोंगे वो स्वर्ग मे बंध जाएगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे वो स्वर्ग मे खुल जाएगा* (मत्ती १८:१८)। यीशु के नाम मे, आपके पास सामर्थ है कि आपके, आपके परिवार और आपके जीवन के विरोध मे आनेवाली अंधकार की आत्मिक सामर्थ को बांध दे चाहे वो जो भी हो।

आत्मिक युद्ध इसी बारे मे है : यीशु के नाम मे और उस अधिकार के द्वारा जो उसने हमे दिया है, उसके द्वारा अंधकार की सामर्थ को बांध दे।

दिया गया अधिकार तो मानो स्थानिक पुलीसवाले होती है। यदि उसकी ताकत काफी न हो तो पूरा पुलीस डीपार्टमेन्ट उसके पिछे होता है। यदि वो भी काफी न हो, तो राज्य स्थर्य सेना उसके पीछे होती है। और अगर उससे भी ज्यादा ताकत लगती है, तो देश की सेना उस लोकल अफसर के पीछे होती है। हालांकि आप एक सामान्य विश्वासी हैं, परमेश्वर की अनंतकाल की सामर्थ आपकी हर परिक्षा और हम आत्मिक युद्ध मे आपके साथ है।

बीमारी पर विजय

एक बार आत्मिक संसार मे प्रधानताओं और सामर्थ को बांधने के प्राद, हम जिन परिस्थिती और समस्याओं का सामना कर रहे हैं, उन पर परमेश्वर की आत्मा को खोलना होगा (मत्ती १८:१८)।

चलिए मै एक उदाहरण देता हूं। कल्पना किजीए कि अगर आप शारीरिक बीमारी का सामना कर रहे हैं। सारी बीमारी कहां से आई हैं? वो

शैतान से आई है। बीमारी उस शाप के परिणाम स्वरुप आई है, जो अदन के बाग मे आदम और हव्वा के आज्ञाभंग करने के पाप के कारण इस पृथ्वी पर आया था। परमेश्वर कभी नही चाहता था कि हम पाप, बीमारी या मृत्यु का अनुभव करे।

लेकिन जब आदम और हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञाभंग करने का स्वइच्छा से निर्णय लिया, और भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल खाया, उन्होंने जन्म लेनेवाले हर स्त्री-पुरुष पर शाप लाया। परिणाम हुआ : पाप, बीमारी और मृत्यु इस संसार मे आई। प्रभु का धन्यवाद कि वो हमे इसे दशा मे नही छोड़ता है। उसने अपने पुत्र को भेजा ताकि वो दुःख उठाएं और मर जाएं और हम जीवन पाएं, केवल अनंतकाल मे ही नही, लेकिन इस जीवन मे भी। यीशु ने खुद पर संसार के पाप उठा लिए और मनुष्य के पाप के लिए मृत्युदण्ड चुकाया।

ताकि, आप क्या कर सकें? :

१, आप बीमारी और रोग की आत्मा के विरोध मे यीशु के नाम मे आ सकें। पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा, आपके जीवन पर या इस पृथ्वी पर और किसी व्यक्ति के जीवन मे बीमारी की आत्मा को बांधे।

२, परमेश्वर से मांगे कि आकाश मे बीमारी और रोगों की आत्मा को बांधे।

३, आपके जीवन पर तंदुरुस्ती खोले। फिर जी उठे मसीह की सामर्थ खोलिए जो आप मे वास करता है कि आपके शरीर को जीवन दे। रोमियो ८:११ कहता है, परन्तु वो आत्मा जिसने यीशु को मुर्दों मे से जीलाया है, तुम मे वास करता है, तो जिस ने मसीह को मुर्दों मे से जीलाया वो तुम्हारे मरणहार शरीर को भी उस आत्मा के द्वारा जीवित करेगा जो तुम मे वास करता है।

४, प्रभु से आपके शरीर पर चंगाई खोलने के लिए कहिए। जैसे मैने

पहले ही बताया है, यीशु ने हमे बांधने और खोलने की सामर्थ के बारे मे सिखाया है। उसने कहा हम पृथ्वी पर जो भी बांधते हैं, वो स्वर्ग मे बंध जाएगा और हम पृथ्वी पर जो भी खोलते हैं वो स्वर्ग मे खुल जाएगा। हमें ये वचन याद रखना होगा।

परमेश्वर हमेशा चमत्कारी रुप मे चंगाई नही देता है। कई बार, वो उस पर अधिक आधारित होने के लिए कुछ मुश्किलें लाता है। फिर भी, मै भरोसे के साथ कह सकता हूं कि जो भी यीशु को उद्धारकर्ता के रुप मे जानता है वो चंगाई पाएगा कई बार वो तुरंत होगी और कई बार वो समय के साथ चली जाएगी और स्वरग मे कोई बीमारी नही है।

अगर आप तुरंत चंगाई का अनुभव न करें, तो प्रभू मे आगे बढे और विश्वास से मांगिए।

आप जीतनेवाली टीम मे हैं

डरीए नही। परमेश्वर आपकी ओर से है। वो आप मे जी रहा है। जब्र तक आप अनुमति न दे आपका कोई नुकसान नही कर सकता है। और आपके जीवन मे ऐसी कोई मुश्किले नही आ सकती है जिनका उपयोग परमेश्वर आपको और मसीह जैसा ब्रनाने के लिए न कर सकें। बाइबल हमे याद दिलाती है,

कोई भी व्यक्ति परिक्षा के समय ये न कहे कि मेरी परिक्ष परमेश्वर की ओर से है, क्योंकि बुरी बातों से न तो परमेश्वर की परिक्षा की जा सकती है और न वो किसी की परिक्षा करता है। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा के द्वारा खिंचकर व फंसकर परिक्षा मे पड़ता है। जब अभिलाषा गर्भवती होती है तो पाप को जन्म देती है, और जब पाप हो जाता है तो मृत्यु को जन्म देता है (याकूब १:१३-१५)।

ऐसी कोई परिक्षा नही है जो आप पर अधिकार करे जब तक कि आप उसके अधिन न हो जाएं।

याद रखिए, आपको अकेले लढने की जरुरत नही है। यदि आप कोशिश भी करे तो आप अवश्य ही असफल होगें। पौलुस कहता है, *मसीह जो मुझे बल देता है उसके द्वारा मै सबकुछ कर सकता हूं* (फिलिप्पियो ३:१३)।

जब आप खुद को फंसा हुआ पाते हैं, तो बाहर निकलने का रास्ता खोजिए। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा दी है कि वो हमेशा बचाव का रास्ता निकालेगा। पौलुस लिखता है, *तुम किसी ऐसी परिक्षा मे नही पड़े जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर तो सच्चा है जो तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा मे पड़ने नही देगा, परन्तु परीक्षा के साथ-साथ बचने का उपाय भी करेगा कि तुम उसे सह सको* (१ कुरिन्थियों १०:१३)।

ये अपेक्षा मत किजीए कि आपके काम तेजोमय ज्योति मे प्रकट होगे या परमेश्वर चमत्कारी शक्ति से आपको और किसी जगह पर ले जाएग़ा। कई बार आपका निकलने का रास्ता तो हिम्मत से ये घोषणा करना है, नही! परमेश्वर आपको बल देगा कि आप परिक्षा सह सकें। उसकी सामर्थ तक पहुंचना आप पर आधारित है।

आप एक आत्मिक युद्ध मे हैं, और अब आपको सिखना होगा कि कैसे खुद की रक्षा करे। जैसे हर युद्ध मे होता है, अपनी रक्षा करना बहुत जरुरी होता है, आत्मिक हथियार पहनने हैं, और अपने हथियार उठाने हैं। हम अपने ह्रदय और मन की रक्षा मसीह के लिए कैसे करे ये समझाने के लिए प्रेरित पौलुस हथियार और युद्ध का उदाहरण देता है। इफिसियों ६ स्पष्ट रुप मे घोषित करता है : हमारा युद्ध मांस और लहू से नही, परन्तु प्रधानों से, अधिकारियों से, तथा दुष्ट की उस आत्मिक सेना से है जो आकाश मे है। इसलिए, परमेश्वर के समस्त हथियार धरण करो, जिससे तुम बुरे दिन मे सामना कर सको और सबकुछ पूरा कर के स्थिर रह सको। अतः सत्य से अपनी कमर कसकर और धार्मिकता की झिलम पहन कर, तथा पैरों मे मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहन कर स्थिर रहो। इसके अतिरिक्त,

विश्वास की ढाल लिए रहो जिससे तुम उस दुष्ट के सारे जलते तीरों को बुझा सको, और उद्धार का टोप तथा आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो। प्रत्येक विनती और निवेदन सहित पवित्र आत्मा में निरंतर प्रार्थना और निवेदन करते रहो। और यह ध्यान रखते हुए सर्तक रहो कि यत्न सहित सब पवित्र लोगों के लिए लगातार प्रार्थना करो (इफिसियों ६:१२-१८)।

आत्मिक संसार एक युद्ध छिड़ा है। जब आप परमेश्वर के हथियार पहन लेते हैं और आत्मा की तलवार उठाते हैं (जो परमेश्वर का वचन है), यीशु के नाम मे, आप किसी के विरोध मे खड़े हो सकते हो। आत्मिक क्षेत्र मे सुरक्षात्मक युद्ध न करे। जप्रा शत्रु आपके जीवन के वस्त्र फाडता है आप शान्ति से उसे नही देख सकते हैं। आक्रमक हो जाएं। मसीह के नाम मे हमला करे।

आत्मिक हथियार

कई बार, आत्मिक युद्ध खुद को स्वाभाविक संसार मे प्रकट करता है जैसे शत्रु आप पर और आपके परिवार पर हमला करता है। जब ऐसा होता है, यीशु के नाम मे स्थिर खड़े रहे। शत्रु की सामर्थ पर अधिकार ले। कोई प्रश्न नही है कि आप एक युद्ध मे हैं, प्रश्न है कि क्या आप युद्ध करने की इच्छा रखते हैं? यीशु ने घोषित किया है, *परमेश्वर के राज्य पर हमला होता आया है और बलवान उसे बलपुर्वक ले लेते हैं* (यूहन्ना ११:१२)। ये समय है कि परमेश्वर के हथियार पहन ले और आपके जीवन पर हमला करनेवाली शक्तीयों पर हमला करे। याद रखिए : यीशु ने हमे पृथ्वी पर बांधने और खोलने का अधिकार दिया है और आकाश मे ही ऐसे युद्ध लढे जाते हैं।

ये प्रार्थना द्वारा आत्मिक युद्ध लढने का समय है। आपके और आपके परिवार के विरोध मे आनेवाली अंधकार की आत्मा को डांटे और उस आत्मा

को यीशु के नाम मे और जो अधिकार उसने आपको दिया है उसके द्वारा बांधे। आपको नियुक्त किया गया है।

युद्ध की चिज़ों के लिए सटीक रहे। यदि आपके या आपके परिवार के विरोध मे हमला होता है, तो आप शैतान के सामने घोषित किजीए, यीशु के नाम मे, पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा और परमेश्वर के वचन के अधिकार पर, मेरे जीवन से चले जाएं और मेरे प्रियजनों के जीवन से चले जाएं। और फिर प्रार्थना मे बने रहे। शैतान आसानी से हार नही मानेगा। लेकिन हमारे अंदर महान सामर्थ है। जब्ब तक आप परमेश्वर की विजय नही पाते हैं तब तक प्रार्थना मे बने रहिए।

लूका १०:१९ मे यीशु कहता है, *देखो, मै तुम्हें सांप और बिच्छूओं को रौदने का और शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार देता हूं; और किसी तरह से तुम्हें कुछ नुकसान नही होगा।*

आपको अपनी शक्ति मे जीवन की परेशानीयों का सामना करने की जरुरत नही है। इसकी कोशिश भी मत किजिए। शत्रु की हर शक्ति को हराने के लिए अपने अंदर की परमेश्वर की सामर्थ और शक्ति पर आधारित रहिए।

कई बार आपकी परेशानी फंसानेवाली होगी। आप शायद महसुस करे कि निराशा, परेशानी या अकेलापन आपको दबा रही है। उन आत्माओं से भी इसी तरह लढे। उनका नाम ले और उन्हें यीशु मसीह के नाम मे बांधे। अपने लिए परमेश्वर के वचन की प्रतिज्ञा ज़ोर से कहे। अपने जीवन के लिए लढे, हिम्मत न हारे। जब आप कमज़ोर होते हैं, प्रभु आपका बल होगा। शैतान आपके विरोध मे आएगा, लेकिन वो आपको नुकसान नही पहूंचा पाएगा। आप परमेश्वर की संतान हैं।

अध्याय दस

मसीह की वापसी

मृत्यु हमारे उद्धारकर्ता को थाम न सकी। वो नरक की गहराईयों मे गया और उसने शैतान से मृत्यु और अधलोक की कूंजीयाँ छीन ली। तीसरे दिन यीशु फिर जी उठा।

यीशु मुर्दों मे से फिर जी उठने के प्राद, वो अपने चेलों के साथ ४० दिन तक रहा, उन्हें शिक्षा देते, प्रचार करते और ये साबित करते रहा कि वो जो होने का दावा करता था वो वही है यीशु मसीह, जीवित परमेश्वर का पुत्र है।

यही एक सच्चाई मसीहयत को बाकी दूसरी आस्थाओं से अलग करती है। देखिए, बाकी सारे इश्वर मर गएं और अभी भी मरे ही हैं। यीशु ने हमारे लिए जो किया है उन मे से कोई एक भी ये नही कर सका। उन मे से एक भी कब्र पर जय पाकर हमे सच्चा जीवन नही दे सका।

यीशु हमारे लिए घर तैयार कर रहा है।

जब यीशु का स्वर्ग वापस जाने का समय आया, उसने ये संसार मृत्यु द्वारा नही छोडा। वो बादलों मे उठा लिया गया और अपने चेलों के सामने स्वर्ग मे उठा लिया गया (प्रेरित १:९)।

उसके मरने के पहले, यीशु ने उन से यूहन्ना १४:१-४ मे प्रतिज्ञा की, *मेरे पिता के घर मे बहुत से मकान है; यदि नही होते, तो मै तुम्हें बताता। मै तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जा रहा हुं, मै वापस आकर तुम्हें ले जाऊंगा,*

ताकि मै जहां रहूं वहां तुम भी रह सको। तुम जानते हो कि मै कहां जा रहा हूं।

तब यीशु के एक चेले थोमा ने पुछा, वो कैसे जानेगे कि वो कहां जा रहा है ताकि वो भी शाश्वति रखें। यीशु ने उत्तर दिया, *मै ही मार्ग, सत्य और जीवन हुं। मेरे बिना कोई पिता के पास नही जा सकता है* (यूहन्ना १४:६)। यीशु के पीछे चलना जीवन का एक ही मार्ग है।

केवल एक ही मार्ग है

यीशु ने अपने चेलों से कहा कि वो उन के लिए जगह तैयार करने स्वर्ग जा रहा है, और एक दिन वो वापस आकर उन्हें संग ले जाएगा ताकि वो उसके संग रहे। एक दिन यीशु अपनी दुल्हन याने चर्च के लिए पृथ्वी पर वापस आ रहा है और वो हमे स्वर्ग ले जाएगा ताकि उसके संग हम हमेशा के लिए रहे। आज के दिन तक हमे उसी मार्ग मे चलना चाहिए जो स्पष्ट किया गया है। स्वर्ग जाने का एक ही मार्ग है, और वो यीशु मसीह के द्वारा है। कई लोग यीशु के प्रति इसलिए समर्पण करते हैं क्योंकि उद्धार के लिए केवल वही है। लेकिन इसके बजाए, उन्हें रोमांचित होना चाहिए कि परमेश्वर ने सब के लिए एक मार्ग दिया है। हम लोग जो यीशु पर विश्वास करते हैं उनके आलौकिक प्रयोजन के लिए परमेश्वर की स्तुति हो।

अंतिम दिन

जब आप लोगों को अंतिम दिनों और दूसरे आगमन या चर्च के रॅपचर होने के बारे मे कहते सुनते हैं, तो वो उस दिन के बारे मे कह रहे हैं जब यीशु वापस आएगा। कोई भी वो दिन या समय नही जानता है, लेकिन हम जानते हैं कि परमेश्वर आपना वादा निभाएगा, और एक दिन हमारा उद्धारकर्ता वादे के अनुसार वापस आएगा।

मसीह का दूसरा आगमन पहले जैसा नही होगा जहां उसका जन्म हुआ

था और उसे एक चरनी मे रखा गया था। उसका आगमन स्वर्गिय महिमा के साथ तुरहियों की गूंज के साथ होगा जैसे वो अपनी संतान के लिए विजयी होकर आएगा। प्रेरित पौलूस इस दिन के फ्रारे मे १ थिस्सलुनिकियो ४:१६-१७ मे कहता है, *क्योंकि स्वयं प्रभु बड़ी गर्जना के साथ आकाश मे आएगा, वो प्रधानदूतों और तुरहीयों की आवाज़ के साथ आएगा, और मसीह मे मरे पहले जी उठेगें, उसके बाद हम जो जीवित और बचे हैं, उठा लिए जाएगे कि आकाश मे प्रभु से मुलाकात कर सकें। ताकि हम सदा के लिए प्रभु के साथ हो।*

पौलुस हमे प्रोत्साहित करता है कि हम एक-दूसरे को इस सुसमाचार के द्वारा ढाढस दे। मै जानता हूं कि कई बार जीवन मुश्किल होता है, परन्तु ये जरुरी है कि हम अनंतकाल का दृष्टिकोण रखें, हमारे भविष्य के घरआने के लिए इतनी जिज्ञासा से राह देखें कि अभी मसीह के लिए सही जीवन जीने के लिए चैन और फ्रल पाए।

पौलुस थिस्सलुनिकियों को लिखे पत्र के बाकी भाग मे पढनेवालों को शाश्वति देता है कि प्रभु के आने के दिन से डरने की जरुरत नही है। इसी अध्याय के वचन ९ और १० मे वो कहता है, *परमेश्वर ने हमे क्रोध रहने के लिए नही परन्तु हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार पाने के लिए नियुक्त किया है। वो हमारे लिए मरा ताकि चाहे जागते या सोते, हम उसके संग जी सके।* पौलुस पढनेवालों से ये भी निवेदन करता है कि मसीह के दूसरे आगमन पर इतना ध्यान न लगा कि वो आज जीवन जीना ही भुल जाए। विश्वासी के रुप मे, हमे प्रभु के वापसी के दिन के बारे मे उत्साहित होना है। तब तक हमे पौलुस ने वचन ८ मे बताएं तरिके से जीना चाहिए, आईए हम संयम रखे, विश्वास पहनकर धार्मिकता की झिलम पहन ले, और उद्धार का टोप पहन ले। हमें प्रतिदिन सबसे उत्तम रुप मे जीना चाहिए। हमें कल की प्रतिज्ञा कभी नही दी गई है, इसलिए जब तक हम वो तुरही न सुन ले आईए हम मसीह की ज्योति और प्रेम को बांटते चले।

आशिष पाएं और आशिष हो जाएं

स्वर्ग मे स्वर्गदूत आपके उद्धार के लिए अवश्य ही आनंद मना रहे हैं, और मै धन्यवाद देते हुए उनके साथ जुड जाता हूं। आप कितने उत्साहजनक जीवन मे जुडे हैं! बहुत सी अदभुत आशिषे आपके लिए राह देख रही हैं, केवल इसी जीवन मे नही, परन्तु आनेवाले जीवन मे भी। मै आशा करता हूं कि इस किताब मे वो दरवाज़ा खोलने मे आपकी मदत की है जिससे आप जान पाएं कि यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत और करिबी संबंध रखने का क्या अर्थ है। नया जन्म पाने का क्या अर्थ है और मसीहीयत किस बारे मे है।

मैने बाइबल के बुनियादी आत्मिक सच्चाई बताने की कोशिश की है। मै जानता हूं कि आप सोच रहे है कि काश इस किताब के शिर्षक या अध्याय कोई अलग किताब होते। परन्तु ये मेरा मकसद नही था। मै बस इतना ही चाहता था कि प्रभु यीशु मसीह के साथ आपका व्यक्तिगत संबंध सही दिशा मे शुरु हो जाएं।

चाहे आपके जीवन मे कुछ भी हो, याद रखिए, हमेशा प्रभु पर भरोसा किजीए। वो आपको न कभी छोडेगा न त्यागेगा। परमेश्वर विश्वासयोग्य परमेश्वर है। उसने आपको यहां तक लाया है, और अवश्य ही वो आपको आगे भी ले जाएगा।

मेरे मित्रों, जैसे आप मसीह के साथ नए रुप मे चलना शुरु कर रहे हैं, मै प्रार्थना करता हूं कि,,,

- ☐ मसीह के प्रेम की ज्योति आपके द्वारा इतनी तेजोमय रुप मे चमके कि कोई भी आपके जीवन का फर्क का इनकार न कर सकें।
- ☐ आप प्रभु के आनंद से उमडते जाएं और उससे बल पाना सीखें।
- ☐ उसकी शान्ति जो समझ से परे हैं, वो आपका दिल और आपका मन हमेशा भर दे।
- ☐ आप प्रतिदिन उसके अदभुत अनुग्रह मे विश्राम और उसकी दया के द्वारा ताज़गी पाएं।

☐ आप मार्गदर्शन के लिए प्रभु के हाथ पर भरोसा रखना सिखें और अपने जीवन के मार्गदर्शन के लिए उसे खोजे।

☐ आप पवित्र आत्मा की सामर्थ से भरे जाए।

☐ आप धार्मिकता के लिए भुखे और प्यासे हो जाएं।

☐ आप प्रतिदिन मसीह के साथ चलिए, ऐसा जीवन जीए जो दूसरों को उसके पास लाएं।

आगे बढिए, मेरे प्यारे मित्रों, उस पारितोषिक की ओर जिसके लिए परमेश्वर ने आपको बुलाया है। आपका ज्योति चमके ताकि सब आपमे मसीह को देखने पाएं। और एक दिन, आप स्वर्ग मे प्रभु यीशु के सामन खड़े होगे और अपने उद्धारकर्ता और मित्र से महान शब्द सुनेगें, *हे मेरे विश्वासयोग्य और धन्य दास, अपने स्वामी के आनंद मे प्रवेश करो* (मत्ती २५:२१)। आमिन।

मेरी पत्नी बारबरा और मै और इंस्पिरेशन सेवकाई के स्टाफ, मसीह मे आपके नए जीवन की किसी भी जरुरतों के लिए प्रार्थना करने के मौकों का स्वागत करते हैं।

कृपया फोन किजीए, पत्र लिखीए या ई-मेल भेजिए ताकि जैसे आप मसीह मे बढ रहे हैं, हम जान सकें कि हम आपके लिए क्या प्रार्थना करे या आपकी सेवा कर सके।

हमेशा याद रखिए

हम यहां आपके लिए हैं!

इंस्पिरेशन मिनिस्ट्रिज़
पी ओ बॉक्स ७७५०
शारलोट, एन सी २८२४१
१-७०४-५२५-९८००
www.inspiration.org

आपको प्रोत्साहित करने के लिए वचन

कई सालों मे, मैने पाया है कि वचन याद करने से प्रभु मे मेरे भरोसे को, आत्मिक युद्ध मे मेरा भरोसा और प्रतिदिन मसीह के लिए जीने के प्रभाव को बल मिलता है। मै आपको प्रोत्साहित करता हूं कि अगले कुछ महिनों मे ये वचन याद किजीए। हर हफ्ते नया वचन याद करना एक अच्छा लक्ष्य है। जैसे परमेश्वर का वचन आपके दिल और दिमाग मे जाता है आप चकित हो जाएगें कि कैसे परमेश्वर आपको बल देता है।

उद्धार की शाश्वति :

रोमियों १०:९: *यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगिकार करे और अपने मन मे यह विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मृतकों मे से जीवित किया है, तो तू उद्धार पाएगा।*

१ यूहन्ना ५:१२: *जिसके पास पुत्र है उसके पास (अनंत) जीवन है; जिसके पास पुत्र नही है उसके पास जीवन भी नही है।*

रोमियों ६:२३: *क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु मे अनंत जीवन है।*

वचन की सामर्थ :

२ तीमुथियुस ३:१६-१७: *संपूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और शिक्षा, ताड़ना, सुधार और धार्मिकता की शिक्षा के लिए*

उपयोगी है, जिससे कि परमेश्वर का भक्त प्रत्येक भले कार्य के लिए कुशलौर तत्पर हो जाएं।

भजनसंहिता ११९:११: *तेरे वचन मैने अपने मन मे रख छोडा है कि तेरे विरोध मे पाप न करुं।*

क्षमा :

१ यूहन्ना १:९: *यदि हम अपने पापों का अंगिकार करते हैं, तो वो हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने मे विश्वासयोग्य और धर्मी है।*

भजनसंहिता १०३:१२: *उदयाचल से अस्ताचल जितनी दूर है, उसने हमारे अपराधों को हमसे उतनी ही दूर कर दिया है।*

सांत्वनी और शान्ति :

फिलिप्पियों ४:६-७: *किसी भी बात की चिन्ता न करो, परन्तु प्रत्येक प्रात मे प्रार्थना और निवेदन के द्वारा तुम्हारी विनती धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत की जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति जो समझ से परे है तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु मे सुरक्षित रखेगी।*

यूहन्ना १४:२७: *मै तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं, ऐसे नही देता जैसे संसार तुम्हें देता है। तुम्हारा मन व्याकुल न हो, और न भयभीत हो।*

प्रार्थना :

इब्रानियों ११:६: *वो उसे खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।*

लूका १८:१: *हमेशा मनुष्य को प्रार्थना करना चाहिए और हिम्मत नही हारनी चाहिए।*

फिलिप्पियों ४:६-७: *किसी भी बात की चिन्ता न करो, परन्तु प्रत्येक बात मे प्रार्थना और निवेदन के द्वारा तुम्हारी विनती धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख की जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु मे सुरक्षित रखेगी।*

भरोसा :

नीतिवचन ३:५-६: *तू संपूर्ण हृदय से परमेश्वर पर भरोसा रखना और अपनी समझ का सहारा न लेना।*

रोमियो ८:२८: *हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं उनके लिए वह सब बातों के द्वारा भलाई उत्पन्न करता है, अर्थात उन्ही के लिए जो उसके अभिप्राय के अनुसार बुलाए गएं हैं।*

विजय :

रोमियों ८:३७: *इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया जयवन्त से भी बढ़कर है।*

१ यूहन्ना ५:४-५: *वह विजय जिसने संसार पर जय प्राप्त की यही है - हमारा विश्वास। और वह कौन है जो संसार पर विजयी होता है, सिवाय उसके जो यह विश्वास करता है कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है।*

आराधना :

भजनसंहिता ३४:१,३: *मै यहोवा को हर समय धन्यवाद कहा करूंगा; उसकी स्तुति निरंतर मेरे मुंह से होती रहेगी। आओ मेरे साथ यहोवा की भलाई करो, हम सब निरंतर मिलकर उसके नाम की स्तुति करे।*

भजनसंहिता ९५:६-७: *आओ, हम झुककर आराधना करे, और अपने सृजनहार परमेश्वर के सामने घुटने टेकें।*

भजनसंहिता १६:११: *तेरी उपस्थिती मे आनंद की भरपूरी है, तेरे दाहिने हाथ मे सुख सर्वदा बना रहता है।*

शब्दों का अर्थ

अब्बा: परमेश्वर के लिए आकर्षण से उपयोग किया गया शब्द, वास्तव मे अर्थ है पिता।

वकिल: कानूनी शब्द है, जो दूसरों के लिए केस लढता है, हमारे उद्धार के केस मे, यीशु हमारा वकिल है, जो हमारे बदल मे अपने पिता के सामने गवाही देता है कि हम उसके उद्धार पर भरोसा करते हैं इसलिए हम दोषी नही हैं।

स्वर्गदूत: आत्मिक व्यक्ति जो प्रभु की आराधना कर उसकी सेवा करते है, ये खास संदेश लाते हैं और परमेश्वर के लोगों के लिए सुरक्षा और सहायता लाते हैं।

अभिषिक्त: पवित्र या धार्मिक काम के लिए अगल किया गया या समर्पित किया गया; यीशु ही मसीहा है, जिसका वास्तव मे अर्थ होता है अभिषिक्त।

प्रायश्चित: ढांकना या शुद्ध करना; यीशु मसीह के लहू के द्वारा परमेश्वर से मेल-मिलाप करना, जो हमारे पाप ढांकता है।

प्रापतिस्मा: एक धार्मिक विधी जो दर्शाती है कि नया विश्वासी पूराने पापी जीवन के लिए मर गया है और मसीह मे नया जन्म पाया है। ये साथ ही लोगों के सामने घोषणा करने और यीशु को प्रभु के रुप मे स्वीकार करने के प्रारे मे भी दर्शाता है।

विश्वासी: वो व्यक्ति जो उद्धार पाता है, केवल विश्वास के द्वारा, केवल अनुग्रह से, केवल मसीह के द्वारा।

मसीह की देह: बड़ा मसीही समुदाय और संसार के वो सारे लोग जो इसके भाग हैं।

नया जन्मः आत्मिक रुप मे फिर जन्म लेने का अनुभव पाना, जहां हम सच मे आत्मिक दोष से (जो हमारे पाप के कारण आता है) निकलकर अनंत जीवन मे पहुंचते हैं क्योंकि हमने अपने मुंह से अंगिकार किया है और हृदय से विश्वास किया है कि यीशु ही प्रभु है। जब हम नया जन्म पाते हैं, पवित्र आत्मा हमारी आत्मा मे नया जीवन फुंकता हैः आत्मिक रुप मे मसीह हम मे जन्म लेता है।

मसीहीयतः मसीह के साथ लोगों का संबंध, जो मसीह की शिक्षा और वचन के लेखक के लेखों से बना है।

चर्चः मसीह के अनुयायीयों का सार्वभौमिक समाज।

वाचाः एक पवित्र, अनंतकाल की प्रतिज्ञा या परमेश्वर और मनुष्य के बीच का कॉन्ट्रेक्ट। यीशु वाचा ऐसी देता है जो उस पर भरोसा रखनेवालों को अनंत उद्धार की शाश्वति देता है।

मसीह यीशु का दिनः वो दिन जिस दिन यीशु पृथ्वी पर वापस आएगा ताकि अपने अनुयायीयों को अपने साथ स्वर्ग ले जाएं।

दुष्ट आत्माएंः बुरी आत्माएं, परमेश्वर के विरोध बलवा करते समय जो स्वर्गदूत लूसीफर के साथ चले गएं थे।

चेलाः ऐसा व्यक्ति हो शिक्षक की बातों को समझ उसे दूसरों को सिखाता है; हम यीशु मसीह और पूरी बाइबल के चेले हैं।

विश्वासः वो भरोसा की कुछ सत्य है जब कि उसके लिए कोई सबूत नही होता है। आत्मिक क्षेत्र मे, हम विश्वास से ही ऐसे परमेश्वर पर भरोसा करते हैं जिसे हमने नही देख सकते है। व्यवहारीक रुप मे, आप जो विश्वास करते हैं कि आपके लिए परमेश्वर की यही इच्छा है उसे आज्ञाकारिता मे प्रतिउत्तर देना है।

संगति : दूसरे विश्वासीयों के साथ इकटठा होना; सामान्य रुप मे आराधना और उत्सव मनाने के समय के बारे मे बताता है।

महिमा: सुंदरता, आदर, तेज, स्तुति, विशेषगुण और परमेश्वर का प्रताप; उसकी अगणीत सिद्धता।

सुसमाचार: ये खुश खबर की यीशु सब विश्वास करनेवालों के लिए उद्धा का मार्ग है।

अनुग्रह: हम लायक न होते हुए भी जो भी यीशु मसीह पर विश्वास करता है उन पर परमेश्वर की ऐसी कृपा, दया, सामर्थ और आशिष।

महान आज्ञा: विश्वासी के जीवन मे परमेश्वर की बुलाहट कि दूसरों को यीशु के उद्धार के बारे मे बताएं।

वारिस: ऐसा व्यक्ति जिसे निश्चित किया गया है कि वो किसी ऐसे व्यक्ति की संपत्ति, जायजाद या लाभ पाएं, जो इस व्यक्ति को कुछ खास देना चाहता है। हम वारिस हैं उद्धार, आशिष और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं, और अंत मे स्वर्ग मे अनंत जीवन पाने के क्योंकि हम मसीह के साथ संगी-वारिस हैं।

महा-पवित्र स्थान: मंदिर का सबसे भीतरी भाग जहां वाचा का संदुक रखा गया था और यही पृथ्वी पर परमेश्वर की उपस्थिती वास करती थी। ये ऐसा था स्थान था जहां महा-याजक परमेश्वर की उपस्थिती का अनुभव करता था और लोगों के पाप के लिए प्रायश्चित करने के लिए बलिदान लाता था।

पवित्र आत्मा: त्रिएकता का तीसरा व्यक्ति। ये सामर्थ, शिक्षा, सांन्तवना देता और पाप के बारे मे कायल करता है। ये पिता परमेश्वर और पुत्र परमेश्वर के तुल्य है।

यहोवा यीरेः हमारा प्रयोजन करनेवाला प्रभु परमेश्वर।

यहोवा राफाः हमें चंगाई देनेवाला प्रभु परमेश्वर।

यहोवा शालोमः हमें शान्ति देनेवाला प्रभु परमेश्वर।

मेमने की जीवन की किताबः ऐसी किताब जिसमे परमेश्वर के संतानों का नाम लिखा गया है; न्याय के दिन, जिनके नाम इस किताब मे हैं वो अनंतकाल के लिए स्वर्ग मे जा पाएंगे।

लूसीफर: वास्तव मे भोर का तारा, बदलवा करने के पहले परमेश्वर के साथ स्वर्ग मे रहनेवाले शैतान का यही नाम था।

भेंट: विशेष उपहार जो हम परमेश्वर को हमारे दसवा अंश के अतिरिक्त देते हैं।

दृष्टान्त: प्रतिदिन के जीवन से कहानी या उदाहरण जिनका उपयोग यीशु ने आत्मिक पाठ सिखाने के लिए किया था।

प्रार्थना: परमेश्वर के साथ बातचित जिसमे अकसर आराधना, व्यक्तिगत क्षमा का निवेदन और व्यक्तिगत और दूसरों की जरुरत के लिए निवेदन होता है।

पश्चाताप: पाप से फिर जाना; सच मे फिर से घोषित करना, पाप से दूर होकर परमेश्वर का मार्ग अपनाना; मन बदल देना।

पुनरुत्थान: मुर्दों मे से जीलाया जाना; खासकर, जब यीशु क्रस पर चढाया गया और कब्र मे गाढे जाने के प्राद उसका जी उठना।

धर्मी: पवित्र, जब हम यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता ग्रहण करते हैं, हम यीशु की धार्मिकता के बदले अपना पाप देते हैं; जब हम उद्धार पाते हैं तब हम सच मे प्रभु के साथ सही रुप मे खड़े होते हैं।

सब्त: विश्राम का खास दिन, जो परमेश्वर ने मनुष्य को दिया है। जिसे प्रभु का दिन भी कहा जाता है ऐसा समय जो आराधना और विश्राम के लिए निकाला गया है।

उद्धार: ऐसी क्रिया जो यीशु की मृत्यु और उसके बलिदान पर हमारा भरोसा ताकि हम परमेश्वर द्वारा स्वीकार किए जाएं और हमारे पाप और शर्म से हम आज़ाद हो जाएं।

शैतान: दुष्ट; परमेश्वर का बुरा शत्रू, और हर विश्वासी का शत्रु।

उद्धारक: यीशु, यही एक मार्ग है जिसके द्वारा हम पाप और मृत्यु से आज़ाद हो सकते हैं।

वचन: बाइबल के बारे मे बतानेवाला एक और शब्द, परमेश्वर ने अपनी

संतान पर अपनी इच्छा प्रकट की है और पवित्र आत्मा की प्रेरणा के द्वारा मनुष्यों ने इसे लिखा है।

दूसरा आगमन: जब यीशु पृथ्वी पर दूसरी बात लोगों का न्याय करने आनेवाला है और अपने अनुयायीयों को सदा के लिए स्वर्ग ले जाने आएगा।

पाप: परमेश्वर की आज्ञाभंग करना।

आत्मिक युद्ध: पवित्र आत्मा की सामर्थ और परमेश्वर के वचन के द्वारा आत्मिक शक्तियों से युद्ध करना।

परिक्षा: कुछ गलत करने के लिए आकर्षित होना।

गवाही: दूसरों को बताना कि प्रभु हम से कितना प्यार करता है और उसने हमारे लिए क्या किया है।

दसवा अंश: परमेश्वर के काम के लिए कमाई का दसवा भाग देना।

त्रिएकता: परमेश्वर के तीन व्यक्तित्व पिता परमेश्वर, पुत्र परमेश्वर और पवित्र आत्मा परमेश्वर। विश्वास का सबसे बड़ा भेद यही है कि ये सब एक हैं। अलग भी है और एक समय मे एक समान भी है।

परमेश्वर का वचन: बाइबल के बारे मे बतानेवाला एक और शब्द, ६६ किताबों का संग्रह, जिन्हें भविष्यवक्ताओं, याजक और प्रेरितों ने पवित्र आत्मा की अगुवाई मे लिखा है।

आराधना: परमेश्वर के प्रति समर्पण और सराहना का भाव रखना।

लेखक के बारे में

डेवीड सीरोलो का दर्शन है कि मिडीया के द्वारा पूरे संसार के लोगों पर प्रभाव डाले और इन्होंने अपने व्यापार की उत्तम महारत को सेवकाई के प्रति अपनी जिज्ञासा के साथ जोड़ा है ताकि परमेश्वर के द्वारा दिया गया उद्देश पूरा हो जाएं।

इन्होंने इंस्पिरेशन मिनिस्ट्रीज़ स्थापित की है, जो दक्षिण कॅलीफिरनिया के सीटी ऑफ लाईट की अंतरराष्ट्रिय मिडीया सेवकाई है। जो अलग-अलग टेलिविज़न के माध्यम से १२० देशों मे १.२ लोगों से भी अधिक लोगों तक यीशु मसीह के सुसमाचार पहूंचती है।

टेलिविज़न ब्रॉडकास्टर और धार्मिक अगुवे के रुप मे पहचान बनाने के कारण, डेवीड सदस्य हैं नॅशनल केबल असोसिएशन के, द केबल एन्ड टेलिकम्युनिकेशन असोशिएशन फॉर मार्केटिंग, द नॅशनल असोसिएशन ऑफ टेलिविजन प्रोगाम एकज़िक्युटिव हैं और नॅशनल रिलीजिअर ब्रॉडकास्टर असोशिएशन के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर भी रहे हैं।

डेवीड और उनकी पत्नी बारबरा, विख्यात टेलिविज़न प्रोग्राम भी होस्ट करते हैं, जिसका नाम है इंस्पिरेशन टूडे इनके विवाह को ३६ से भी ज्यादा साल हो चुके हैं और इनके दो व्यस्क बच्चें और पांच नाती-पोती हैं।

वचन से अधिक शिक्षा, सेवकाई की जानकारी पाने या प्रार्थना निवेदन के लिए हमारी वेब-साईट www.inspiration.org पर लॉग़ किजीए।